आदिम पुरखा

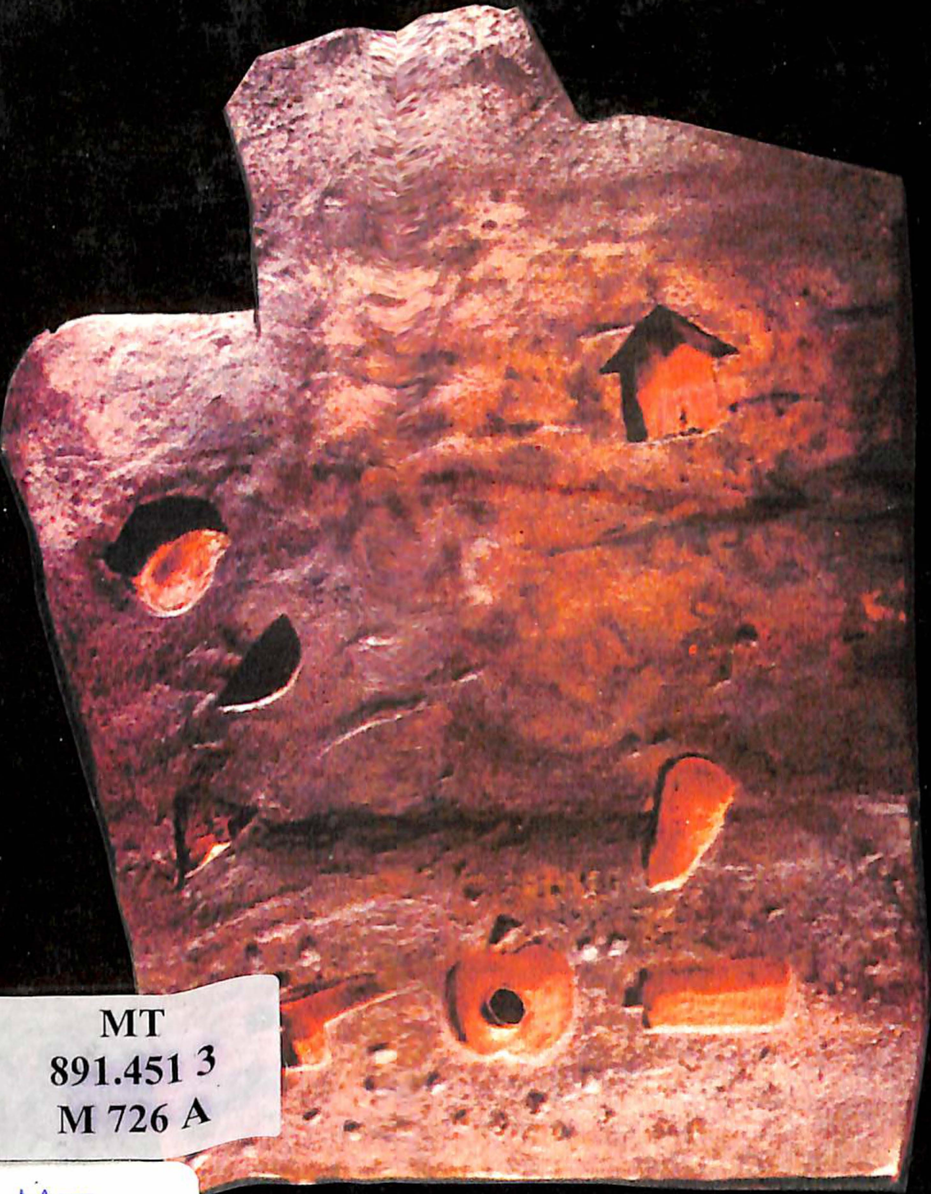

MT
891.451 3
M 726 A

M.T
891.451.3
M726A

गोपीनाथ महान्ति

अस्तरमा छापिएको मूर्तिकलाको प्रतिरूप यो दृश्य राजा शुद्धोदनको महलको हो, जसमा तीनजना भविष्यवक्ताहरूले भगवान बुद्धकी आमा, रानी मायाको सपना-लाई व्याख्या गरिरहेछन्। मुनिपट्टि वसेका छन् मुंशी जो व्याख्या दस्तावेज़ लेखिरेहछन्। संभवतः भारतमा लेखनकलाको यो सबैभन्दा पुरानो अनि चित्रांकित अभिलेख हो।

नागार्जुनकुण्ड, दोस्रो शताब्दी (क्राइश्टाब्द)
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयाँ दिल्ली

आदिम पुरखा

गोपीनाथ महान्ति

उड़ियासँ मैथिली अनुवाद

विनोद बिहारी वर्मा

साहित्य अकादेमी

Aadim Purkha : Maithili translation by Vinod Bihari Verma of Gopinath Mohanty's Oriya classic *Dadi Burha,* Sahitya Akademi, New Delhi (2001), Rs. 50/-

Library IIAS, Shimla
MT 891.451 3 M 726 A
00117103

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 2001 ई.

MT
891.4513
M726A

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय :
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मारग, नमीं दिल्ली-110001
विक्रय विभाग : स्वाति, मन्दिर मार्ग, नमीं दिल्ली-110001

क्षेत्रीय कार्यालय :
172, मुम्वई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई 400 014
जीवनतारा विल्डिंग, चौथा तल, 23 ए/44 एक्स, डायमंड हार्वर रोड, कलकत्ता 700 053
सीआईटी कैम्पस, टी.टी.टी.आई. पोस्ट, तरामणि, चेन्नई 600 018
सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी.आर. अम्वेडकर मार्ग, वंगलौर 560 002

ISBN 81-260-1215-3

Indian Institute ... SHIMLA
117103
9.12.04

मूल्य : पचास टका

शब्द-संयोजक : सविता प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली

मुद्रक : पवन ऑफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली 110 032

एक

ओतऽ सँ दूरक क्षितिज ततेक दूर नहि बुझना जाइछ। ओना तँ एहि दिशिक तीन पा' आ ओहि दिशिक तीनि पा' दृश्य आँखि के घेरि लैत अछि। तेकर भीतरे स्थित अछि गोल गोल सुन्दर पहाड़।

पहाड़ क उपर पहाड़ खञ्जा लागल अछि। तेकर उपर, ताहू सँ उपर अनन्त विमान जेकाँ सजाओल अछि आओर टाल लागल अछि ओहि मध्य उपत्यकाक छोट पैघ असंख्य पहाड़, हरियर कचोर सबूज जंगल सँ भरल।

उपत्यका क मध्य बाटे नीचाँ मे रूपा जेकाँ चमकैत खल-खल हँसैत सुन्दर धार वहै छै—मुरान नदी एहि पारसँ ओहि पार धरि।

माथा क उपर रातु क चन्दोवा जेकाँ तानल कारी अन्हार भरल ट़ेढ मेढ़ पहाड़ी श्रृंखला रातुक अन्धकार में चमकैत तारा के बान्हि के नहि राखि सकल अछि। 'लूल्ला' इएह नाम छियैक ओतुका गामक, तकर गोलम्बर में घेरल पहाड़। ओतऽ निस्तब्ध रातुक आकाश आओर दूर चल गेल हो जेना।

ओहि अन्हरोखे कारी पहाड़ क ढलुआ बाटे 'लूल्ला' गाँ क चारि पाँच जन लोक चलल जा रहल छथि। दुनू दिस घनघोर जंगल। बाघक राज्य।

एक हाथ में ज्वलन्त मशाल लेने आ दोसरा हाथ में लाठीसँ ठक् ठक् करैत, गप्प करैत, ओ बाट धेने चलल जा रहल छला—गाँक नाइक (मुखिया) राम मुदुली, बारिक (नौआ) चाञ्चेरी, डोम जातिक हरी जानी ओ इसाई टोलाक बूढ़ लोक—एलियो सुन्ना।

ओ सब पहाड़ क टीला सँ भथान दिस नीचा गेला। हठात् आँखि चौंधिया गेलैन्ह। टकाटक लागि गेलैन्ह। चारू दिस कारी पहाड़ क बीच दीपावली क महोत्सव जेकाँ पहाड़ पर लागल आगि, कते सुन्दर! एक दिस बिजुलौका एहन टेढ़ मेढ़ रेखा मे आगिक धधरा लहकि रहल अछि। कतहु पहाड़ कें गोल घेरा में सुड्डाह कऽ रहल अछि। तँ कतहु नाम रेखा में एहिदिससँ ओहि दिस। घनान्धकार, पहाड़

आओर आकाश सबटा मिलि के एकाकार भऽ गेल अछि। जेना कोनो भदेसी जादूगर विराट विस्मय भरल अन्धकार में आगिक खेला शुरूकऽ देलक अछि—आगिक फूल, आगिक विजुली लता, आगिक अलङ्कार—कोस कोस धरि—स्वर्गसँ नरक धरि, आकाशसँ पाताल धरि, पुरुबसँ पश्चिम धरि। अन्धकार मध्य इजोत।

वनवासी लोक देखैत रहला दूर सँ, निकट सँ वनक आगिक ई खेल अन्हार शून्य मे।

समय-काल फगुनहट क शेषांत। कोरापुटक पहाड़ी शृंखला पर 'फीरी घास' सुखि रहल अछि। कोरापुटिया झाड़ बुट्टी सूखि के हरनाठ भऽगेल अछि।

वनवासी लोक देखैत देखैत थाकि गेल छथि—सब दिन देखिते छथि। तथापि लूल्ला गामक ढलान पर गेला पर पहाड़क आगिक एहि खेला कें अटकि के विना देखने पैर आगाँ नहि बढ़े छनि।

चांचेरी डोम बाटक कातक सुखल 'फीरी घास' में जा के आगि फुकि देलकै। राम मुदुली एक दिस, हरी जानी दोसर दिस निछच्छ कौतुक हेतु आगि धरौलक। धू धू कऽ के आगि जरे लागल, आगि पसरि गेल। अगि लगबैत पाछाँ पाछाँ ओ पाँचों मित्र नीचा गाँ दिस उतरलाह—पहाड़ी ढलानक एकपेड़िया बाटे।

गाँ लग एला पर मुँह सँ हँसी फुटलनि, इजोते क सम्मुख भेला पर हंसी फुटै छै। छः-पाँच विचार मोन मे आबै छैक। अन्हार में भावना सुगबुगाइ छै। रातुक वन क आगि—अन्हार मे विराट बिजुलौका जेकाँ। आगि कोना बरै छै? के जरबै छैक? कोना से पसरि जाइ छै? से कते सुन्नर लागै छै!

एलियो प्राचीन बूढ लोक, ओकरा इसाई भेला कतेको दिन बीत गेल छैक। ओकर नाम ओकर माय-बाप प्रेम सँ, एहि आशा में राखने छलैक 'कुमुटी' जे ओ एक दिन सम्पत्ति अरजि धनी होयत, ठीक कुमुटी (बनियाँ) जेकाँ।

एलियो बुझेलकै—''देखह, ओ दावाग्नि एहि लेल पसरि गेलै कियैक तँ हम सब लहकेलियै। की ओ अपने धधकलै अछि? तो परजा जातिक लोक सब बुझै छह जे किने, कोनो भूत वा डूमा (प्रेत) ई आगि लगेलकै। ई सब फालतू बात थिक।''

चांचेरी डोम्ब ओकर बात पर हुंकारी देलकै—हँ, ई सब झूठ थिक, डूम—डूमा ई सब एकदम झूठ।

हरी जानी कहलकै—सब ठीक, मानि लेलियौ जे एहिठाँ आगि हम सब

धरेलियै किन्तु ई कोसो धरि के लगेलकै आ ओजे आकाश धरि पसरलै से कोना? आओर जंगल क ओहि कोना मे के आगि लगबै लेल गेल छलै? सैह कहि देह। वास्तव में ई सब हमर सबहक पूर्व पुरुखा–मुइल पुरुखाक डूमा (प्रेत) सबहक काज। वैह सब जखन तखन सबतरि आगि लगबै छथि।

एहू पर चांचेरी डोम माथ डोलबैत कहलकै,–सत्ते कथा। वैह सब पहाड़ पर आगि लगबै छथिन। के कहै छै डूमा नहि होइछ? डूमा केना ने होइत छैक?

एलियो बूढ़ा कहलकै–ओहिठाम लोक सब दिने मे आगि लगा देने हेतैक। सैह आगि मध्य राति धरि धधकैत पसरि जाइत छैक। जेना हम सब एहि बाटे एखन जाइत छी तहिना दिनो में लोक सब ओहि बाटे गेल हेतै, जे आगि धरा देने हेतै।

राम नाइक एहिवातक प्रतिवाद कऽ के कहलकै–दिन में लोक गेल छलै, से तों देखलहक?

प्राचीन एलियो कहलकै–डूमे आगि लगेलकै से तोंही की देखलहक?

हरी जानी कहलकै–के लगेलकै से ने तों देखलहक और ने हम। तो सोचै छहक जे लोक सब लगेलकै, हम सोचै छियैक डूमा। तों जे कहबहक से सब ठीक कहवहक आ हम जे कहबै से झूठ? तोरा लेल तों ठीक हमरा बास्ते हमे ठीक।

चांचेरी कहलकै–सत्ते।

राम नाइक कहलकै–"हौ, डूमा नहि ते आओर के लगेलकै? सैह राति करै छै, दिन करै छै, तारा बनेलकै, पहाड़ और घाटी सब बनौलकै, सैह आगियों लगबैले आयल। बरखा करैलेल सैह। ई कोनो आजुक कथा थिक?

युग युग सँ अपन सबहिक बाप-दादा-परदादा क समय क कथा थिक। तों डोम्ब जातिक लोक सब ई सब नहि बुझबहक। तों अपन साहेब (क्रिस्तान पादरी) कें एतय राति में आनह आ ई पहाड़ पर लागल आगि देखा के फरिछा लैह। ई की? डूमा नै ते और के? एते लोक मरै छैक से की भऽ जाइत छैक? कतऽ जाइ छै?" एलियो कहलकै,–"हमर सबहक धर्म मे ई सब नहि अछि।

राम नाइक कहलकै–तोहर धरम बेसी पुरान की हम बेसी बूढ़, से जनाब ऽ। ई पहाड़ एते हम पुरान छी। आगाँक पहाड़ देखबैत ओ बाजैत रहल–हम मरि गेलहुँ आ हमर दादाक जन्म भेल। हमर दादा क भाइ मुइलै तखन तेकर डूमा (प्रेत) भऽ के हम जनम लेने छी। हम मरबै तखन हमर डूमा (प्रेत) फेरो हमर बेटा बनि

के जनमतै। हम सब सैह मानै छियैक—यावत् डूमा आदमी भऽ के नहि जनमतै तावत से डूमा (प्रेत) एक ठामसँ दोसर ठाम बुलिते-भटकिते रहतै। पहाड़े-पहाड़, घाटिये घाटी डूमा भटकैत डोलैत रहतै आ पहाड़ पर आगि लगवैत रहतै। से पवन भऽके बहतै, गिरली (एक प्रकारक फूल) फुलाय के झड़तै, मेघ वनि के बरसतैं, बीज के पहाड़क घाटी में अंकुरित करतै, अन्हार राति मे तारा वनिके चमकतै, हम सब सबटा जानै छी। तो राते किछु ने बुझल छह।

एहि पर एलियो भड़कैत कहलकै—"आरे, तू ओहिना खाली फदर-फदर करबह। शास्त्र पढ़बहक नहि। हमर सबहक पास्टर (पादरी) कतेको पोथी पढ़ि के सुना दै छथिन्ह। देखबहक ताहि मे की सब लिखल छैक? राम नाइक वाधा दऽ के कहलकै—"देखने छियैक। ओहि दिन पास्टर (पादरी) एकटा पुस्तक आनने छलाह, नव पुस्तक। उज्जर धव धब, नव गद्दीदार गत्ता बला। लेकिन अपन दिशारी (पुरोहित ज्योतिषी) क घर क पोथी देखलहक अछि? ताल पत्र पोथी? कतेको कथा ओहिमे लिखल छैक—आवोहवा मौसम क कथा, पाप-पुण्य क विषय में, नीक अधलाहक मादे मे और डूमा (प्रेत) क विषय में—के ककर डूमा छियैक, तकर विषय मे। से पुरान पोथी छियै, एहि पहाड़ एते पुरान, एहि अन्धकार एते पुरान। तोहर एहन नया नहि।"

एलियो प्राचीन कहलकै—"हउ भाइ, अच्छा भाई अच्छा, तोहर धरम तोरा वास्ते नीक, हमर धरम हमरा वास्ते। एहि दुआरे एते बाता बाती कियैक?"

चांचेरी डोम सहमति मे बाजल—"हँ, से सत्ते।"

तकर बाद ओ लोकनि किछु काल चुपचाप चलैत रहला। किछु काल क बाद गाम क इजोत देखाय पड़े लागल।

राति मे धीआ पूता अपन घर क आगू घूर क आगिक चारू कात बैसल—किछु मकइक भुट्टा ओड़बैत अथवा बकरीक चमड़ा पकबैत छल। गामक निकट अबितहि गामक माटिक गंध, धूल-धूआँक गंध आबय लागलै जाहि मे आश्रयक आशा छलै। ओहि मे बूढ़ मायक मटिआह आँचरक आश्रयक आशा लेपटायल छलै।

पाँचों गोटे गाम क निकट अयला। किन्तु अचानक तखने कतहु सँ बाघक गर्जन पहाड़ सँ टकरा के अबैत, हृदय कें दलमलित करैत, शोणित कें पानि बनबैत सुनाय पड़ल। हठात् गाछक पात झड़लै, भूमि कंपबैत विशाल भयानक बाघक

गर्जन सुनाय पड़लै। पाँचों गोटे भयभीत भऽ ठाढ़ भऽ गेला, गामक सीमा पर स्थित घनगर झाड़ी बला गाछ क नीचा।

एलियो कहलकै—ओतऽ ओहि पहाड़ पर हेब्बै, जा रहल छै बड़का टा बाघ।

हरी जानी कहलकै—बाघ नै, बाघक डूमा।

राम नाइक कहलकै—कते लोक कें ई बाघ धरि पकड़ि खाय छै, ताहि मे ककर ई डूमा गरजै छै से के जाने? चांचेरी डोम कहलकै—बाघ हो अथवा बाघक डूमा—छैक मुदा वड्ड भयदायक। एहन गर्जन—एह! बाप रे! पाँचों संगी पुनि आगू चललाह। तखने गाम दिस सँ केओ हाक देलकै—के सब जाइ छह, हउ?

तखन ओ सव अपन अपन घर आवै जाइत गेलाह।

❑❑

दुइ

दोसर दिन राम नाइक (मुखिया) पंचायत बजौलक। पंचायत वैसारक हेतु बैठकीक स्थान (बरामन) एकटा झमटगर बड़ गाछक जड़ि मे मुख्य चौबटिया पर छलैक। चारू दिस नोकगर आ चाकर पाथर राखल छलैक। प्रत्येक मुइल पुरुषक स्मृति में एकटा ठाढ़ कयल नोकगर पाथर आओर मुइल स्त्री क स्मृति मे सपाट पाथर राखल छलैक। एहि दिस सँ ओहि दिस तक कतेक खण्ड पाथरक चट्टान पसरल छैक। एहि चट्टानक वास्तविक उपयोग पंचायतक बैसकी काल वैसबा ले होई छै अथवा राति के गामक धांगरि (किशोरी आ युवती) सबहिक नाच देखबाक हेतु।

बीच में बैसला दिशारी बूढा। जेम्हरे देखा तेम्हरे गुरड़ाइत हुनक आँखि... फुफुआइत। मद्य पीबि के जहिना आँखि तरेड़ै छथि तहिना हुनक ओठ फरफराइत छन्हि। हुनका बगल मे एकटा पोटरी (झोड़ा) छलैन। धीआ पुताकें ई जानबाक उत्सुकता छलैक जे ओहि मे की छैक? से जानबाक हेतु मायबाप क पीठ-पाछू सँ हुलकि के बेदरा सब देखैत अछि। लग मे राखल छन्हि एकटा तेलिआह ताल पत्र क पोथी, अरिपन देबाक हेतु विभिन्न रङ्ग क बुकनी, भालिया फल, मंत्रपूत हाड़ (हड्डी), दीपक क टेमी, किछु खड़ि भूमि पर चित्रकारी करबाक हेतु काठक बरछा, भाला आ तरुआरि।

गामक समस्त लोक जुमलाह। गम्भीर भऽ के वैसलाह। किनको मुँह मे बोल नहि।

राम नाइक बाजब शुरू कयलक,—कहऽ कहऽ दिशारी बूढा, पहिने तोंही कहऽ।

जोतिखी दिशारी बाजल—योग ठीक छैक। पहिने आगू भऽ के गुरूमाइ उठथु।

शाम गुरूमाई (भगता) ठाढ़ भऽ के दिशारी लग गेल। ओ छँल तँ पुरुष मुदा ओकर भेष स्त्री एहन छल—माथ मे नाम नाम केश, नाक मे नथिया, देह में स्त्रीगण एहन नूआ (साड़ी) पहिरने छल। गामक लोक बूझथि से ने पुरुष आर ने

स्त्री, ताहि हेतु हुनका मे देवत्व छन्हि। काली सन लागबाक हेतु हुनका छाड़ि और ककरो पर देवी क विश्वास नहि। ताहि दुआरे ओ गुरुमाई।

प्रत्येक गाम मे अपन गुरुमाई छथिन। जिनक माय बाप बचपने मे हुनका कोनो कारणवश देवता के उत्सर्ग कऽ देने छथि सैह भेलाह गुरुमाई। सैह छथि देव भावापन्न। आनकाल ओ जे होथि पूजा काल थिकी ओ स्त्री।

शाम गुरुमाई दिशारी लग जाके ठाढ़ भेल। दिशारी मुरुज सँ (रंगीन माटिक बुकनी) सँ एकटा अरिपन पारलक। टेमी बारलक। एकटा कुमार बालक आगि जरा के कने भात रान्हलक। पातक ठोंगा मे ओकरा राखि, दिशारी ओकरे उपर भालिया फल (एक प्रकार क जंगली फल) छिड़िआ देलकै। ओकर उपर दीप जरौलक, तेकर बाद ओहि ठोंगा के गुरुमाई के माथ पर राखि दिशारी किछु मंत्र पढलक, ओकर होठ हिलैत रहलै। एक दिस सँ ढोलकक ध्वनि आबय लागल। दिशारी गुरुमाई के एक हाथ में काठक खण्डा (तरुआरि) आओर दोसर हाथ में भाला देलकै।

शाम गुरुमाई मे देवीक प्रवेश भऽ गेल। तकर बाद ढोल एक घंटा धरि बाजैत रहल। गामक सब केओ जुमलाह। गुरुमाई नाचैत रहली। कतेको स्त्रीगण माथक खोंपा खोलि ओकरा पाछू पाछू गाम भरिक रस्ता पर नाचैत रहलीह! चौबटिआ सभ पर मुर्गा और पड़वाक बलि देल गेल। गुरु माई नाचैत रहलीह। चारू दिश गर्दा उड़ैत रहल। शाम गुरुमाई क नाच बड़ प्रभावशाली छल। आकाश पाताल डोलबै बला। ओहि नाच के देखला पर कतेको बीर बंका मनुख कें टराटक लागि गेलै।

तखने गुरुमाई चित्कार कऽ उठली—"काल्हि रातुक पहिल पहर मे हम कते बेर गरजलहुँ। आगुओ कते बेर एहिना गरजने छलहुँ। तों सभ नहि सुनलह। तीन बेर कहै छिअह—खैबहु, खैबहु, सबकें खा जेबहु।

गामक करीब डेढ़ सौ गोटे—स्त्री, बालक, बृद्ध एक दिस भऽ के ठाढ़ भऽ गेल। दोसर दिस ठाढ़ भेल झुलैत दिशारी बूढ़ा। देसी दारू ढेकरैत, माटिक डाबा सँ पीबैत। गुरुमाईक मुख सँ बात बहराइत देरी सब गोटे हाथसँ मुँह बन्न कऽ के हवाक झोंका मे झुकल खेतक जोआर एहन 'हाय-हाय' करय लागल।

गुरुमाई फेरो चिकरलीह—खेबउ, खेबउ, सबकें खा जेबौ। गँउआ लोक एक दोसर सँ आओर सटि के जमीन पर लोटा के, विकल भऽ के चिकरलाह—ओह, ओह, ओह।

गुरुमाई बजलीह—''हमही छी 'दादी बूढ़ा'। तोरा समस्त जनकें सर्जन करइ छी हम। तैयो हमर मान्यता तों सव नहि देने छह। सव गाम मे 'दादी बूढ़ाक' पूजा होइ छै। तोरा गाँ टा में हमर पूजा बन्न अछि। तों हमरा मुर्गा नहि देलह। पड़बा नहि देलह। छागड़ नहि देलह। जल नहि देलह। भूखल-पिआसल अधमरू भऽ के हम पहाड़े-पहाड़, डगरे-डगर, बौआय कें, भटकि कें मरै छी। अन्त मे ताकिद कऽ देलिअउ। आओर तीन दिन देखवउ, तेकर बाद—खेबउ, खेबउ, खेबउ।''

तीन दिनक नाम सुनिकय गामक लोक कें जेना देह मे प्राण फिरि गेलै। निर्जीव ढोल जीवन पावि चमकि उठल और पूरा ग्रामवासी ओकर ताल पर नाचय लागल। खस्सी कटल, मुर्गा और पड़बाक बलि पड़ल और ओहिसँ छूटल रक्तक फुहारा सँ 'दादी बूढ़ाक' चेहरा भीज़ गेल, सराबोर भऽ गेल। मूड़ी कटल जीवक शरीर जमीन पर फरफराइत रहल। ओकर रक्त दादी बूढ़ाक चेहरा पर चढ़ाओल गेल। ओकरा पूजा देल गेल। ओहि रक्त के पिचि-पिचि के पिचकारी दादी बूढा क मुँह पर मारल गेल। दादी बूढ़ाक पूजा भेल।

एक्के साँस मे गुरुमाई गाँ भरि दरबड़ मारे लगलीह। पाछू पाछू गाँ भरिक अहिबाती, सधवा स्त्रीगण नाचैत दौगली। गाँक बीच मे एकटा छोट पहाड़ी ढिमका छलैक। गुरुमाई छड़पि के ओहि पर तड़पि के पहुँचलीह। गौंवा ढोल बजबैत, नाचैत हुनक पछोड़ धेलक। गुरुमाई ढिमकाक उपर स्थित पुरान खजूरक गाछ कें आलिङ्गन कऽ के मुरूछि कें खसि पड़लीह। पूजा समाप्त भेल।

बूढा दिशारी खजूर दिस इंगित कऽ बाजल—हमरा सब कें उत्तर भेटि गेल। आइ सँ दादी बूढा एहि ठाँ रहताह। हिनका पूजा दिऔन ताहि कें नहि बिसरू।

ढम-ढम कऽ के गामक सवटा ढोल फेरो बाजे लागल। सब गोटे नाचे लागल। धांगरा सब (युवकगण) सीटी मारि मारि के नाचे लागल। किशोरी और युवती गण (धांगरी) ढोलक चोटक थाप पर, लय-ताल पर डांड़ हिला के नाचे लगली। समस्त बूढ़ा-बूढ़ी थइ-थइ, धइ-धइ कऽ के नाचय लागल। गामक डेढ़ सौ लोक क सरल हृदय क एक्य विश्वाससँ खजूर गाछ मे देव-सदृश 'दादी-बूढ़ा' के प्राण प्रतिष्ठा कयल गेल।

दिशारी (ज्योतिषी) मंत्र पढ़लक। पंचाङ्गक पन्ना खोललक। सूरज दिसि देखि कें मने-मन नहि जानि कीदन-कहाँ दन बड़बड़ाय लागल। भुइयाँ पर अरिपन जेकाँ

रंगीन बुकनी (मुरुज) छिड़िआय के एक कोना पर एकटा काठी गाड़ि तेकर छाँह एक दृष्टिसँ देखय लागल। सजमनिक तुम्बा सँ मद्य पीलक। तकर पश्चात् हठात् ओ चिचिआयल—"काटह, काटह गाछक छीप कें छोपऽ नहि तँ 'दादी-बूढ़ा' एतय सँ भागि जेतह।"

एक पोरसा भरि खजूर गाछक थम्भ पर दंशटा कुड़हरि एक्के बेर बजरय लागल—ठीक कपारक ऊँचाई धरि काटल गेल। जते रहि गेलै से भेलाह आदिम पुरखा क प्रतीक—दादी बूढ़ा। ठुट्ठा गाछक जड़ि सँ छीप धरि बीस या एकैस बेर कुड़हरि सँ खति के सात गिरह क चेन्ह बनाओल गेल। तकरा उज्जर लाल, पीअर, कारी रंग सँ रंगल गेल। ई चेन्ह बुझना जाइत छल हरदि-चून सँ पोतल हो। माथक उपर उज्जर रङ्गक मुरेठा बान्हल गेल। 'दादी-बूढ़ा' बड़का बड़का आँखि सँ नीचा क गाम कें कोनो चौकीदार, पहरुआ मुखिआ जेकाँ आँखि गुराड़ि के देखय लागल।

चारू दिसि पहाड़क चक्र। बीच मे गहीर खाधि और ताहि बाटे बहैत पाथर सँ भरल टेढ़-बकुली हँसुआ जेकाँ 'मुरान नदी'। ओहि नदीक तीर पर छोट-छोट खोपड़ीक घौंदा एहन घर बसल। ततऽ छोट पहाड़ी ढिमका, ताहि उपर सपाट जगह पर ठाढ़ ठुट्ठ खजूरक गाछ—'दादी बूढ़ा।'

कोरापुट क जनजाति सभ पिता क भाय कें 'दादी' कहने नहि बुझैत छथि। हुनका बुझने 'दादी' माने बापक बाप और तकरो बाप। तहिना 'ससुर' कहने स्त्री क पिता नहि बूझि ओ सभ 'स्त्री क भाय' बुझै छथि। 'परजा' जातिक बोली और 'कोन्ध' जाति क बोली मिलि के भेल दादी और बूढ़ाक मिश्रण। 'कोन्ध' बोली मे बूढ़ा माने बाप क बाप।

सात ठाँ छेबल ठूंठ खजूर गाछक आकृति में पहाड़ी ढिमका पर ठाढ़ 'दादी बूढा' चारू दिशि आँखि गुराड़ि के देखैत अछि। ओकर चौकस आँखिक आगाँ दिन पर दिन बितैत छै, राति होइत छै। पहाड़क ढलान और खोह मे भरि जाइ छै विस्मय भरल अंधकार।

'दादी बूढ़ा' बड्ड शुद्ध ठाकुर (देवता)। बिना उकठ केने, टोकने ओ कनियो कोप नहि करैत छथि। ओ परा अनादि पूर्व-पुरुष। ई सबटा हुनके सृष्टि कयल। हुनके द्वारा रचित खेल। जे केओ खाहे हुनका विषय मे किछु कहि देअय तेकर हुनका कोनो माख नहि।

उपर सँ देखला पर नीचा क खेत वड़ सुन्दर देखाय पड़े छैक। धारी धारी घेरल, चक्काक चक्का खेत। गहूमक गाढ़ हरिअर खेत, जोआर क खेत नील कचोर और धानक खेत सबुज हरिअर देखाय पड़ैत छैक। ओकर लगे तरकारीक खेती। शाखा आ ठाढ़ि बला टाट सँ घेरल वाड़ीक भीतर मकइ क भुट्टा क नाम नाम दाढ़ी पवन क झोंका मे उड़ि रहल छल।

झुंगनी, छिछिन्दा इत्यादि सब प्रकारक तरकारी प्रचुर मात्रा मे उपजै छल। तेकरा झूलि झूलि के वाड़ी-वगीचा मे बढ़ैत देखि पहरुआ जकाँ ओगरवाही करैत छलाह—'दादी बूढ़ा।' ओ देखै छलाह कते कष्ट और श्रमसँ धीआ-पूता, पोता-पोती रोड़ा भरल खेत मे उपजा करैत अछि। कखनो ओंघा जाइत छलाह, तखन कौआक झुण्ड मकइ क बालि के लोले लोल खाइ छल। गाय-गोड़ू खेत मे डंगराइत छल—ई सब हुनके किरदानी छल। दुपहर मे गाम क छौंड़ी सब अपन अपन नूआ फेंकि 'मुरान नदी' मे चभर चभर क पैसि के नहाइत छली और तेकर जल मे किलोल करैत रहैत छलीह। चरवाहा सब गाय के चरैत छोड़ि कय वड़क गाछक नीचा सुस्ताइत छल और वांसुरी वजवै छल। संध्या होइत होइत गाय-गोड़ू, भैंस सभ पहाड़ी सँ घरमुँहा भेल नीचा गाँ दिस घुरै छल। चिड़े—चुनमुनी गाछक पात सँ मिज्झर भऽ जाइत छल। दिन झुकै छल, खोपड़ी क झुकल चारसँ धुआँ वहराइत छल। धांगड़ा (युवक सबहिक) नाच घर सँ ढोलक और डुग डुगी क ध्वनि आवै छल। रातुक अन्हार मे युवक-युवती गावैत, नाचैत, खेलैत छलीह। 'दादी वूढ़ा' पहाड़ी ढिमका पर थापित भेल निश्चल ठाढ़ रहैत छलाह।

प्रत्येक शुक्र दिन अपन झोड़ा और छाता लऽ के झुण्ड क झुण्ड लोक 'नाली गाम' क हाट जाइत काल 'दादी बूढा' लगक बाट पकड़ि के जाइत छल। ओहि हाट पर जते किनै वेसाहै बला पइकार क भीड़ नहि होइत छल ताहि सँ वेसी जुटान घूमै वला दर्शकक होइ छल। हुनका लेल हाट नहि एकटा मेलाक उत्सव भेल। पाइयो भरिक तमाकू क पत्ता किनैक बहानासँ अथवा एक रत्ती नोन कीनवाक बहाने आठ सँ दस कोस रस्ता चलि के लोक हाट पहुँचैत छल। गाँक आधा पुरुष और प्रायः सबटा जनानी हाटक दिन ओहिठाम पहुँचै छली। माथ मे अण्डी तेल सँ खोपाक जूड़ा सजाय के उज्जर फूलक गुच्छा खोंसि के, लाल साड़ी पहिरि अखरे पएर हाट पर जाइत छथि पहाड़ी परजा ओ डम् जातिक युवती सभ। हुनक पयर

नहि दुखाइत छन्हि की? हँसि-हँसि के गीत गबैत पहाड़क ढलान पर होइत जाइत छथि परजा युवती और डम् जातिक लड़की। ईसाई सब ब्लाउज संगे उज्जर कपड़ा नहि तँ विभिन्न रंगक कपड़ा, आधा लाल, आधा पीअर, आधा नीला पहिरने अबै छथि। 'गहबा' जनजातिक युवती देह पर हाथक बुनल पटुआ क लाल और कारी पाढ़ि बला साड़ी पहिरने, कान मे गोल गोल पितरिआ तारसँ बनाओल झुमकी अलंकार कन्हा तक झुलैत, गोल गोल बिजुली एहन चमकैत—ओहि हाट पर जाइत छथि—माथ मे लाल फीता (रिबन) बान्हि, सब एकसँ एक सजल धजल ओहि पहाड़ पर चढ़ैत। बीच बीच मे लोकक धार रूचि जाइ छै और 'दादी बूढ़ा' दिस इंगित कऽके लोक बाजैत अछि—"वैह देखू—'दादी बूढ़ा'।" कखनो कखनो केओ 'दादी बूढ़ा' क पयर पर किछु फूल अथवा गोटेक फल चढ़ा दै छै। बहुतो गोटे साष्टांग दंडवत करैत छथि। 'दादी-बूढ़ा' हुनक विचित्र रूप सँ हाथ पैर हिलबैत भंगिमा कें चुप रहिके देखैत छथि—किछु नइ बाजैत छथि, कियैक तँ हुनका मुँह नहि छन्हि—ओ तँ ठाकुर (देवता पित्तर) थिकाह।

चनैल माथ पर तौनी बान्हने बैसाखक प्रचण्ड रौद कें सहैत 'दादी बूढ़ा' ठाढ़ रहै छथि। जेठ मासक घनघोर वर्षा में भिजैत छथि—जखन कृषक दल खेत मे गबै छथिः-

'जेठू हानू मारूली, वर्षा दूली आसूली"—'चढ़ल जेठ हेठ भेल बरखा।' तहिना कातिक मे हाड़ कँपबै बला सर्द हवा क झोंका 'दादी बूढ़ा' के नहि कँपा सकै अछि अथवा तारा भरल अन्हार राति हुनका भयभीत नहि करै अछि। हुनका कोनो दुख नहि, कोनो संताप नहि ओ निर्वाक, अविचलित ठाढ़, कोनो कष्ट नहि कोनो अनुभूति नहि, हृदय नहि कियैक तँ ओ देवता—पित्तर थिकाह, ठाकुर थिकाह। हुनका और अन्य कोनो काज नहि मात्र एके काज छन्हि—एकटक देखब, गुरड़ि-गुरड़ि के देखि-देखि ठाढ़ रहब।

हियासब। अखियासब।

किछु दिन पश्चात् 'दादी-बूढ़ाक' निकट सटि कय एक विराट 'उइहुंका', दिवार क ढिमका, दिन प्रति दिन एना बढ़य लागल जेना आकार मे ओ 'दादी बूढ़ा' के सेहो जीत लेत। गामक लोक 'हुंका' कें तोड़लकै नहि, हँटेलकै नहि, कियैक तँ दिशारी बूढ़ा अपन पंचाङ्ग पलटि के बाजल—"दादी बूढ़ा अपन सङ्गी बनबैले कोनो

आन आन देवता-पितर-डूमा कें अपना लग बजौने अछि। 'दादी बूढ़ा' और 'हुँकाबूढा' एक सङ्ग ठाढ़ भऽ के गाम कें एहि दिस सँ ओहि दिस धरि अपन शुभ दृष्टि मे राखै छथि।

भक्तगण अपन इच्छाक पूर्तिक मनौती करैत काल 'हुंका-बूढ़ा' क पीड़ी सँ माटि खखोरि लैत छथि आ ओकरा पवित्र बूझि देह मे हंसोथि लै छथि तेकरा ललाट पर लगाय तिलक करै छथि और जीभ पर राखि खा लै छथि, विभूत जेकाँ। जे ग्रामवासी निःसन्तान छथि, जिनका 'अपच' क शिकायत रहैत छन्हि, जे असाध्य रोग सँ दीर्घ काल सँ ग्रसित छथि से दादी बूढ़ा लग अपन चढ़ौआ सदिखन, नित्यप्रति चढ़वैते रहैत छथि। ओतऽ लोक एहिना समय काल खेपैत रहैत छल।

❑❑

तीन

ठेंगा जानी अपन पिता राम नाइकक एकसरूआ बेटा छल। ककरो कहिओ तेकर सन्देह नहि भेलै जे बाप क बाद से गाँक माइनजन (नाइक) नहि होयत। राजा क हवेलीसँ तकरा माथ पर पाग देल जेतै, ओ अङ्गरखा पर लगबै ले एक जोड़ी बोताम पाओत, एक बोताम पर राजाक छवि रहतै और दोसर पर राजाक पोताक। रेभेन्यू आफिसक अमीनक मंजूरी भेला पर ओकरा नाइक-मुखिआ क पद पाबैमे के भंगठवितै?

एही दुआरे ओकर बड़ खातिर—मानदान होइ छैक। ठेंगा जानी दिन मे बाप क चास (खेती) देखै छै। ओ साँझ पड़िते बसा घर (नाच घर) दिस दौगैत छल। जतऽ गामक ओकरे बतरिआ बीसोटा छौड़ा सुतै छै। गाँक एकपेड़िआ क एहि दिस धाङ्गरा बसा घर छैक आ एकपेड़िआ क ओहि दिस धाङ्गरी (कुमारी किशोरी युवती) सभ सुतै छथि।

धाङ्गरा वसा घर मे राति बितला पर कुमार छौंड़ा सब डुंग डुंगा बाद्य यंत्र लऽ के गीत गबैत अछि। एजेंसी द्वारा निर्मित सर्वत्र इएह डुंगडुंगा—जे एकटा सूखल सजमनिक तूम्बा पर चाम मढ़ि के बनाओल गेल छैक। ओकरा संग एक नाम लकड़ी क डम्फ डाम्फ क उपर एक खुट्टी.गाड़ि एक तार एम्हर सँ ओम्हर छाड़ल छै। ओहि तार के टुंग टुंग कयला सँ डुंग डुंग शब्द निकलै छै। एक हाथ सँ तार कें टुन टुन करैत दोसर हाथक अँउठी सँ सजमनिक तुम्बा पर टक टक कऽ के ताल बैसाओल जाइछ।

साँझ भेला पर ठेंगा जानी डुंग डुंगा बजाय मच्छड़ क घनर-घनर शब्द कें जीत लैत अछि। तकर बाद ओ गीतक टाहि मारैत अछि—

दोसर दिस सँ हरी जानीक धीआ (बेटी) सारिआदान पद जोड़ि जोड़ि गीतक उत्तर दै छै।

गीतक लड़ी लागि जाइत छै। ठेंगा क सङ्गी पुरूना मांडिआ और पोढ़ा बन्धु

ओकरा संगे स्वर मिला गीत गावैत अछि। दोसर दिस सभ धांगड़ी मिलि जाइत छथि। प्रीति—भावक स्वर लहरी सम्पूर्ण जंगल मे पसरि जाइछ।

राम मुदुली एलियो के पुछलकै—'एँ हौ, ठेंगाक प्रति सारिआ दानक कथा लगेनें से की अधलाह हेतैक?

एलियो कहलकै—हँ हौ नायक, नीकें हेतऽ। गाम भरि में तोरा छोड़ि जानीक बराबरी और के कऽ सकैत अछि?

राम मुदुली कहलकै—थमहऽ, ठेंगा हमर लड़का छी। ठेंगा एखनो नावालिगे अछि। किछु दिन और बीतय दहक। ओकरा अपने निर्णय लिअऽ दहक।

ठेंगा जानी पर गाम भरिक युवती आँखि लगेने छल। गामक मुखिआक परिवार क पुत्रवधू के नहि वनय चाहितें?

जखन ठेंगा गीत गावै तँ चम्पावती या सुवनफूला अथवा और केओ गीते मे उत्तर दैत रहैक। गीतक लहरी ठेंगाक कान मे पहुँचै, कखनो कखनो ठेंगाक मोन डोलय लागै छै—खास कऽ जखन ओ नदीक कात असकर रहैये। ठेंगा कनें काल थमकि के सोचैत अछि ओ एहि सब युवती मे केकरा अपन जीवन संगी बनाबय। ओ लड़की सभक गीतक उत्तर देवा में अपना कें रोकि नहि पावै छल और न इएह निर्णय कऽ पावै छल जे ओकरा सभ मे सँ अपन प्रेम पावैक अधिकारिणी ककरा वनावय?

चान्दनी छिटकल राति में युवती सभ आगिक चारू दिस घेरा बना के बाँहि मे बाँहि दऽ के नाचै छली। ठेंगा जानी और ओकर तीन टा मित्र एक दोसरा क डेन पकड़ने ठाढ़ रहैत छल। चारिटा युवक एकटा वृत्त बनबै छल और दोसर चारि गोंटे ओकर कान्ह पर चढ़ि जाइत छल। आठ गोंटे एक वृत्त मे नाचैत छल। युवती सभ युवकक वीच खाली जगह वाटे ढोलक आवाज पर नाचि के वाहर आबै छली आ भीतर जाइत छली। नाचैत काल कोनो लड़की जानि बूझि के ठेंगा लग देने नाचैत काल अपन गति मद्धिम कऽ दैत छली। केओ केओ ओकरा लग सँ सटि के निकलि जाइत छली। टेंगा कें लागैत छलै नाच छोड़ि के कोनो एक युवती कें पकड़ि के दादी वूढा क पहाड़ी ऊँचका पर लऽ जाइ। ओ युवक छल। अपन सपना ओकर विचार के बदलि दैत छलै। जखन ओ कोनो युवतीक विषय में सोचैत रहैत छल तखनें दोसर युवती क छाँह ओकर हृदय मे पैसि जाइत छलै—तखनें ओ थमकि जाइत छल।

ाकर सपना मे अवैत ओतुका जनजातिक युवतीक तीक्ष्ण रूप छलै। तिक्ख पांडुर रंग क छलै जे रौदक धाह मे पिघलि जाय बला छल, ओकर सुन्दर गम्भीर दृष्टि चिक्कन जूड़ा, जूड़ा मे छोट छोट फूलक गुच्छा—ओकर सभक देह मटियौन लाल सूर्य एहन, ताहि पर लाल कपड़ा कसि के बान्हल, स्वस्थ और यौवनक प्राचुर्य्य। हिरणी एहन गति, क्षिप्र, उल्लसित, सुठाम, सुडौल धांगरी सभ छली।

ठेंगा जानीक आँखिक आगाँसँ चलि जाइत छैक धांगरीक झुण्ड। पिअर अलसी खेतक उपर, नील-हरिअर मडुआक खेतक उपर, उज्जर हँसीक माया, कुहेस सन अभेद्य। ओकर देहक रोम-रोम पुलकित होइत छैक। मोन गमागम कऽ उठै छै। हृदयक घनगर अनुभूतिक भीतर कूटि-कूटि के भरल छै काँट आ फूल। ओकरा 'दादी बूढ़ाक' कोनो माया नहि बान्है छैक। खजूरक ठुट्ठ गाछ पर बीसटा छह देल खुट्टा—ओकरा नहि छेकै छै दादी बूढ़ाक कोनो खुशी। ओजपूर्ण अथक ठेंगा जानी विद्ध होइत अछि। मोन कुम्हलाइत छैक, शरीर जरै छै किन्तु सब किछु मिझेलाक बादो सभसँ कटि के अलग थलग, असकर मे गुप्त मोन कें सम्हारि नहि सकै छै, से ओ हँसैत अछि, खेलैत अछि, कुदैत तँ अछि मुदा अन्त मे रस्ता लग रूकि जाइत अछि आगू नहि जा पाबैत अछि।

युवती सब ओकर मजाक करै छै, हँसी ठट्ठा करै मे हुनका आनन्द आबै छन्हि। कारण जे युवक-युवतीक सम्बन्ध मे ओ बहुत दूर धरि अग्रसर नहि भेल अछि। मुदा ओकर गढ़नि बलिष्ठ छैक, रूप सुन्दर छै और दूनू स्वप्रिल आँखि जेना मेघ एहन उड़ैत-हँसैत ओ भासि रहल हो जेना मोने मोन स्वप्न क फूल उपजा रहल हो जेकरा ओ शान्त करबाक हेतु कहिओ चेष्टा नहि केलक, तैं ओ अजेय। आब स्त्री-पुरुषक सम्बन्धक जानकारी पयबाक हेतु ओकरे चेष्टा करय पड़तै, आक्रमण और आघात करय पड़तै, यावत ओ टूटि नहि जाइछ। ठेंगा जानी अजिया दादी कालक बहुत प्राचीन गीत गावि के धांगरि बसाघर (नाच घर) सँ गीत क लहरी क प्रत्युत्तर रण दुन्दुभि क स्वर मे दै छैः—

''सारिआ गारू कातिकाडू सूण्डीगारू हीण्डा।
आइलूस रे ठोकी दूइ केते रीसी डीन्डा।''

धांगरी बसा घर सँ आबैत गीत मे द्वन्द्व युद्ध क बोली क उत्तर ठेंगा दै छैक पुरान वीतल नीक दिनक गीत सँ। ओ युवती सबकें ललकारा दै छै जे आवह द्वन्द्व

गीत क द्वारा अपन यौवनक मस्तीक ताकत कें अजमाय लैह। एहि पर युवती सब एक दोसराक पीठ थपथपा कें अपन मस्ती मे 'वाह-वाह' कहि के गीत क उतारा गीते मे दैत रहलीह। दिन बितला पर ठेंगा राति कें बेचैन भऽ जाइछ। बिछाना पर सुतल कछमछ करैत एहि करोट सँ ओहि करोट पलटैत राति वितबै अछि। मुदा संकोचवश सड़क पार कऽ के धांगड़ी बसा घर धरि जाके कोनो युवती के पकड़ि आनै मे ओकर पैर नहि उठै छै।

ऊँच पहाड़ी ढिमका पर मुरेठा बान्हने 'दादी बूढा' असकरे जानै छथि सभ क हृदय क भावना।

एक दिन संध्याकाल गाम क एकपेड़िआ पर सारिआ दान मकइ क किछु बालि लऽ के जाइत छलि। ठेंगा जानी ओहि समय अपन गोडू-डांगर (गाय-माल) चराय कें पहाड़ी सँ उतरि रहलि छलि। ताहि समय दूनू गोटे एक दोसरा कें देखलक। ओकर चेहरा पर हँसी फुटलै। ओ सारिआ कें कहलकैँ"एकटा हमरो देबें।"

सारिआ मुसकेलै आ एकटा भुट्टा ओकरा देलकै। ठेंगा ओकर तरहत्थी पकड़ि कें अपना दिस घिचलकै और फेरो तुरत छोड़ि कें बिना मकइ लेने ओ आगाँ बढ़ि गेल।

दोसर दिन दुपहर मे 'स्मर' परजा क बेटी कामलि झरनासँ घैल मे पानि भरि के पहाड़ी सँ गाम दिस उतरै छलि, ठेंगा जानी अपन कन्हा पर लाठी लेने, जाहि मे दू तीन टा सजमनि बान्हल छलै, अपन खेत दिस जाइत छल। हठात् कामलि पिच्छड़ि कऽ खसली। घैल तँ बाँचि गेलै किन्तु पानि सबटा हेरा गेलै। पयर मे मोच पड़लै। ओ बैसि के कानय लागलि। ठेंगा ओकरा लग दौग के आयल, लाठी आ सजमनि जमीन पर पटकलक और ओकरा उठेलकै। कामलि पीड़ा सँ कनैत रहलीह और अपन पयर पर ठाढ़ नहि भऽ सकली। लग पास मे केओ नहि छलै ओ जगह किछु नीचा अढ़ मे छलै। चारू दिस गाछ वृक्षक जंगलक छाहरि मे एकान्त छलै। लोक क आवा जाही ले खेत क रस्ता दोसर दिस छलै। चारू दिस वातावरण शान्त छल। ठेंगा जानी क्षण भरि कामलि कें विकल भेल मुँह दिस ताकत क जेना ओकर आँखिक गहराइ नापैत हो। तखन ओ मुँह नीचा झुकेलक। तेकर बाद कामलि कें ठाढ़ कऽ के अपन वाट धेलक। ओ अपन उत्तेजना कें नुकबैत, धप् धप् कऽ के पयर पटकैत चलि गेल। बचपने सँ गामक छौंड़ी सबकें

ओ देखने अछि, नहि जानि कतेको छौंड़ी, ओकरा आगाँ नांगट रहै छल। आब वस्त्र पहिरब सिखलक अछि। पेघ भेल अछि आब आ देखला सँ हठात् चौंकि जाइत अछि। मोन मे छः-पाँच होइत छै। फेरो लोभा कें चलि जाइत अछि।

'दादी बूढ़ा' पहाड़ीक उपर एहि सब सँ निस्पृह भेल चुपचाप ठाढ़ रहैत छथि।

रामू नाइक प्रति दिन हुनक पयर पर खसि के दण्डवत होइत प्रार्थना करैत अछि—'हमर ठेंगा क वास्ते एकटा नीक बहू दिहऽ हे 'दादी बूढ़ा'। जे सुन्दर हो, खेत क काज-धंधा करै मे समर्थ हो, असंख्य बच्चा क जन्म देअय और हमरा बूढा-बूढी कें पूछय। निर्जन संध्या मे 'दादी बूढ़ा' और 'हुंका-बूढ़ा क नीचा जखन अंधकार भरि जाइत छैक, नीचा धांगराक बसाघर सँ डुंग डुंगा क झमक अनुप्रास, उपर सँ मच्छड़-डांस क भनर-भनर शब्द विचित्र संगीत बनिके सुनाय देबऽ लागै छै तखन रामू नाइक बारम्बार 'दादी बूढा' लग गोहारि लगबैत अछि, अरज करैत अछि, विनती करैये। अपन कहल अपने सुनैये—"हौ, दादी बूढ़ा, परूकाँ साल जेकाँ हमर पाँच टा गोडू जेना मुइल एहि साल तेहन अन्याय नहि हो, तोरा मुर्गा क बलि देबउ, परबा क बलि देबउ, दारू क भोग चढेबौ, ओना जुनि करीहऽ, हे, दादी बूढा। हम्मे मरि जेबइ।"

कहिओ कहिओ हरी जानी आबि कें 'दादी बूढ़ा' लग गोहराबै छै—'हमर बेटी सारिआ दान क वास्ते रामू नाइकं क बेटा ठेंगा संगे तू सम्बन्ध करा दैह। तोरा एकटा बूढ़ वरद देबौ और देबौ एक घैल 'रान्हल हंड़ियाक' मद्य।

दादी बूढ़ा लग पर्याप्त गोहारि चलैत रहैत छैक। 'हूंका बूढ़ा' सेहो ऊँच भेल जाइत अछि।

कहिओ कहिओ दुपहर मे फूल माला लऽके अबैत छथि गाम क युवती सभ। दादी बूढ़ाक चारू दिस हाथ सँ एक दोसरा क डांड़ धेने चकभाउर दऽ के नाचैत गीत गबैत छथि।

'आमू गाणू जामू गाणू बीतू रे
खाड़ू मासा माड़ीमाला गीतू रे'

एक एक कऽ के ओ सभ दादी बूढ़ा क कान मे फुसफुसाय अपन पसिन्द क युवक क नाम क गोहारि करै छथि। दादी बूढ़ा के फूल माला पहिराबै छथि, खिलखिलाइत हँसैत और एक दोसरा कें चिकोटी काटि ठेला-ठेली करैत झुण्ड तोड़ि के दौड़ि के भागि जाइत छथि।

117103
9.12.04

'दादी बूढ़ा' लग मनौती कऽ केओं हताश कहाँ भेल? सभ आस लगौने बैसल रहैत अछि। कोनो ने कोनो दिन निश्चये आस पूरा हेतैक। 'दादी बूढ़ा' नहि निरास करथिन।

'दादी बूढ़ा' क उपर कतेको मुर्गा-मुर्गीक बलि चढ़ाओल जाइछ। हुनका पैर पर घैलक घैल दारू चढाओल जाइछ। देखब तँ हुनक चारू दिस, ढेर क ढेर चढ़ाओल सुखल फूल पड़ल रहैछ।

मध्य रात्रि मे कहिओ काल तीन चारि गोटे ओतऽ अओताह, हुनका कारी कारी बड़का बड़का मोछ रहै छन्हि, हुनक शरीर पर चिक-चिक करैत अण्डी क तेल पोतल रहै छनि जे अन्हारो में चमकै छैक। ओ खाली कारी रंगक धरिआ अथवा कोपीन पहिरने रहैत छथि। ओ सभ 'डम्ब' जातिक थिकाह, 'केरी' सब थिकाह, जिनका ताकैले पुलिस क जवान घनघोर जंगले जंगल बउआइत छथि, ताक-हेर करैत रहैत छथि।

ओहो दादी बूढ़ा लग आबि मिनती करै छथि—हे दादी बूढ़ा, आजुक राति पुलिस क जवान एहि गामक सीमान सरहद मे तलाशी लै ले नहि आबय। दादी बूढा, सबटा 'इन्सपिटी बाबू' (इन्सपेक्टर) कें ज्वर धऽ लैन। हे दादी बूढ़ा, हम सब आजुक राति बिना वाधा, बिना भालु-बाघक भयसँ अपन काज कऽ के सकुशल आबि जाय। तोहर गोहारि छह जे हम सब पकड़ल ने जाय। हमरा सबके जरूरे किछु हाथ लागय। आजुक राति खाली हाथे नहि घुरी। तोहीं टा असकरे हमर सभहिक नीक बेजाय बूझय बला छह। भलाइ करै बला छह। तोरा लग गोहारि नहि करबहु ते हमर मिनती और के सुनतैक?

ओ अब दादी बूढ़ाक पएर पर साष्टाङ्ग पड़ि रहै छथि और हृदय मे नवीन आशा और साहस बान्हि के अन्हार रातुक संग एक भऽ जाथि। अन्धकार मे समा जाइत छथि।

नदी क घाट पर सारिआदान अपन सखी सारिआफूल क गरदनिक मैल छोड़बैत ओकर कान मे फुसफुसाय के कहलकै—आइ बापू माँ कें कहै छलथिन जे जौं रामू नाइक अपन बेटाक विषय मे हमरा मांगैले आओत तँ ओ चालिसे टाका 'वधू मूल्य' देलो पर हमर बापू नहि, नहि कहतैक। इ कहि खिलखिला के हँसैत सारिआ दान पानि मे डुबकी मारलक।

सारिआफूल कहलकै—"हमर बापू हमर मामा कें काल्हि हमरा विषय मे

नाइक लग जा के ई समाद कहैले कहलकै।'' ओ दुनू एकर बाद एक दोसरा कें हँसी सङ्ग ईर्ष्याक धधरा मे मुँह देखैत रहल। तकर बाद आकाश दिस देखे लागल। सारिआ दान बाजलि—''अरे! दू लग्गा समय उठि गेलै और कतेक काल धरि नहेबऽ?'' दुनू गोटे पानि सँ निकलि, कपड़ा पहिरि, अपन अपन बाटे घर दिस चललि।

ओहि दिन संध्या काल झुरपुट मे 'सारिआदान' पहाड़ी ढिमका उपर 'दादी बूढा' लग गेली। ओ देखलक जे ओतय सारिआफूल पहिनहि सँ ढिमका पर सँ उतरि रहल छली।

सारिआदान पुछलकै—''कतय सँ आबै छह?''

सारिआफूल कहलकै—''हमर माय—'घुसुरि सुग्गरि' हेरा गेल अछि तेकरे ताकय आयल छी। हम सोचलहुँ ओ एम्हरे आयल होयत। आ तों केम्हर जा रहल छह? सारिआदान कहलकै—''उपर खेत दिस जा रहल छी। नीचा मे ते बहुत भीड़ भाड़ छै।'' दुनू सखी एक दोसरा कें निहारि के देखलकै। फेरो पलटि के अपन अपन बाट पर चलली।

सारिआदान उपर दादी बूढा लग जा कें देखलक हुनक मुरेठा पर ताजा फूल क हार झूलि रहल छलैन। ओ ओकरा झिकिकय तोड़ि कय फेकि देलकै आ तकर बदला अपन आँचर मे नुका के आनल हार—लाल मन्दार फूलक गाँथल हार—निकालि के हुनका मुरेठा पर पहिरा देलकै। दुनू हाथ सँ गछारि कें दादी बूढा कें दुलार सँ पकड़ि के फुसफुसाय के बाजय लागल—''दादी बूढ़ा, तो खाली हमरे फूल पहिरिहऽ आओर ककरो देल फूल छूबो टा नहि करिहऽ, नहि तँ हम तमसा के रूसि रहबौ। तोरा उपर मांड़ो नहि चढ़ेबौ। बुझलहक ने? मांड़ो ने! हमर बात जुनि काटिहऽ।''

तखन एक वेरि चारू दिस नजरि खिरौलक और ई जानि जे लग पास मे केओ नहि अछि 'सारिआदान' दादी बूढा' क आगाँ साष्टाङ्ग पड़ि गेली। आओर निकट क पाथर पर बीस बेरि अपन माथा ठोकि कबुला केलक फेरो घर चलि गेल।

ओहि दिन सँ दुनू सखी क बहिनपा टूटि गेलै।

ओहि साँझ 'मुरान नदीक' छल छल बहैत धार पर डूबैत सुरूजक लाल किरण पड़ैत रहलै। 'कन्सारी' माछ हेल हेल कय नदी क कात धरि आबैत रहलै। नदी क पेंट मे बड़का बड़का पाथरक चट्टान जतऽ ततऽ पड़ल छलै। जल कुम्भी और

सेबार पाथरक बीच मे छाड़ल छलै। ठेंगा जानी एहि चट्टान मे सँ कोनो एक पर बैसल छल, पयर पसारिकय, हाथ मे माछ मारेक वंसी लेने। वंसीक नकुशी मे लागल छलै जीयत छोट का माछक बोर और माछक मूड़ी लग गोडूक नांगरिक केशक एक फाँस बनाओल छलैक। ओकर डांड़क कोपीन मे पत्ता क एकटा ठोंगा खोंसल छलै ओहि मे अण्डी क तेल छलै। ठेंगा जानी डांड़ सँ पिंका बीड़ी निकालि के कने सोंट मारि कें कानक उपर राखैये। तखन बंसीक ताग के पानि सँ उठा के फाँस मे कने अण्डीक तेल लगा के फेरो बंसी कें पानि मे फेंकि पाथि। के देखय लागैये—कखन कंन्सारी माछ आबि के बोर के खेतैक और फाँस मे बझतै? जंगल मे अन्हार पसरैत रहलै, ठेंगाक ध्यान वंसी पर टिकल छलै। हेंजक हेंज बगुला और मछगिद्धी साँझ मे नदीक बीच पाथर पर बैसैत अछि। कुरैइ फूलक सुवास सँ पवन सुगंधित रहै छै। हवाक झोंका मे एम्हर सँ ओम्हर झुलैत रहे छैक कुरैइ फूल। मुरान नदी के दूनू तट पर सुलु सुलिआ (एक प्रकार पुष्प क पौधा) जाहि मे पीअर फूल आबि गेल छलै मन्द पवन मे डोलि रहल छल।

ठेंगाजानी बहुतो काल धरि बैसि के एकटक माछ मारैये। नहेबाक घाट जे गाम दिस छलै, ततऽ सँ खिलखिलाइत हँसीक स्वर और घैल भरबाक कल-कल, छप-छप स्वर सुनाय पड़ैत छैक। नदीक जलक बीच सऽर जमीनक किछु अंश देखाय पड़ै छै।

ठेंगा जानी कखनो बंसीक फाँस मे अण्डीक तेल लगेनाय बिसरि जाइत अछि। पिंका (बीड़ी) पीयब सेहो मोन नहि रहै छै। खाली पानि दिस एकाग्र भऽ देखैत सोचैत रहैत अछि। की सोचैये? ओकर अन्त नहि। ओकर अपने चेहरा पानि मे लम्बायमान भेल झुलैत रहैत छैक।

अन्हार और गहराय छैक। जंगली जानवर जेना कुटरा (एक प्रकार क हिरण) क बोल सुनाय पड़ै छै। मुन्हारि साँझ मे झिंगुर झींझीं करै छै। बर्तमान और भविष्य क झूला मे पड़ि के ओकर मोन हिडुला झूलैत झूलैत जहिं के तहिं रहि जाइत छैक। बीच मे झटका मारै छै अतीत क स्मृति। समाधान नहि भेटै छै। जटिलताक भीतर बाजै छै करूण रागिनी। सरू जंगलक भीतर घनगर कुहेस आकाश क नीचा लागल जेकाँ। ओम्हर बाप बेटा क बाट ताकै छै, ओ कियैक नहि आयल? माय ताकै छै, एते देरी भऽ गेलै, बेटा केम्हर गेल? नहि जानि कखन पत्ताक ठोंगा मे कनिये मांड़ पीने छल, ओ की एखन धरि हेतैक ओकर पेट मे?

अन्त मे बेटा घर घुरलैक। बाप क छाती खुशी सँ फूलि जाइत छैक। 'हँ', इएह ओकर बेटा छियैक! बुढ़ायल दिनक हाथक बैसाखी—ठेंगा। देखबा पर शत्रुओ भयभीत भऽ जाइक।

दादी बूढ़ा सब तोहरे दया!

बापक पयर धरती पर नहि टिकै छलै। दिन और राति कटि जाइ छै दुनू गोटे के। बेटा क खुशी क सपना देखि-देखि और हुनक अनवरत सपना! बेटाक ब्याह हेतैक। घर मे बहु अओतैक! ओ टुकुर टुकुर निहारतै, नहु नहु चलतै। ओ बाप कें नहबैले पानि आनि कें देतैक। सासु कें भनसा घर नहि जाय देतैक। ठेलिके अपने मांड़भात पकेतैक। 'मुर्दी' साग धोतै, मडूआ जुआर क रोटी पकेतैक, नबका बहु।

नदी क धार क काते सँ दादी बूढ़ा दिस देखैत परजूनी बूढ़ी (परजा जातिक बूढ़ी) हाथ जोड़ि के ललाट सँ छुबैत अछि, गोहराबैत काल देह क चारू कात साड़ी लपेटब बिसरि जाइत अछि ओ। ग्रामवासी कें बूढ़ा राम नाइक (मुखिआ) प्रतिदिन फरमाइश करैत अछि—आइ मुर्गा क बलि चढ़ाबहक, आइ परबाक बलि दहक, आइ दारू चढ़ाबहक, तँ आइ विशेष पूजाक ओरिआन करहक।

दादी बूढा हँसैत बुझना जाइत छैक।

हरी जानी और राम मुदुली नायक (मुखिया) गामे गाम जा के लगान वसूल करै छथि। रामू नाइक अपन बेटा ठेंगाक बात चलबैत अछि। हरी जानी अपन बेटी सारिआदान क बात करैत अछि। सङ्गक चांचेरी डम नौआ अपन पुरखाक। चांचेरी ठेंगा लऽके पाछाँ पाछाँ चलैत अछि। कखनो कखनो ओ मूड़ी डोला के नाइक क बात पर अपन सहमति दैत अछि तँ कखनो हुंकारी भरि के जानी क बात पर। एहि प्रकार ओ बहुतो गाम जाइत छथि। लगानक आफिसरक वास्ते भेंट मे बकरी-खस्सी, नहि तँ एकटा मुर्गीए आनै छथि। पाथर सँ भरल पिच्छड़ ढलुआ रस्ता पर ओ सभ सम्हरि के चलै छथि। मुदुली (नाइक) और जानी एक दोसरा कें कनडेरिए आँखि सँ देखैत छथि। किछु पुछबाक होइन्ह मने। राम अपन बेटाक खातिर सारिआदान कें मांगैत हिचकैत छथि तहिना हरी उपकरि के बधू क मूल्य पुछबा मे धखाइत छथि। एहिना दिन बितल जाइछ।

गाम क लोक दादी बूढ़ा दिस टक लगौने रहैत अछि।

दादी बूढा आकाश दिस निष्क्रिय भऽ टकटकी लगौने रहैत अछि। गाम क युवती सब ठेंगाजानी क संगीत दिस कान पथने रहैत अछि। खाली 'हुंका बूढ़ा'

अपन गतिविधि मे सक्रिय भऽ मग्न रहैत अछि। एकधारी लगा कऽ दीवार (दीमक) चलैत रहैत अछि। धारीक दुनू दिस एक एकटा बेंग लगातार अपन जीभ बाहर-भीतर करैत लोभी सूदखोर जेकाँ दीमक सबकें गटकैत रहैत अछि। दादी बूढा निश्चल, निश्प्रभ भेल बिना कोनो कौतुक या हलचल अथवा कोलाहल के ठाढ़ रहैछ। ओ स्थिर अछि मुदा दुनिया चहल पहल सँ भरल अछि।

लगपासक जंगल कें सपाट बना के खेतीक उपयुक्त बनबैले ग्रामवासी छेक-बेढ़ चुकल छथि। जतऽ जंगल साफ करबाक छैक, पैघ पैघ गाछ काटि के, एक टुकड़ा एम्हर, एक टुकड़ा ओम्हर राखि के बाँकी झाड़ झंखाड़ कें जराओल गेल छैक। एक दिन ओतऽ दारू पकाओल (चुआओल) जेतैक। एक बेर मे डेढ़ सौ कुरहरि-टेंगारी-टाङ्गी गाछ सब पर बजरतै। शाल, आम, तेतरि, पिआशाल डिम्बरी सबटा गाछ जमीन पर खसाओल जेतैक। पहाड़क माथा मूड़िकऽ दही एहन कदबाकऽ के बनक मनुष्य ओतय धान उपजाओत आ समेटत। बनक मनुक्ख कें जंगल सँ की भेटैत छैक? जंगलक फायदा राजा लऽ लै छैक, जंगल में आधिपत्य बाघ कें छैक। कादो पर मच्छड़ क राज छै। लोक कें खाली भेटै छै मुट्ठी भरि चाउर आओर अन्य शस्य जेना अलसी, महुआ और अण्डी—इएह साफ कयल जंगल मे मनुक्ख उपजा सकत। तखन एक दिन 'फौरेस्टर' (वन विभाग क अधिकारी) आओत, ओहि जगहक तजवीज करत और लोक कें घीचि घाँचि कचहरी एवं कानून घर क फंदा मे बझाओत। तखन दिशारी (ज्योतिषी) दादी बूढ़ा दिस देखि कय नीक समय-काल ताकि के हुनका कचहरी जाइ लेल कहतैक, अन्त मे वैह मनुक्ख जुर्माना क टाका भरत। राहत एतबे जे तइओ हुनका सबके रोजाना क खर्ची सँ किछु बचिये जेतैन्ह। देहक पसेना बहा के, ओहि मे एक मुट्ठी भात सानि के समय काटिए लेताह। ओतबे यथेष्ठ छै, हुनका वास्ते। आखिर हुनका वास्ते पहाड़क कांकड़क अपेक्षा बासि भातक हंड़िया (मद्य) आ मांड़क एक बून्द सैह बहुत स्वादिष्ट होइ छै।

इतिहास अपन पन्ना उलटैत अछि। दादी बूढ़ाक ढिमका क ठीक नीचा, नदी क धारक कात मे गैरकानूनी दारू चुआओल जा रहल अछि। चुल्हाक उपर सड़ल महु भरल हांड़ी जकर मुँह सँ मुँह लागल दोसर छोट हँड़ी गोबर आ माटिक थोप सँ चिपकाओल गेल छलै, ओतय सँ एक टोटी लगा के झाँपल पात्र सँ जोड़ैत, ताहि भीतर और एक पात्र जाहि मे दारू चुआओल जाइछ। दादी बूढ़ाक पूजा और भोग

लगवैक बाद शरावक भट्टीक ओरिआओन चलि पड़ै अछि। महुआक दारू पीला बाद पुरुष सबहिक आँखि आ चेहरा लाल, तमतमायल और डम्फ रहै छै—हुनक पेट दारू सँ भरल। ओ 'हो...हो...' कऽ के हंसैत छथि, चेहरा पर अनर्गल हास्य, हंसी रहैत छन्हि। ओहि मुनहारि साँझ मे पहाड़ी उपर कोनो सूर्यक प्रकाश नहि, कोनो तारा नहि, खाली लाल भट्टी सँ निकसैत आगिक लाली और गर्मी रहैछ।

'दादी बूढ़ा' टक टक देखैत अछि, लागै छै जे ओ मनुक्ख क एहि किरदानी पर व्यङ्ग्य सँ हँसि रहल हो।

एक दिन अलसी फूल खिलैक मास मे, दीआबाती क उत्सवक समय मे ठेंगा जानी 'पचेड़ी' पहाड़ सँ उतरि रहल छल। पहाड़ नांघै क बाद 'लूला' गामक खाल क ढलुआन पड़ै छै। दुपहर क रौद शीत काल मे कते नीक लागै छैक? मोन मातल हिंड़ोला पर झूलैत।

ढलुआन ओते गहीर नहि किन्तु छोट छोट पहाड़ी सँ घेरल। एतय पहाड़क जंगल साफ कऽ के खुला जमीन मे अलसी उपजेबाक हेतु खेत बनाओल गेल छल—तैं चारू दिस पीअरे-पीअर। एकटा मन्द धार बला नदी निठल्ला जेकाँ नीचा मे बहैत, जे आँखि सँ आधा ओट रहै छल। दुनू दिस हरिअर धानक खेती, डांड़ तक धायानक पौधा लहलहाइत। बीच मे टेढ़-मेढ़ लाल आड़ि जे सींउथ क सिन्दूर क लाल रेखा एहन देखा पड़ैत छल।

ठेंगा जानी दौगैत दौगैत आबि रहल छल—माथ क भीतर शराब क नशा, आँखि चोन्हराबैत। धार मे पड़ल एकटा पाथरक चट्टान पर आस्ते सँ ठाढ़ भऽ गेल। तीव्र आखि सँ शिकारी जेना अपन 'दूनाली' कें तानि कें 'घोड़ा' दबबै सँ पहिने देखै छैक ओ तहिना देखि रहल छल।

केओ कतहु नहि। खाली कातिक मासक रौद एहन आगू क पहाड़ पर खसल खिलखिलाइत रौद ओकरा बजबैत छलै। नीचा मे 'बेढ़ा' नदीक धार लगसँ एलिओक भतीजी संतोष कुमारी ऊपर आबि रहल छली। ओ एलिओ क भाइ 'अलैइ बिरिआक' बेटी छली। ओकर फूजल केशसँ पानि चूबैत छलै, शरीर पर कोनो कपड़ा नहि, ओ सदिखन ठेंगाक एक झलक पाबैक आशा मे रहैत छली—एखन ओ ठेंगा कें पूरा क पूरा देखलक। ओ ओतय सँ एकटा एकान्त स्थल पर निहटि गेल और मूड़ी घुमा के अपन केश सुखबैत ओकरा देखय लागल। तकर बाद ओ हरिअर साड़ी पहिरलक, ब्लाउज पहिरलक आ तकर बटम लगेलक।

ठेंगा जानी मंत्र मुग्ध भेल ओकरा देखैत रहल। छाती क भीतर ओकर हृदय उछलैत रहलै। संतोष कुमारीक लटझाड़ खुलल केश, ओ अपन देह कें अंगेठी मोड़ैते छल कि अचानक ओकरा ठेंगाक उपस्थिति का भान भेलैक। चट् सँ ओ अपन साड़ी कें गरदनि तक झापैत घिचि लेलक। आँखि सँ हँसैत जल्दी जल्दी ओकर दिस पीठ कऽ के नहु नहु जाय लागल।

ठेंगा जानी नहि रूकि सकल। शुरू मे ओ अवग्रसित रहल, कने थतमतायल—ई निर्णय नहि कऽ सकल जे ओ पाछाँ घूमि के चलि जाय अथवा ओ संतोषकुमारी क पछोड़ धरय। फेरो ओकर कौतुहल क विजय भेलै और ओकर पछोड़ धेलक।

दोसर दिसक घाटी मे जेबाक हेतु नदीक धार पार कऽ के पहाड़ी नांघय पड़ै छलै। ढलुआन बड़ सीधा छलैक, बहुतो प्रकारक लता और गुल्मसँ झाँपल, बीच मे एक पातर झरना। नदीसँ मिलैत वातावरण मे नीरवताक संग पहाड़ी झरना क संगीत व्याप्त छलैक।

खाई क ओहि पार पहाड़ी रस्ता पातर छलै, झाड़ी और लता सँ वेष्ठित, शीतल छायादार, सुरंग एहन ओहि एकान्त छायादार एकपेड़िआ पर दुइ गोटे चलि रहल छलाह। किछु आगाँ अलइबेरिआ क बेटी संतोष कुमारी आ पाछाँ पाछाँ जाइत राम मुदुली क बेटा ठेंगा जानी। ओहि एकान्त स्थल पर मात्र दू मनुष्य-मूर्ति जा रहल छल। एक, सन्तोष कुमारी अलसाइत-मलसाइत आ दोसर ठेंगा जानी। तखनहि ओकर साड़ी क आँचर कोनो पुष्पलताक काँट मे ओझरा गेलै, ओकर पयर गाछ क जड़ि मे घुरमुड़ा गेलै। ओ झुकल और सोझराबैक कोशिश केलक। नहु सँ पहिने साड़ी कें ढील केलक। धक् धक् करैत हृदयसँ अधखुला ब्लाउजक बटन लगबे लागल, किछु काल थम्हि गेल। ठेंगा जानी क जड़ैत आँखि ओकर पाछाँ बेधि रहल छलै। ओकरा दिस देखि संतोष कुमारी खिल खिला के हँसल। ठेंगाक छातीक धक्-धकी बढ़ि गेलैक। किछु समय बितलैक। ठेंगा और सन्तोष एकटा चट्टान लग पहुँचल। ई स्थान गाछ, विरिछ एवं लता सँ गुम्फित छलै। वामा आ दहिन दिस ओहिठाम चट्टान दीवाल जेकाँ अऽढ़ कयने छलै। सामने मे बहुत नीचा नदी क एक पातर धार बहैत छल जतऽ पहाड़ी रस्ता देखा पड़ै छलै। ओहि चट्टान पर हरिण क खुर क आकार क दूटा छिद्र छलै। ओंगठल पाथर पर सँ पानि टघरैत छलै। सन्तोष कुमारी ओहि पर बैसि गेल। पयर पसारि लेलक आ ओकरा सोहराबय लागल। ठेंगा जानी नहु नहु पहाड़ी पर चढैत रहल। सन्तोष कुमारी ओकरा देखैत रहलीह।

आ मुसुकाइत रहलीह। ओ बाजलि–"तो हमरा दिस ओना कियैक तकै छह? तोरा ओठ पर कोनो बोल कियैक नहि?"

एते कहि ओ पाथर क चट्टान पर पसरि गेलीह। गुदगुदी भरल हँसी सँ ओकर देह हिलैत रहलै। ओकरा आगू ठेंगा ठाढ़ छल, पूरा चेहरा पसेना सँ भरल।

विना किछु बाजने ठेंगा ओकरा अपन पाँज मे लऽ लेलक। अपन छाती सँ लगबैत ओकरा चट्टान क दोसर दिस घीचि कऽ लऽ गेल।

धुन्ध भरल आसमान चन्दोबा जेकाँ पसरल छल। नीचा 'करमंगा' पहाड़क घाटी मे पीअर अलसी फूल खिलल छल। हरिअर धानक खेत नदी सँ घेरल चमकि रहल छल।

❑❑

एते पैघ दुनियाँ मे सब किछु भरल पूरल छैक। हृदय मे लाख आकांक्षा लेने अतृप्त आँखिसँ धू धू जरैत बालु कें देखैत कतेको लोकक जिनगी बीत जाइत छैक। ओ दुनियासँ चलि जाइत अछि मुदा ओकर इच्छा रहि जाइ छैक, मात्र देखव सार रहि जाइत छै। जे हाथ पसारैये वैह किछु पाबैये। मन क सोच, मनक तृष्णा वढ़ैत छैक और ओकरे देह क भूख मेटाय छै यद्यपि पूर्ति भेलाक बादो इच्छा क प्यास और तेज और भभकि जाइत छैक। जे प्रतीक्षा करैत छथि से प्रतीक्षे करैत रहि जाइत छथि।

ऊँच पहाड़ीक ढिमका पर सँ दादी बूढ़ा खाली टुक टुक देखैत छथि और हुनका नीचा एहि दुनियाँ मे कतेको लोक मात्र आशा करैये और प्रतीक्षा करैये।

मुदा सन्तोष कुमारी प्रतीक्षा नहि करतीह। ओ स्वयं लोक सभ कें ई बुझेने छैक जे ओ सब बिसरि जाथि जे ओ एक 'डम्व' जाति क धीआ थिकी। एक्के बात ओकरा विषय में हुनका सव कें याद रहि जेतनि जे ओ—संतोष कुमारी—एक यौवन पूर्ण जीवन्त और मात्र सन्तोष कुमारी थिकी। ईसाई धर्मक प्रवचन सुनबाक हेतु ओ कतेको बेरि कोरापुट गेल छली। ओहि प्रवचन सभमे जतेक प्रकार क नीतिक वचन सुनने अछि से ओकरा स्मरण नहि छैक। स्मरण छैक मुदा गिरजा घर क उच्च 'टावर', जतऽ टन-टन कऽ के घंटा बाजै छैक, उत्सव होइ छैक। दूर और लगपासक मनुक्खक मेला मे अपना कें डुबा कय ई अनुभूति भेटलैये—एक्केटा बहुत रूप मे और बहुतो मे एक होइ छै। मात्र ओकरा स्मरण रहि गेल छैक किछु जातिक युवती, जे साफ सुन्दर भऽ कें, तीन चारि प्रकार क रंग सँ रंगल कपड़ा पहिरै छै, ब्लाउज पहिरै छै, हँसि हँसि के एम्हर सँ ओम्हर घुमैत रहैये। ओ साफ सुथरा रहब सिखलक अछि, ब्लाउज पहिरि के साड़ी पहिरब सिखलक अछि। सिखलक अछि आवरणक व्यवहार—समय-असमयक अनुसार। बहुतो किछु सिखलक अछि खाली सिखलक नहि ते एक्के टा वस्तु जे प्रतीक्षा केनाय और अपने आप

कें कोनो घटना मे खेंपा देव। ओ देखलक अछि मुनहारि अन्हार राति मे पैघ शहरक दो वगली रस्ता पर माल उघैत 'लारी' कें अटकि जायब। पैघ पैघ ठेंगा पकड़ने दौड़ैत वावू सवहिक झुण्ड। दौड़ैत ट्रक क भीतर सँ ओ देखलक अछि अन्हार सड़क। वरसातक अन्हार राति में 'रेस्ट हाउस' क आराम देखलक अछि। देखि देखि कें ई वुझलक अछि जे एहि दुनियाँ मे केओ ककरो खातिर नहि रूकै छैक। पानि वहैत रहै छै, जे रुकि के सब दिन क वास्ते रहि जाइ छै ओ थिक मात्र पाथर क चट्टान।

'कोरापुट' —पहाड़क उपर इजोत मे चक चक चमकैत शहर ओकर सपना क भीतर पैसल छै। मात्र एक स्वप्न जे वरख मे दू-तीन बेर आबै छै, प्रतिदिन नहि। मोनक तृष्णा अवस्था नहि देखै छै, ओकर हृदयक तृष्णा बनले रहै छै। ओकरा वास्ते जंगल थिक मरूभूमि जेना सदिखन एके रंग। खाली ओंघायल जंगल, बीच बीच मे जंगल और पाथर क बीच अछि—छोट छोट खेत। एतऽ लोक घुमैले नहि वहराइत अछि वहराइत अछि काठ काटैले अथवा खेत मे काज करैले। दिन भरि खाली भनसाक नाम पर माँड़ पकायब, कन्द-मूल कोड़ि के आनब, साग बीछब वनायब और रातुक नाच—धांगड़ा धांगड़ी सङ्ग नाचब। जातिक हिसाब सँ परजा जातिक लोक डम्ब जाति सँ घृणा करै छथि। डम्ब जातिक लोक थोड़बे मात्र चारि या पाँच घर।

'धांगड़' मात्र तीन घर। 'वेनियाँ मणि' अपन दाढ़ी मोछ नहि कटवैत अछि, मुँह सेहो नहि धोइत छथि। मसिक जातिक लोक दिस देखबे के करत? और 'साइमन' पेट फुल्ला सव, संभवतः कोनो वीमारी सँ पीड़ित। कुरूप मसिक सव? मुदा वेह जल्दी-जल्दी मुइल गोडूक पीठसँ खाल घीचि सकैत छथि, तखने तँ ओ तकर माँउसक पइकारी सेहो जनै छथि। हुनक असुन्दरता सँ सन्तोष कुमारी कें घिन लागै छन्हि—ओकरा दिस तकबो जोकर नहि।

रातुक नाच मे सात टा डमनी धांगड़ी एक दोसराक डांड़ पकड़ने, हाथ मे एक एक टा रूमाल चमकावैत, होः होः करैत, चित्कार करैत, कूदैत छथि। ओम्हर परजा जातिक धांगड़ी व्यूह भेदि अपने जातिक धांगड़ाक घेरि नाचै छथि। नाचि नाचि के दारू पीबैत नाच करैत करैत समय बहुत व्यतीत होइ छै आकाश धरि अन्हार पसरि जाइत छैक—राति गहरा जाइत छै।

ओम्हर जंगल क वात तँ लोक विसरि जाइत अछि। हँ, विसरि सकैत अछि

नन्दी गाँक हाटक जंगल कें जतऽ विभिन्न गाम क डम्ब जातिक लोक एक दोसरा सँ मिलै जुलै छथि, नमस्कार पाती करै छथि हाथसँ हाथ मिलबैत जल्दीसँ आगाँ बढ़ि जाइत छथि।

स्मृति मे झटका लागै छै। बड़का शहर मे बिताओल दू दिन क अनुभूति क स्मृति जागि जाइत छैक। धुआंइत स्मृति पटल पर देखा पड़ैत चाकर रस्ता–ताहि मे मोटरक पाछाँ कतेको मोटर जा रहल अछि। ट्रक मालवाही गाड़ी क भीतर भरल सिर्फ धांगड़ा–धांगड़ी। हँसी किलकारीक लहरि गाड़ीसँ निकलि बाहर पसरैत अछि। सबटा हँसी झाड़ि झूड़ि के, सङ्ग मे लऽके ओ चललाह–आसाम–हँ आसाम! एकर नामे मे मादकता छैक–एकदम विभिन्न स्थान–खाली नाम नाम अफसर माथ पर टोप, ओठ मे चुरूट आ हाथ मे बेंत पर भर दऽ के चलैत। और मौगी सबहिक देह पर रंग बिरंगक साड़ी और रंगीन ब्लाउज–तोता छापबला, तारा क छाप बला, बाघ क छाप बला। ओतुका हवा माथक केशक तेलक गंध और पीपा क पीपा शराब क गंध मे जी ओकबैत।

तैयो सन्तोष कुमारी क मोन पर उदासी पसरल रहतै अपन नन्दी गाँ हाटक जंगल छोड़ि के आसाम जाइत जाइत। ओतऽ केओ नहि जकरा ओ अपन कहि सकय। केओ नहि जकरा दिस देखाकय हँसिकय कहैक–वैह हमर अप्पन लोक।

मसिक–छिः धूः थूः–कते कुरूप जेना आधा चेहरा अलोपित होइ। लागै छै जेना गाइक चर्बी सँ ओकर देह चप चप करैत होइ और देह क चमड़ा महिष एहन मोट होइ।

सन्तोष कुमारी अपन छवि जल मे देखलक आँखि मे चमक छलै। ओ विद्रोह करैले चाहै छली। शहर मे अनुभूत, किछु दिन क स्मृति। ओकरा लागलै जेना ओकर चेतना धू धू कऽ धधकि रहल होइक। ओकरा लागलै जेना ओ अनन्त जंगल, दुर्गम पहाड़ और मसीकक कुरूप जी ओकबै बला भाव के उघने अपना सङ्ग लेने जाइत हो। कतेको साइमन और बेनियामनि कें लादने जा रहल हो। ओ असंतुष्ट छलि और ओकर आकांक्षा हजारों शिखा बाटे पजरि रहल छल। सन्तोष कुमारी अद्वितीय छली अपने सनक एक्के टा-अपनहि जे कतेको सारिआदान आओर कतेको सारिआ फूलसँ अलग छलै। ठेंगा जानी कें ओ सब सँ अलग और सदिखन नवीन लागै जेना जंगल पर खसैत रौदक रंग बदलैत रहै छै सर्वदा ताजा और विलक्षण।

अपन प्रथम मिलन क अवसर सँ सन्तोष कुमारी अपने मे डूबलि रहैत छलि। ओ अपन आत्म संयम नहि छोड़ि सकैछ। मुदा ठेंगा जानी जेना हेरायल भोतिआयल हो। ओकर छाती हमेशा धड़कैत, ओ कान पथने और ओकर आँखि चञ्चल भऽ के किछु तकैत। कखन ओ आओति? कोन बाटे आओति? अन्त मे सन्तोष कुमारी आयलि तँ किन्तु आबियो के नहि अयली। कखनो कखनो जखन ओ भेटथि ठेङ्गा कें देखि मुस्किआबथि। कोनो मोड़ पर जाइत काल भेट होइन्ह। बस ततबे। ओकर आगाँ किछु नहि।

ठेंगा राति भरि ओकरे सपना देखैत रहल। ओकरा धाङ्गड़ा बसा घर दिस जेवाक इच्छा नहि होइक। राति दिन ओ मात्र सन्तोष कुमारीक प्रतीक्षा करय।

ठेंगा क वास्ते असम्भवे छलै जे अपन मुँह खोलिके ओकरा किछु कहितै। ई अस्वाभाविक छल। ओ दुनू दू अलग जातिक छल। ओकर पिता क्रोधित हेतैक और ओकर माय स्तब्ध। अड़ोसी-पड़ोसी पंचायत जुटौतइ, आओर मुरगा और दारू क भोज मांगितैक।

सन्तोष कुमारीसँ भेट होयबाक बाद ठेंगा विचलित रहै छल। ओकरा शंका होई छलै झांखुर और लता गुल्मक झोंझरि क ओहि पारसँ जेना केओ ओकरा देखि लेने होइक। ओकरा भान होइ जे केओ उपयुक्त समय पर ओकर गुप्त भेद कें सबकें कहि देबाक प्रतीक्षा कऽ रहल होइक जेना। ओ एहि कारणें सशंकित रहे लागल। भीतर अन्तरतम मे भावना क लहरि लगातार ओकर हृदय कें प्रताड़ित कऽ रहल छलै। ओ भावना कें जते नुकबैले चाहैत छल से तते प्रकट भऽ जाइत छलै। ओकर मानसिक क्षितिज पर सन्तोष कुमारी क स्मृति सदिखन बनल रहलै। जतऽ ओ देखय ततऽ वैह प्रकट भऽ जाइक।

एते दिनक बाद ठेङ्गाक हृदय बहुतो क बीचसँ एक कें पसिन्द कऽ चुकल छल। और अन्य सब गोटे स्मृतिक धारक दुनू कात कतेको फुलायत फूलक पौधा एहन छलै।

सारिआदान अपन खोंइछ मे बान्हल बैर लऽ के ओकरा पर अपन नजरि खिरौतइ तँ ठेंगा जानी आब लाजसँ नहि पड़ायत। आब ओ सारिआदान क नजरि सँ नजरि मिलौतै। बैरक काँटेदार ठाढ़ि सँ फल तोड़ैत काल ओहो आब ओकर हंसी मजाक क जवाब देतै। ओकर चमकैत खोंपा के देखैत काल कखनो कखनो ओकर हृदय यदि बहकि जेतै तँ ओ अनियन्त्रित नहि होयत मुदा अपना कें सम्हारत। ओ

घर घुरैत काल रास्ता भरि सीटी मारैत घर आपस आओत। धांगरा वसा घर मे युवती सभक संगीतक उत्तर ओ र्.स भरल आवाज मे दैत छल। अपन सुरीला कंठसँ ओ गीतक उत्तर दैत छल मुदा, आव कखनो कखनो गीतक उत्तर दैत काल, जवावी गीत गावैत काल ओ अचानक अन्यमनस्क भऽ रूकि जाइत अछि। ओकरा आब सांझे नीन्द आबि जाइत छैक, किन्तु जखन अचानक मध्य रात्रि मे ओ जागैत अछि तँ बाहर दिस पसरल अन्हार के देखि थकित अनुभव कऽ के फेर सूति रहैत अछि—निसभेर सुतलाक बाद जखन जागैत अछि तँ सब केओ उठि गेल रहैत छैक।

कहिओ कहिओ ठेंगा दादी बूढा लग जा के माथ टेकैत अछि। तहिआ ओकरा बुझना जाइछ जे ओकर मोनक बोझ किछु हल्लुक भेल हो। ओ दादी बूढ़ाक खजूर क ठुट्ठ गाछ लग चुपचाप बैसल रहैये। चारू कात निस्तब्धता पसरल रहै छैक—एकान्त—चारू दिस गहन एकान्त।

❑❑

पाँच

एक दिन ठेंगा जानीक माय बाप मे झगड़ा भऽ गेलै। ओकर माय कहैक—हमरा एक्केटा बेटा अछि आब ओ जबान भऽ गेल अछि तों ओकर व्याह ले किछु नइ करै छह। तों ते ओते गरीबो नहि छह जे तोरा मांगि-चांगि के वधूक मूल्यक ओरिआन करय पड़तह।

ठेंगा क बाप जवाब देलकै—"की हम वधूक मूल्य चुकबै ले कहिओ मोल-तोल क बातो बजलहूँ अछि? ब्याह तँ तखने हेतैक जखन बेटा ब्याह करय चाहत, हम की करी?"

ठेङ्गाक माय—"तोरा बुझने की ओ तोरे एहन निर्लज्ज अछि? जेना तों हमरा जबरदस्ती घीचि कऽ लऽ आनलह आ विआह कयलह आब की सब गोटे ओहिना विआह करत? अपन समाज मे तँ ताहि दिन तहिना 'उडुलिआ' विआह होइत छलै।"

ठेङ्गाक पिता—"अगर सैह बात छैक तँ ओकर जतऽ इच्छा होइक ताहि ठाम ओकर बिआहक ओरियान आइये करऽ गे।"

ठेङ्गाक माय—"हँ, हमरा बुझले अछि, तोरा होइ छहु जे बधूक मूल्य पर तोरा वड्ड खरचा पड़तहु और ताहू सँ बेसी ई लागै छहु जे बेटाक बिआहक बाद राति मे खेतक ओगरबाही करैले खेत पर के जायत? तेकरे चिन्ता छहु ने? की ओकरा वास्ते एक्कोटा पतुरिआ बहुक ओरिआन करबा मे तोरा एते मुश्किल होइ छहु? ई सबटा बहाना छिऔक। हमरा बूझल अछि। मुदा, सोचह तें जे हम्मर ते ओ एक्केटा बेटा छी।"

राम मुदुलीक क्रोध बड्ड बेसी बढ़ि गेलैक। ओ जानै छल जे ठेङ्गाक माय जिद्दी अछि, मुदा जखन ओ अपन ब्याह पर ओकर व्यङ्ग्य सुनलक, ओकर क्रोध वश मे नहि रहलै। ठीके, ओ 'उडुलिया' व्याहे कयने छल। एहि रीति सँ व्याह कयला पर, लड़कीक सहमति भेटला पर, लड़का ओकरा भगाय के अपन घर लऽ आनै छैक।

ओ चित्कार नहि करय ताहि दुआरे ओकर मुँह एक कपड़ा सँ झाँपि देल जाय छै। वर होमऽ बला वधू कें अपना घर आनैत अछि और किछु गोटे कें छोट छीन भोज भात कऽ दै छै। कोनो पैघ आडम्बर नहि, कोनो गीत-नाद नहि, कोनो ढोल-डम्फा नहि कोनो शामियाना-मड़बा नहि, ओहि प्रकारक कोनो वस्तु नहि। लड़की क पिता अपन बेटी कें ताकैत-ताकैत अन्त में ओही ठाँ पहुँचै छै, पंचायत जुटै छैक और ताहि मे थोड़-बहुत खर्च पर वधू-मूल्य निर्धारित कयल जाइछ। ओकर सबहिक 'उडुलिआ' विवाह एहिना होइ छलै। गरीब लोकक बीच, जे बहुत बेसी खर्च नहि कऽ सकैछ, साधारणतः इएह विधि प्रचलित छलैक। ओकर विआह क तँ बहुतो दिन बीत गेल छलैक मुदा ओकर पत्नी कें ताहि बातक क्षोभ आइ धरि छलैहे। ओ कहिओ ने बिसरल, जे ओकर विआह 'उडुलिया' विधि सँ भेल छलै। जखन कखनो ओकरा अपन पति पर चोट करबाक होइक अथवा अपन बात सँ उपर भऽ के ओकरा चुप करबाक होइक तँ ओ ई प्रसङ्ग उठा देत छली।

भोर मे राम मुदुली उपासले, बिना किछु जलखइ कयने खेत पर चलि गेल। परजा जातिक लोकक दुपहरक भोजनक साधारण समय बीति गेल छलैक, ओ तइओ खेत सँ नहि घुरल। ओ चासक वास्ते एक टिक्कर भूमि कें कोड़ै—बनबै मे व्यस्त रहल।

ओ माटि कें कोड़ै-वनबैत काल अपन पित्तक (क्रोध) विषय कें एक दम बिसरि गेल। ओकरा मोन मे एक्केटा उद्देश्य छलैक जे खेतक बीच मे छोट सन बान्ह बना दैक जतऽ पानि पड़लासँ नव माटि जमा होइत रहै और वाद मे ओतऽ ओ उपजा कऽ एकय। ओ विचारलक जे अगिला साल छाती भरि जजात एहि मे उपजा होयत। ओ मोने-मोन इहो जोड़ि लेलक जे कते घैल 'रन्धा' दारू मजूरा सब कें दैले ओकरा चाही, ओकरा सब कें मजूरी मे पाइ सँ बेसी दारूए पसिन्द होइ छै। ओकर मोन के इएह विचार घेरने रहै जे बान्ह कते चौड़ा होइक, खेत कतेटा हेतैक? बान्हक दुनू दिस बथुआ पालक और जड़वैले झांखुर उपजतै। कोदारि चलबैत काल पहिलुक रोपल मुट्ठी भरि काँच अल्हुआ कच्च सँ कटा जाय छलै। ओ बिचारलक काँच अल्हुआ बड़ मिट्ठ होइ छैक, किछु घर लेने चली। ओकर पत्नी मडुआ सङ्ग स्वादिष्ट भोजन बनाओत।

प्रचण्ड रौद मे लोक जतबे बेसी श्रम करैछ, ओतबे बेसी भूख लागै छै और

जतबे बेसी भूख लागल रहै छै ओतबे बेसी क्रोध सेहो। राम मुदुलीक बुढ़िआ कें ई बुझबा जोकर नहि भेलै। बेटाक बाप हाथ पर हाथ धेने ई सोचिकय बैसल अछि जे एक दिन ओकर बेटा 'उडुलिया' विधि सँ व्याहि कें घर मे बधू आनत।

एकटा गाछक छाहरि मे बैसल राम मुदुली झझाइत पातक बीच, बहैत पानि क कल कल ध्वनि सुनैत रहल। एक सुक्खल ठाढ़ि कें हाथसँ रगड़िकय ओ एक लकड़ी पर राखलक और एक कात मे आगि धरौलक, ओ बीड़ी पीबय लागल। भोरक घटना ओकरा जतबहि स्मरण होइक ततबहि कसिके ओ 'पिंका' (बीड़ी) पर सोंट मारैत रहल। ओ बिचारलक जे बुढ़िआ कें चुप करै के एक्के रस्ता छैक जे जते जल्दी होइक ठेङ्गाक ब्याह ठीक कऽ दैक। ओ बिचारलक जे बधूक मूल्य साठि सँ अस्सी टाका तक देतै और भोज-भात मे ओकरा उपरसँ और साठि टाका धरि लागि जइतैक।

आबो राम मुदुली अपना घर नहि जाय एलिओ क घर दिस चलल। एलिओ डम जातिक छल, मुदा ओ बेसी चड़फड़ छल। ओ बहुतो देश-कोस देखने छल, ओकरा अंगरेज साहेब सङ्ग और कोट कचहरी मे कोना बर्ताव करी तकरो अनुभव छलै। ओ बूढ़ छल, राम मुदुलीसँ बेसी उमिरक। कोनो सबाल कें ध्यान सँ सुनला क बाद और तजबीज कयला क बादे बड़े गौड़ कऽ के समझि बूझि के ओ अपन विचार राखैत छल। कतेको बेर गम्भीर मामिला मे गामक मुखिआ राम मुदुली गुप्त रूप सँ ओकर सलाह लैत छल।

सभक सोंझा मे तँ ओ ओकरासँ असहमति प्रकट करै छल और ओकर बात पर हँसि दै छलै, मुदा अन्त मे ओ एलिओए क विचार कें घुमा फिरा के ठीक मानि लैत छल।

रस्ता भरि राम मुदुली विचारैत रहल जे ओकर पत्नी कतै चकित हेतैक जखन ओकर निर्णय कें सुनत। एकर बाद ओ फेरो कहिओ अपन मुँह खोलबाक साहस नहि करत। बुढ़िआ कंजूस होयबाक लांछना लगा के हमेशा हँसी उड़बैत छलै, ओ अपने—'उडुलिआ' विधिसँ विवाह करबाक बात कहि के ओकर उपहास करैत छलै, जेना कि सचमुचे मे ओ कंजूस छल हो। जेना कि ओ स्वयं एहि प्रकार के विवाह करैले चाहिते ने छली? ठेङ्गाक माय आब देखतै जे ओ गामक मुखिया छल, अपन बेटाक ब्याह पर ओते खर्च कऽ सकैत अछि जे दस विवाह मे खर्च होइतै।

एलिओ ओसारा पर बैसल छल और ओसूल कयल गेल लगानक हिसाव लिखैत छल। ओ प्रत्येक हर पर चारि आना क हिसाब सँ प्रत्येक ईसाई किसानसँ ओसूल करै छल और पादरी कें से पाई दऽ दै छल जे मिशनरीक कार्य क हेतु जमा कऽ देल जाय। अंगरेज साहेब ओहि पैसा कें खर्च करैत छल। ओही सँ गिरिजा घर चुनौठल जाइत छल, त्योहारक आयोजन होइत छल और स्कूल तँ चलिते छलै। एते कम पाइ सँ ई सब करब संभव छलै। तखन हँ, एहि पाइसँ किछु मदति तँ भइये जाइत छलैक। एते तँ कोनो भक्त ईसाई कें देबेक चाही छल। लगे मे अलइबेरिआ क बेटी संतोष कुमारी माटिक डाबा मे बासि मड़ुआक झोड़ सुगर के खुआबै छलि। राम मुदुली जखन ओतऽ पहुँचल तँ दुपहर बितैत छलै। ओ एलिओ कें देखिते कहलकै—"भाइ, हम अपन बेटा ठेङ्गाक ब्याह करै ले चाहै छी।"

एलिओ कहलकै—"साँचे! बड़ बेस। की तों दुलहिन ताकि लेने छह?"

मुखिआ चकित भऽ गेल। ठीके तँ ओ कते बुड़बक अछि? रस्ता भरि ओ दुलहिनक मूल्य और ब्याहक ओरिआन पर तँ बिचारलक किन्तु दुलहिन क चुनाव पर तँ विचारे ने केलक। मुदा तखने सारिआदान ओकरा मोन पड़लैक। दोसरे क्षण ओकर नाम लेबामे ओकरा किछु धाख भेलैक। कियैक तँ ओ आखिर अपने गाम क लड़की छलै। प्रगट रूपसँ ओ एलिओ के कहलकै—"तोंही ताकि दैह ने?"

एलिओ—"ठेंगा वास्ते हम कियैक वधू ताकी? ओ अपने कियैक ने ताकि लैत अछि?"

मुखिआ—"हम आओर कते विलम्ब करबै?"

एलिओ—"अच्छा भाइ तोरा वास्ते के दुलहिन ताकने छलहु?"

एहि पर दुनू गोटे हँसय लागल। किछु दूर पर बैसल संतोष कुमारी सेहो हँसय लागलि।

मुखिआ कहिते गेलै—"नहि भाइ, तोरा नहि बूझल छह? आइ हमरा ठेङ्गाक माय कते फज्झति कयलक अछि?" तखन भोर मे जे भेल छलै से सबटा घटना ओ कहि सुनेलकै।

एलिओ फेरो हँसलैक। अन्त मे ओ पुछलकै—"सारिआ दान?"

मुखिआ गम्भीर चेहरा बनाके बाजल—"हँ, ओ तँ छैके मुदा तोरा नजरि मे की आनो नीक लड़की छह?"

एलिओ—"अपन गाम कें छोड़ि कें अनगँउआँ लड़की के कियैक ताकै ले जेवह?" कने काल क बाद ओ कहलकै—"ठीके, एहि पर फेरो विचार करब।"

दूरेसँ सन्तोष कुमारी चकित भऽ के आँखि फाड़ि के सुनलक। सुगर सभ अपन अपन थुथुन आगू बढ़ा कय नादसँ खाइत छल और सुगरक बच्चा ओतय धरि नहि पहुँचि सकैत छलै। संतोष कुमारीक ध्यान एहि पर नहि छलै।

मुखिआ तखन जोतिखी दिशारीक घर पर गेल। अपन घरबाली क बात सँ आइ ओकरा बहु चोट लागल छलैक। आइ ओ एकर फैसला कइये लेत, तखन घर घुरत। दिशारीक ओहिठाँ पहुँचि के ओ ओकरा कहलकै—"ठेङ्गाक आब व्याह करबै।"

दिशारी—"अवस्से करह, मुखिआ, अवस्से।"

मुखिआ—"से तँ तखने हेतै, जखन तों कोनो नीक दिन ताकि देबहक?"

दिशारी—"हँ, से हम अवश्ये ताकि देबह। आइ तक हम तोरा नहिं तँ नहियें कहलियह ये। ओकर उचित समय आबय दहक। एखन माघ चढ़ल छैक। आब माघ और फागुन के बीतय दहक। परजा जाति मे चैत आबै तक तँ विआह नहि भऽ सकै छैक। चैत आवय दहक तखन आबिहऽ। हम गुरूमाई और पंचाङ्गसँ बूझि के तोरा तारीख निश्चित कऽ देबह। ताबत् जाह आओर ओरिआन करह गेऽ, मडुआ आ धान जमा केनाय शुरू कऽ दैह।"

मुखिया—"से सब तँ समय पर हेबे करतैक। पहिने दुलहिन ताकह दिशारी, दुलहिन?"

"दुलहिन?" दिशारी कें छगुनता लागलै—"ऐं हौ, तोहर बेटा क दुलहिन ताकैवला हम के? तोहर बेटा अपना वास्ते अपन दुलहिन अपने ताकि लेत। हम ते खाली शुभ मुहुर्त्त ताकि देबऽ। तों बिआह करबा दिहक तखन हम ब्याहक भोज खाइले पहुँचबऽ। उत्सव मे, नाच मे और दारू पीबै बेर हम जुटबह। दादी बूढ़ा लग हम बर और बधूक वास्ते प्रार्थना कऽ देबऽ और हम कइये की सकै छीअह? तोहर वेटाक वास्ते हम कोना दुलहिन ताकि दीअऽ?"

बूढा दिशारी क मति भासल छलैक। धांगड़ा और धांगड़ीक बीचक सम्बन्ध मे ओकरा किछु नहि करबाक छलैक। ओकर तँ काज छलै बधुक सौभाग्यवती होयबा ले पूजा कऽ देब, बरक दीर्घायु के आशीर्वाद हेतु प्रार्थना कऽ देब। भगवान क पूजा कऽ देब।

मुखिआक वातसँ ओ कने चकित भेल। ओ साधारणतः गम्भीर रहैत छल। वहुत वेसी नहि बाजै छल ओकर मूक भगवान ओकरा मूक, वना देने छलैक मुदा कोनो आनक बेटाक वास्ते बहु ताकि देवाक विचार सैह ओकरा अनसोहांत लागलै। वन्य (पहाड़ी) जातिक लोकक बीच युवा वर्ग अपन बहु, अपने ताकि लैत अछि, दोसर गोटे नहि ताकि दै छै, एहन बात सुनलो नहि जाइछ।

दिशारी के भेलै कहीं मुखिआ ओकरा सँ हँसी-ठट्ठा तँ नहि कऽ रहल छैक? ओकरा हँसी-ठट्ठा पसन्द नहि छलैक। ओ सदिखन अपन काज मे मगन रहैत छल। हँसी-मजाक करब बहुत पहिनहि तकरीबन चालीस-पचास साल पहिनहि छोड़ि चुकल छल। अपन दरिद्रताक कारण ओ अपन बधुक मूल्य नहि ओरिआ सकल छल...की तँ मात्र चालीस टाका खातिर...और ताहि दुआरे अपन ससुरक घर मे ओकरा चारि साल धरि बेगारी खटय पड़ल छलै। ओकर पत्नी क नाम छलैक मङ्गली। साल मे तीन सौ पैंसठो दिन एक दोसरा सँ भेंट भेलो पर एक दोसराक चेहरा ओ एहि चारि साल धरि नहि देखि सकै छल—सैह रेवाज छलैक। ओहि जमाना मे एहि रेवाज कें पक्का मनाओल जाइत छलै, तखनहि मनुख कें अपन प्रतिष्ठाक भान होइत छलै और अपन शारीरिक बल पर गर्व सेहो।

तखन ओकरा जीवन मे कमली अयलैक। किन्तु पाँचे सालक हेतु कारण ओ तीन सालक बेटा झलिआ कें छोड़ि ज्वर सँ तड़पैत मरि गेलि।

ओहिदिनसँ बूढ़ा दिशारी कें केओ हँसैत नहि देखलक। ओ अपन मोट भौंह क नीचा तेज नजरि सँ मुखिआ कें देखैत कहलकै—"भाय, तोहर बेटाक खातिर हम कोना दुलहिन ताकि दिअह?"

मुखिआ कहलकै—"तोहर जे इच्छा। मुदा शुभमुहुर्त मे ओकर विआह क दिन ताकिहऽ।"

दिशारी—"घर जा कय अपन बेटा सँ पुछिहह ओकर जेकरा सँ इच्छा होइक, तेकरे सँ विआह कऽ दहक।"

मुखिआ—"ओतँ इएह कहत, हम की जानी? तोरा जतऽ ईच्छा होअह तेकरे सँ हमर ब्याह ठीक कऽ सकै छह।"

गम्भीर होइत दिशारी कहलकै—"पहिने ओकरा पूछि लैह।"

मुखिआ विचारलक जैं कि ओ एक उद्देश्य लऽ के आयल छल ओकरा अपन बेटा क विवाह ठीके कऽ लेबाक छलै। ओ ककरो ने ककरो सँ ओकर विवाह ठीक कऽ लेतै, इएह विचार ओकर मोन मे घुरिआइत छलै।

ओ दादी बूढ़ा लग जेबाक रस्ता पकड़लक। ओतऽ पहुँचि ओ जमीन पर खसि पड़ल और कहलकै—"हौ दादी बूढ़ा, हमरा बेटाक खातिर बहु ताकि दैह। ओकर व्याह ठीक कऽ दहक।"

पहाड़ी क नीचा मे लोकक खोपड़ी सब छलैक। ओहि प्रचण्ड रौद मे प्रत्येक वस्तु निर्जीव बुझना जाइत छल। दादी बूढ़ा लग साष्टांग लोटायल गामक मुखिआ रामचन्द्र मुदुलि कें शान्ति भेटलैक।

मुखिआ दादी बूढ़ा कें गोहरौलक। मोन हल्लुक बुझना गेलैक ओ घर घुरल, लेकिन कोनो निर्णय पर ओ नहि पहुँचल छल। ओ ई निर्णय नहि कऽ सकल जे ओकर पुतहु के हेतैक? ओ जखन ठेंगा कें पुछलकै तँ ओकरा वैह उत्तर भेटलै जे ओकरा की मालूम? या ते ठेंगा अपन पिता सँ बात नहि करै चाहै छल जे ओकर मोन मे के छलै, या ओ एकर निर्णये ने कयने छल। बूढा क मोन मे तँ सारिआ दान सैह ठेकैत छलै, मुदा ओ किछु दोसरो लड़की क बारे मे सोचि के तखने कोनो निर्णय लितय।

हरी जानी वधुक मूल्य हेतु बहुत अधिक टाका क मांग करितै और सारिआदान तँ अपन गामे क छलै। इहो आशा छलै जे आनठाम ओकरा और नीक और सुन्दर बधु भेटितैक।

ओहि दिन मुखिया एक नया घर वनेनाय शुरू केलक जतऽ ठेंगा जानी अपन व्याहुल पत्नी संग रहितै। मुदा दुलहिन भेटब एखनो बाँकी छलै।

ई बात गाम मे लुत्ती जेकाँ पसरि गेलै जे मुखिआ अपन बेटा ले दुलहिन ताकि रहल अछि। दादी बूढ़ा लग पाड़ा और पड़बाक बलि देल गेल। ढाकीक ढाकी फूल हुनका पयर पर चढ़ाओल गेल। दादी बूढ़ा कें हरी जानी एकटा नबका पगड़ी चढौलकै।

लोक सबटा जनै छल मुदा ककरो किछु कहबाक साधंस नहि भेलैक।

❑❑

ठेंगा जानी दुविधा मे पड़ल छल।

जे केओ सन्तोष कुमारी कें एक बेरि देखिलैक से ओकरा और देखय चाहैत छल। ओकर ईच्छा पूर्ण नहि होइत छलैक। ओ लोक कें एकदम संतुष्ट कऽ दैत छली तबो ओ पिआसले रहैत छल।

सन्तोष कुमारी सदिखन तरो-ताजा बनल रहैत छल। ओ ठेंगा क निकट आव कखनो नहि आबैत छल। दूरेसँ ओकरा देखि लैत छल। जखन ओ ओकरा सँ मिलैत छल तँ ओ ओकरा दिस देखि के, हँसि के आगाँ बढ़ि जाइत छलीह। और ठेंगाक हृदय मे एक पीड़ा, एक कचोट रहि जाइ छलै। कोनो ने कोनो बहानासँ ठेंगा ओकरा पाबैले दौड़ैत छल मुदा ओकरा धरि पहुँचै मे असफल रहै छल।

धांगरा बसा घर मे जखन ठेंगाक दोस्त सभ ओकर आसन्न विवाह लऽ के ओकरा सँ हँसी करै छल तँ ओकरा लागै छलै जे ओ सब ओकर हृदय मे जेना शूल वेंधि देने होइक। बसाघर मे ओकरा बहुत गरम लागै छलै, ओकरा लागै छलै जे धांगरी बसा घर क गीत भरमाबै छलै। ओ कतेको बेरि धांगरा नाच घर क भीतर जाइत छल और बाहर आबैत छल। ओकर मोन मानवे ने करै छलै।

कखनो ओकरा लागै जे ओ सन्तोष कुमारी कें विसरि जाइते ते नीक होइतै, मुदा नदीक घाटसँ जाइत काल ओकर पयर गतिहीन भऽ जाइत छलै। जेना ओकरा मोनक भीतर किछु पैसि जाय और ओ कने काल ओतय रुकि जाइत छल। ओकरा संतोष कुमारी भेटि जाइत छलै। ओ ओकरा सँ नहि बाजै छलै, खाली हँसि दैत छलै, पीठ घुमा के चलि जाइत छलै।

एक उदास इजोरिआ राति मे ठेंगा जानी धांगरा बसाघरक आगू एक पैघ पाथर पर बैसल छल। ओकरा पाछाँ एक पैघ बड़क गाछ छलै। ओकर आगाँ ढलुआ जमीन छलै। तलहटीक छोट छोट घर ओकर दृष्टि पथ सँ दूर छलै। खाली पातर एक पेड़िआ देखा पड़ैत छलै। दहिना दिस तीन या चारि घर छलैक। बाम

दिस किछु घर क छत देखा पड़ैत छलै। तेकर उपर घाटी, किछु वृक्ष एम्हर ओम्हर और मुरान नदी क कात किछु झाड़ी देखाय पड़ैत छलैक। ओहि पाथर पर बैसल, नीचा मे सुन्दर खेत दृष्टि गोचर होइत छलैक। खेतक पार लुल्ला गामक गोल गोल पहाड़ छलै।

गहींर घाटी मे चान्दनी क समुद्र कुहेस भरल राति मे बनैत छल। इजोरिआ क प्रकाशक लहरि पर अनन्त छोट और पैघ छाया भासैत छलैक।

पहाड़ीक उपर पूर्ण चन्द्र लटकल छलैक। गोल, स्वच्छ और ठहाका मारैत पूर्ण चन्द्र।

ठेंगा असकरे बैसल छल। ओकर चारू दिस शान्ति व्याप्त छलै मात्र धांगरा वसा घर सँ फोंफ काटैक आवाज आबै छल जे चिड़ैक किलोल एहन बुझना जाइत छल। गामक चौवटिआ पर बहुतो पाथर छिड़िआयल छल। किछु नामा नामी, किछु सपाट जमीन मे आधा गड़ल। लागै छल मुइल लोकक पीड़ी गाछ सभक छाँह मे निसभेर सूतल होइक।

केओ जागल नहि छल। सब किछु निस्तब्ध। ठेंगा जानी घाटी क सामने बैसल छल। ओकर मोन विचार सँ भरल छलै। एकटा पुरान लाठी ओकरा जाँघ पर राखल। मोन मे चंचल विचार धारा पैसल ओ खाली हृदय क संगीत कें सुनि रहल छल।

ओ सम्मोहित करैवला राति छलै। एहि चौबटिया (बेरामन) पर कतेको गोटे नाचि चुकल छथि, जिनक पैरक गरदा एक दोसरासँ मिज्झड़ भऽगेल छैक, किन्तु तैं कि हुनक हृदयो एकाकार भऽ सकलैन्ह की? कतेको लोक बस्त्रहीन, अर्द्धनग्न, खाली मांड़ पर जीवन गुदस्त करैत, राति दिन परिश्रम करैत जाड़क ठाड़ और विकराल मौसम कें सहैत, एहि संसार सँ चलि गेल छलाह। ओ सभ केओ अपन इतिवृत्त नहि लिखलनि। ई ठाढ़ और पड़ल पाथर हुनक स्मृति क अवशेष रहि गेल अछि। कतेको हृदय क कथा विना कहल अवशेष छैक। कतेको हृदयक अन्तस्तल मे छिपाओल आकांक्षा शरीर क भीतरे रहि गेल छलै अन्तिम समय धरि। कखनो दू हृदय एक दोसराक चिन्है मे असफल रहल और गोधियाँ ताकै मे बौआइत रहल, जे ओकरा कतहु न राखलकै। ग्रीष्मक 'लू' प्रवाह, भदबारिक भीषण वर्षा, झाँट और विहाड़िक उत्पात के वनवासीक हाड़-काठ मुइलासँ पूर्व सब किछु सहि चुकल छैक, खाली पाछाँ रहि गेल छैक नोकगर ठाढ़ किंवा सूतल सपाट पाथर।

आइ एहि गाम क एकान्त एकपेड़िआ पर मृतात्मा सभ एक अन्तिम मंजिल धरि तँ पहुँचिये गेल छथि—एक दोसरासँ निकट पड़ल एहि पाथर क रूप मे। आइ ओ मूक छथि, ईर्ष्या हीन, विना कोनो पीड़ाक, विना कोनो शिकायत, उलहन, उपराग के।

जीवित प्राणी क बीच जे हृदयक मिलन एहि समय नहि भऽ सकलै से मृत्यु क उपरान्त भेलै। आइ जखन हुनक हृदय मे कोनो धड़कन नहि, हुनक स्नायु मे कोनो चेतना नहि, हुनक आँखि मे कोनो दृष्टि नहि सब किछु गतिहीन और शान्त भऽ गेल अछि ई पाथर सब अतिनिकट भऽ गेल छथि। ई दुनियाँ धोबीक घाट एहन अछि जतऽ प्रतिदिन कपड़ा सब धोअल जाइछ, ओतऽ आजुक नूआ काल्हि नहि रहै छै। हृदयक मैल और गरदा धोअल पखारल जाइछ। हम सब एहि दुनियाँ मे ओही कपड़ा जेकाँ धोबीक घाट पर आनल जाइत छी। हम सब एतऽ आबै छी पटकाबैले, पछाड़े ले, पखारै ले खंघारि के धोआबैले। एतऽ आबै छी और ई सब सहि के चलि जाइ छी।

परजा जातिक पूर्वज क स्मृति मे राखल नोकगर और सपाट पाथर सभ एहि शान्त कल्लोल हीन रात्रि मे ठेंगाक आँखि मे छाया-दृश्य एहन बुझना गेलै, एना लागलै जे ओ पूर्वज सब हाथ पकड़ि के गाबि रहल होथि।

सुनह सुनह हौ भाई
सै दिन मे आयल अछि आजुक दिन
बारह मास मे ई आजुक मास
आइयो हम सभ केओ संगे छी
पुरान पुरखा क रूप मे
एहि विशाल संसार मे
हम सब संगे छी
जेना धोबिआ क घाट मे
एहि चान्दनी राति मे

छाँह बड़ विस्मयकारी छलैक और ठेंगा जानी कें अचम्भित केलकै। सोंटगर देह धूआ बला लोक क छाँह, गरदनि मे हार और कतेको औंठी पहिरने, मुसुकिआइत अपने पूर्व पुरखा सँ भेंट करैत, देखैत लागलै ठेंगा जानी कें। हुनक चमकैत आँखि, चेहरा, माथ पर केस मे बान्हल गीरह सबटा चमकै छलै। हुनक गीत ओकरा सुनाय पड़लै जेना—

हमर माय हमरा पोसलक
हमर बाप हमरा पोसलक
आब हम सिआन भेलहुँ
नवयुवा-नवयुवती भेलहुँ
तखन हम चुप किये रही? किये़क?
आबह हाथ सँ डांड़ के लपेटि
खेली, पीबी और नाची
नाचि के राग-रंग मनाबी।

पूर्व पुरखाक छाया विलीन भऽ गेलै। पूर्व पुरखा अपन स्त्रीक आत्मा संग डुंग डुंगा क आवाज पर आयल छल–ई कहैत–आबह हे प्रिय आबह।

जीवित प्राणी क आकार प्रस्तर मे परिवर्तित भऽ गेल छलै। गीतक लय, रातुक अंधकार और चाँद सभटा मिज्झर भऽ गेल छलैक। प्रतिदिन संध्या मे जखन ओहि पहाड़ी सभ पर अंधकार उतरै छलै, ओ प्रस्तर सभ जीवन्त भऽ जाइत छल। ओ लोक सब बहुतो पहिने एहि संसार कें छोड़ि के चलि गेल छलाह। मुदा हुनक आवाज प्रेमसँ कम्पित भऽ के आइओ ओतऽ छलै। शाश्वत पुरान पुरूखक प्रेम सँ वोरल स्वर लहरी मे, रातुक मधुर हवाक झोंका मे घनगर जंगलक नाम नाम गाछ और मड़ुआ आ जोआरक खेतक उपर पसरि रहल छलै।

ठेंगा जानीक नीन्द खुजलै तँ ओ अपना कें असकरे बैसल पओलक। ओकर शरीर ओससँ भीज गेल छलैक। पुरखाक स्मृति मे बैसाओल पाथर चारू दिस पसरल छलैक। ओ अंगैठी मोड़ लेलक और ठाढ़ भऽ के जाइते रहय कि निर्जन रस्ता पर एकसर एक लड़की के साड़ी सर-सरबैत एते राति मे अपना दिस आबैत देखलकै। ई के भऽ सकैछ? की ई कोनो ककरो डूमा (प्रेत) तँ नहि? ठेंगा किछु भयभीत भेल। ओ सुनने छल जे एहन राति मे डूमा (प्रेत) सभ और तकर पाछाँ बाघ गाम मे आबैत छैक। ओ अखियासलक–ई डूमा भऽ सकैछ की? किन्तु से तँ सात आठ बरिस क, लाल ठोर बला, चंदैल माथ बला, पीअर आँखि बला रूप मे प्रकटित होइछ। नः, ई मुइल आत्मा नहि भऽ सकैछ। तखन ई के थिक?

ठेंगा क हृदय भयभीत होइत रहलैक। किछु काल पूर्व जे ओहि पूर्व पुरखा सभहिक गीत गबैत दृश्यक अनुभव कयने छल से ओकरा डरबैत रहलै। ओ अपना भरि अपना कें मजबूत केलक। अपन लाठी जोर सँ पकड़ि पएर पर ठाढ़ भेल।

ओ आकृति ओकर और लग अयलैक। दूरे सँ ओ एक पातर ध्वनि सुनलक–"की तों डरि गेलह?" ठेंगा ओकरा लग आवि, ओकरा पहचानि के फुसफुसायल–"एहि कुसमय मे तों एतय कोना अयलह, सन्तोष कुमारी?"

–"हम तँ एतय पहिनहुँ कतेको राति आयल छी, ई हमरा वास्ते कोनो नवीन नहि। हमर सभहिक घर एतऽ सँ अछिए कतेक दूर? ओएह ओहि मोड़ क आगाँ। कखनो कखनो हमरा एतऽ आबैके इच्छा होइत अछि। हम सोचलहुँ जा के देखै छी ठेंगा की करैत अछि? मुदा तोरा ओहि सँ की? सोचलहुँ धांगरा बसा घर सँ ओकर फोंफ काटैक आवाज हम सुनब और घुरि जायब।" कम्पित स्वर मे ठेंगा कहलकै एतऽ आबह। हम सभ गप्प करी।

सन्तोष कुमारी–"नहि केओ जागि जेतैक। आबह हम सब सड़क क नीचा चली, हम देखने छियैक, ओतऽ सुनसान छैक।"

विना किछु और कहने सन्तोष कुमारी जाहि रस्ता सँ आयल छलि ताहि सँ नीचा जाय लागलि। ठेंगा ओकरा पाछाँ पाछाँ चलल। रातुक निस्तब्धता मे ओ दुनू ओहि पिच्छड़ रस्ता मे चलैत रहला।

किछु समय उपरान्त जखन दक्षिण दिस आकाश क एकसर तारा नीचा और नीचा डुबैत गेल ठेंगा सन्तोष कुमारी कें पुछलकै–"आइ आब एतबहि। काल्हि फेरो?"

सन्तोष कुमारी खिलखिलाइत कहलकै–"बेस, अपना सब एहीठाम आयब और गप्प करब।"

तकर बाद ओ दुनू अलग रस्तासँ चलि गेलाह।

❑❑

सात

मुखिया अपन बेटा ले नवीन घर बनबै छल। बाँस काटल जा रहल छल, कादोक गिलावा दीवार पर लेपैले तैयार कयल जाइत छल। बहुतो मजूरा काम पर लगाओल गेल छल। प्रत्येक मजूरा कें एक सेर मडुआ आ थोड़े 'रान्धा' दारू पर राखल गेल छल। मुखियः ठेंगा कें कहने छलैक जे ओहिठाम बैसिकें मजूरा सबसँ काज कराबे। किछु मजूरा लऽ के ओ अपने चासक वास्ते जमीन तैयार करबाक हेतु नीचा खेत पर गेल।

कखनो कखनो मुखिआ सोचय एहि दुनिया मे ओकरा एहन खुशनशीब केओ नहि अछि।

बचपन मे ओ घोर गरीवी देखने छल। कमे उमिर मे ओकर माय-बाप मरि गेल छलाह। ओ सियान भेल। जमीनक एक टुकड़ी भरना पर लेलक आ ओहि पर काज करय लागल। कठिन परिश्रमसँ ओ अपन घर बनौलक और धान और मडुआ सँ अपन घर भरि लेलक। किछुए समय मे ओ अपन जमीन, गाय—माल कऽ लेलक। ओ अपन प्रयाससँ अपन खेतसँ सोना उगबैत छल।

राम मुदुली मुखिया धान और अस्थापात बढ़ाय कें दोसरासँ आगू बढ़ि गेल। ओकर दादा हरी मुखिआ छल से तावत मरि गेल छल जखन राम मुदुलीक जन्म भेलैक। चेतन भेला पर राजाक अमीन राम मुदुली कें मुखिआ बनौलकै। तहिये सँ ओ अपन सन्तुष्ट और सुखी जीवन बितवैत छल।

राम मुदुली कें बेटी नहि छलैक। बेटी भेला सँ ओकरो बधू मूल्य भेटितैक, लेकिन तेकर ओकरा कोनो चिन्ता नहि छलैक। ओकर बेटा ठेंगा छलैक जे बूढ़ भेला पर ओकर सहारा और उत्तराधिकारी हेतैक।

बचपने सँ ठेंगा जानी कें नीक गुण सभक आदति बनल छलै। ओ परिश्रमी छल और अपन पिता जेकाँ शिष्ट छल। जखन ओ आठ सालक भेल ओ अपन पिताक गाय चरावे लागल। बारहम साल मे ठेंगा खेत मे काज करय लागल। पनरहमा चढ़ैत चढ़ैत ओ अपन बापक आधा जिम्मेवारी अपन कन्हा पर लऽ

लेलक। ओ खेत मे मजूरा सङ्गे जाइत छल। जंगलसँ गाय गोडू कें ताकि अनै छल और अन्हड़-बरखा मे भीजैत एक एक टा कें गोठुला घर मे ढुकबैत छल। ठेंगा बड़ नीक बेटा छल। अपन बाप क उन्नतिक हेतु जे मशीन जेकाँ काज करैत हो। ओकर विआहक हेतु कन्याक विषय मे जखन ओकर पिता ओकर विचार पुछलकै, तँ ओ जवाब देलकै—तों हमरासँ कियैक पुछैत छह? तो जे कहबह सैह हमर विचार।

मुखिआ नव घर बनबै छल जाहि मे ओकर बेटा ब्याह कऽ के रहितैक। खेत कें मजूर क हाथ मे छोड़ि कें ओ नव बनैत मकानक हेतु वस्तु जात जुटबै मे लागि जाइत छल। ओ नव मकान क आगाँ पड़ल चट्टान पर बैसि जाइत छल और घरहट क काज पर ताकिद राखैत छल। कखनो कखनो ओ अपने भीड़ि जाइत छल। ओ बाँस चीड़ि बत्ती वना लै छल, गिलाबा अपनो उठा लैत छल और कखनो काम पर निगरानी राखैत बैसि कें पिंका (बीड़ी-चुरूट) पीवैत रहैत छल।

❑❑

कड़कड़ौआ 'लू' चलैत रौद मे ईसाइ मिशनक लोक कारी 'लबादा' पहिरि एक गाम सँ दोसर गाम मे घुमैत ईसाइ धर्म क प्रवचन और प्रचार करैत छथि। प्रचुर पसेना वहबै छथि। एक गामसँ दोसर गाम जेबा मे हुनकर पयर मे छाला (फोका) पड़ि जाय छनि। जखन केओ हुनका भेंटै छनि ओ अपन धर्मक बातक शिक्षा दैत छथि। जेना सर्व शक्तिमान भगवान पर विश्वास करू, जे अपन प्रिय पुत्र कें पृथ्वी पर पापक निर्मूल करबाक हेतु पठौलनि, मात्र ओहि भगवान पर विश्वास करू। एहि मिशनक लोक सब कष्ट काटि गरमी और बरसातक कष्ट कें आनन्द मे बदलि घुमै छथि गामे गाम। अन्यथा ओ दरमाहा नहि पओताह सैह साहेब (पादरी) कहने छलनि।

पिण्डपड़ार गाम मे 'सोलोमन' नामक पादरी एहि क्षेत्रक जनताक बीच धर्मक प्रचार हेतु प्रवचन देबाक हेतु घुमिते रहैत छथि। हुनक चमकैत भाल अपन धर्म मे दृढ़ विश्वास कें दर्शित करबै छल। दादी बूढ़ाक कानो मे विदेशी धर्मक प्रवचन पड़ल छल। 'हुंका बूढ़ा' सेहो तकर आगाँ माथ नहि उठौलक।

मध्य रात्रि क समय चोरक एक दल दादी बूढ़ाक ढिमका पर आबिकय ओकर कान मे फुसफुसा के कहलकै—"हे औ, सर्वशक्तिमान दादी बूढ़ा, हमरा सब पर विश्वास करह। हम सब हृदयसँ दुष्ट नहि छी। हम सच्चे बात कहै छिअह-हम अपन दरिद्रताक कारणे ककरो गायक थरि सँ ओकर गाय चोरी करैत छी। थारी-बाटी चोरी करै छी। हम अपन परिवारक खातिरे एहन संकट उठबै छी। मुदा ई साधु बनल 'निसपिट्टर' सब तोरा पर विश्वास नहि करय छह। हुनका हमर सभक दुर्भाग्यक जानकारिये कोना हेतैन? हें प्रभु! तोरे टा मात्र सब किछु बूझल छह।

एलिओ, जॉन, अलिएन्डर, पीटर, साइमन, पॉल, माइकेल एहन बहुतो ईसाई धर्म ग्रहण कऽ लेने छलाह। मुदा खाली धर्म बदलला सँ किछु ने होइत छै। अपन पाप कें कबूल केनाय और ताहि दुआरे पछतेनाय जरूरी छैक। मुदा, सोलोमन क प्रवचन क व्यावहारिक जीवन, समाज और कचहरीक काज संभारबा मे की कोनो लाभप्रद मूल्य छलैक? कोनो झंझट मे पड़लासँ कोनो मिशन तोरा नहि बचा सकै

छह। हमर सबहिक पापक बोझ आकाशक भगवान उठबइ छथि, एतें धरि तँ ठीक, ई एक शुभ समाचार थिक जे ओ हगरा सभ कें क्षमा कऽ सकताह किन्तु ओ हमर सबहिक सभ पापक बोझ कें अप· कान्ह पर कोना उठौताह। जे किछु, ककरो जीवन क पूरा पाप भगवान द्वारा कहिओ ने कहिओ ओकरे रक्त सँ मेटाओल जा सकैछ।

वन्य जाति क धार्मिक परिवर्तित लोक क जीवन भिन्ने प्रकार क छलैन। जखन हुनका साकार भगवान क जरूरत होइत छन्हि तखन ओ पादरी कें बिसरि के 'दादी बूढ़ाक' गोहारि मे जुमै छथि, ओ सभ हुनका बहुत चढ़ौआ चढ़बै छथिन, ओ सभ मुर्गा, पड़बाक बलि दै मे सेहो नहि हिचकै छथि। हुनका वास्ते दुनू संसार रहैत छनि। कहुना एहि प्रकारक व्यवहार हुनका राखबका छैन्हें।

सन्तोष कुमारी सेहो एहि प्रकारक द्वैधाभासक दुनियाँ मे पैघ भेल छली। इसाई सभक गोष्ठी मे एहिठाम क ग्रामीण मान्यता प्राप्त देवताक उपहास दुष्ट प्रेतात्मा कहिकय उपहास क रूप मे ओ सुनि चुकल छल किन्तु अपन घरेलू कार्य मे अथवा निर्जन एकान्त जगह पर ईहो सभ साहस और शक्ति पावैले दादी बूढ़े कें निष्ठापूर्वक प्रार्थना करै छली। सन्तोष कुमारी दादी बूढ़ा और हूंको बूढ़ा कें अनादरक दृष्टि सँ कहियो नहि देखै छलि। ई नीके छलै, जेना घटना घटित भेल छलै ताहि मे मुखिया क बेटा ठेंगा ओकरा दिस झुकल छल। ओकरा एक सहारा भेटलै, मुदा और बहुत किछु करबाक छलै। ओ अपने आप मे फुसफुसाय के बाजल 'तोरे दया छिअह हे, दादी बूढ़ा। तोरे अपार कृपा हमरा चाही।''

खूब भोरे सूर्योदय सँ पूर्वे कहिओ ओ दादी बूढा के पीड़ी पर आवै छली। खजूर क पत्ता जमा कऽ के ओहि मे आगि धधकाबै छली और गोहराबति छली—''दादी बूढ़ा, हमर प्रार्थना सुनह।'' ओकरा होइ छलै दादी बूढ़ा ओकरा चिढ़ाय के मुसुका रहल होथि। प्रार्थना कहलाक बाद ओ अपन घर चलि जाय छली।

जखन संतोष कुमारी ठेंगा जानी लग दऽ के जाइत छली तँ अपन मुस्कान सँ ओकरा व्यथित कऽ दैत छली। ओ विना ओकरा सँ बाजने, विना ओकरा दिस माथ उठा के देखने, अपन केश-विन्यास मे फूल खोंसने, अपन डांड़ झुलबैत मस्ती मे आगू बढ़ि जाय छली।

ठेंगा रूसल रहल। गामक मुखिआ राम मुदुली अपना घर मे सारिआदान कें पुतहु वना कें आनैक तैयारी करैत रहल।

❑❑

नओ

मुखिआ हड़बड़ायल छल। ओ सोचि लेलक जे ओ अपन बेटाक वास्ते हरी जानीक बेटी मांगैले ओकरा ओतय जायत। एहि खातिर एक छोट छीन विधिक वास्ते ओकरा पाँच बोतल दारू चाही, जे कखनहुँ कीनल जा सकैछ। एकर अलावे पाँच हांड़ी मे दारू 'रान्हल' जायत। एहि दुआरे सात दिनक बासि भभकैत जोआर चाही छल। से नहि भेला सँ ओते नशा नहि अबितै। एतबहि नहि दुलहिनक वास्ते एक नीक साड़ी चाही छल। नाक और कानक वास्ते एक दूटा सोनाक गहना सेहो चाही छल। दिशारी जोतिखी शुभ दिन देखि मुहूर्त ताकताह। राम मुदुली नाइक कें लड़कीक ओतय जाय पड़तनि। ओकर पिता सँ भेंट करबाक छलनि। पंचायत बजेवाक छलनि और सब बातक बन्दोबस्त करबा क छलनि।

जाड़क मास समाप्त होइये बला छलैक। जल्दीए कुहेस फाटि जेतइक। चारू दिस स्वच्छ और ठंडा वातावरण रहतैक। जंगल मे गाछ सभ पर नव हरिअर कोंपल आवि गेल रहतैक, नव फूल खिलल रहतैक। बसन्तक समय रहतै जे जवान लोक मे मादकता और उत्तेजना बढ़ाओत। मुदुली सोचलक एहि बीचहि मे, तकर पहिनहि सब किछुक ओरिआन कऽ लेब उचित होयत। सैह ठीक रहत। 'बधू मांगबाक' विधि ताहिसँ पूर्वे समाप्त भऽ जेबाक चाही। जाहिसँ कोनो झंझट-बखेरा नहि हो। निर्धारित दिन आयल। अपन पिताक कड़ा आदेशक मुताबिक ठेंगा कें ओहि त्योहारक वास्ते कड़ा परिश्रम करवाक छलैक। ओकर गुप्त अभिलाषा ओकर मोने मे बज्जर केबाड़ जेकाँ लागले रहि गेलै।

जौं ओकर भाग्य साथ दितै तँ निर्जन एकान्त राति मे ओ संतोष कुमारी सँ भेंट करिते। ओ सभ थोड़-बहुत आपस मे बतियैबिते। ओहि भेंट करबाक घड़ी कें अमूल्य निधि जेकाँ स्मरण कऽ के ठेंगा कहुना समय गुदस्त करत।

ई समाचार जे ठेंगा क वास्ते कन्याक खोज भऽ रहल छैक गाम भरि मे लुत्ती जेकाँ पसरि गेल। प्रत्येक दिन सारिआदानक सखी सभ ओकरा विभिन्न परिधान

पहिरा के सजवय लगलीह। ओकर पिता ओकरा वास्ते कतेको हार आओर कतेको अउँठी कीनि कऽ आनि देलकै। आइ काल्हि ओ प्रायः पीअर साड़ी पहिरि अनेको गहना सँ सजल-धजल देखना जाइत छलीह। ओ माथ निहुरा के चलैत छलीह। सांकर एक पेड़िआ पर प्रायः ओकर भेंट ठेंगासँ भऽ जाइत छलैक ओ खाली आँखिक कोर सँ ओकरा देखि मुसुका के आगू बढि जाइत छलीह।

ठेंगा के अपन मित्र सभक हँसी-ठट्ठा सहे पड़ैत छलैक। ओकरा ओहि सँ आनन्दित होयवाक बहाना करय पड़ैत छलैक। यद्यपि ओ वाहर सँ मुसुकिआइत तँ छल किन्तु भीतर मे ओकरा अन्हड़ बहैत रहैत छलैक। ओकर स्थिति दयनीय छलैक।

असकर मे ठेंगा जानी सारिआदानक तुलना संतोष कुमरीसँ करैत रहैत छल। दुनू मे आकाश-पातालक अन्तर छलैक। सारिआदान गोर, सुन्नरि, नीक आओर निश्छल छली। मुदा ओ गाय एहन सीधा छली। ओकरा पाबि कें ककरो उष्णता नहि भेटितै। केओ ओकरा दिस आकर्षणक अनुभव नहि करै छल। ओ कोनो मर्द कें फाँसि नहि सकै छली। दोसर दिस सन्तोष कुमारी आकर्षक छलीह, ओकर सुन्दरता ककरो बान्हि के राखि सकैत छलैक ओ ककरो हृदय के विदीर्ण कऽ सकै छली। ओ मनोभावनी छली।

ठेंगा जानी सोचलक जे ओकरा वास्ते सन्तोष कुमारी मूल्यहीन होइतै तैं ओ सारिआदान सँ विवाह करै बला छल मुदा सन्तोष कुमारी ककरो दोसरक भऽ के रहतै जखन ई विचार ओकरा मोन मे आबै छलैक तँ ओ वासना क लहरि क झोंका मे फेका जाइत छल।

ओकरा होइत छलै जे आब ओकरासँ एतेक यंत्रणा नहि सहल जेतैक। घुमबाक लाथे ओ कखनो काल डम्व जातिक टोला दिस निकलि पड़ै छल, एहि आशा मे जे सन्तोष कुमारीक एक झलक ओकरा भेटि जाय। निर्जन रातुक अन्धकार मे जखन सर्द हवा लोक कें कँपा दैत छल, ठेंगा जानी आ सन्तोष कुमारी क भेंट भेलै। ई मिलन तीन सप्ताहक बाद भेल छलै। सन्तोष कुमारी ओकरासँ साफ साफ पुछलकै—"ई सब कियैक ठेंगा? एना और कतेक दिन? ओ सब किछु दिनक बाद तोरा वास्ते दुलहिन ताकि लेताह। तों अपन घर मे सारिआदानक संग सुखपूर्वक बितेबह तखन ई नुक्का-चोरी कियैक?" ओकर मन्द किन्तु तीक्ख स्वर ठेंगा क हृदय कें बेध देलकै। ओ आगाँ बाजलि—"तों कहै छह, तोहर पिता तोरा

बाध्य करै छह। तों ते पुरुष छह। छह किने? की तोहर अपन बोली नहि छह? की तोरा अपने नीक वेजाय करबाक ज्ञान नहि छह? जाहि मे तोरा सबसँ बेसी नीक लागह तों सैह करह। हम विरोध कियैक करबहु? शुरू मे तँ हमही कहलियौ—नहि, नहि। मुदा, तों नहियें मानलह। मुदा आब कोनो फायदा नहिं तेकर याद कयने। अपना सब अलग अलग जाति क लोक छी। समाज अपना सब कें विवाह करबाक स्वीकृति नहि देत। पुरान-पुरखाक जमानासँ एहन कहिओ नहि भेल। आब तँ तोरा छोड़ि के हमरा वास्ते के ओ नहि अछि। मुदा तों ते अपन माय-बापक आज्ञाकारी पुत्र छह। हुनक अन्ध भक्त। तों भूतकाल के बिसरि जेबह और अपन घर बसेवह। अपन परिवार सङ्ग जीवन बितेबह। हम मरियो जाय तँ तों हमरासँ बाजबो ने करबह।''

सन्तोष कुमारी क आँखि लोरसँ भरि गेलैक और ओ दौड़ि कें पड़ा गेल। भारी हृदयसँ ठेंगा बैसि गेल। की करी? तकर निर्णय ओ नहिकऽ सकल। एहि चक्रसँ कोना निकली? अपन माय-बाप पर अपन मोनक खौंझ उतारि कय ओकरा किछु शान्ति भेटितैक। ओं अपन पिताक मोंछ उखाड़ि लै ले चाहलक। मुदा, ओ अपन माय-बापक अवहेलना कोना करिते? जे ओकर कहिओ अवमानना नहि केलखिन अछि। अपन पुत्रक आनन्द, सैह हुनका वास्ते सर्वोपरि छल। ओकर ब्याहक ओरिआन लऽ के ताहि दुआरे ओ खुशी सँ मत्त छलाह। ठेंगा हुनका कोना दुख दितैक? ई सोचि ओकर विरोध करबाक भावना शीघ्रे धिम्मड़ भऽ गेलैक। ओ मोने मोन स्वीकार कयलक जे ओ अपन माय-बापक आशीर्वाद आ शुभेच्छाक बिना किछु नहि कऽ सकै छल।

ठेंगा जानी सदिखन अन्यमनस्क रहय लागल। ओ कोनो ठाम बैसल रहय तँ घंटो बैसले रहि जाइ और दोसराक उपस्थिति क ओकरा भानो नहि होइक। खेबा-पीबा परसँ ओकर जी उचटि गेलैक। ओ सुरियाह लोक जेकाँ काज करय लागल। राति मे बेशी कार्यशील भऽ गेल कारण निद्रा क कमी भऽ गेलै। संभवतः कोनो अज्ञाते श्रोतसँ मानवक माटिक खेलौना एहन शरीर मे जीवन क जोश प्रवेश करै छै। ओकरा देखलासँ इएह लागै छल। ओ पहाड़ी पर बेचैन भऽ विना कारणें, अथक रूपें बिच्छिन्न जेकाँ घुमैत रहैत छल। आब ओकरा इएह सोच खाइत रहै छलै—एकर की प्रतिकार छै? ओ सैह छगुन्ता, गुण-धुन मे लागल रहै छल। ठेंगा क माय ओकर बाप सँ पुछलकै—''आइ काल्हि बेटा एहन शोक मग्न कियैक रहै लागल अछि?''

ओकर पिता कहलकै—"ओ शोक-मग्न कियैक रहत? जेकर विआह होइबला छैक से शोक-मग्न कियैक रहत? ओ ठीक अछि। ओ खाइये-पीबैये, डुंग-डुंगा वजबैये और गीत गाबैये। ओकरासँ तों और की आशा करै छह? के कहत जे ओ शोक-मग्न अछि?"

ठेंगा क माय स्वीकारैत माथा तँ हिलौलकै मुदा ओ आश्वस्त नहि भेलि। ओ बाजलि—"हमरा लागैये किछु ठीक नहि भऽ रहल छैक। भऽ सकै छै, ओकरा कोनो चिन्ता खयने जा रहल होइक। ओ एहि विषय मे हमरा सबके नहि कहत। हम सव आब जल्दीए ओकर विवाह सारिआदानसँ कऽ दियैक, सैह ठीक हेतैक। मुदा, ओ ओकरा की प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करतैक? ओकरा पसिन्न पड़तै की नहि? की ओकरा मोन मे अपन पसिन्नक कोनो लड़की तँ नहि छैक?"

ठेंगा क पिता ओकर एहि आशंका कें टारलक। —"ई सव तों कियैक बजैत छह? की तोरा कोनो सन्देह छह?" बूढ़ा कें तामस चढ़लै और अपन पत्नी कें डाँटैत बाजल—"हरी जानीक बेटी नीक स्वभाव क लड़की छैक। ककरो भागेसँ ओहन पत्नी भेटैत छैक। ओकरा पर ठेंगा कोना ने आकर्षित होयत? ओकरा मोन क बात कें हम सब बुझबे कोना करबैक? जौं ओ ककरो आने क पसिन्न करय तँ हम सब कियै नकारबै? ओकरा वास्ते जे उत्तम छलै हम सब सएह केलियै, सएह कऽ रहल छियैक। जौं ओ कोनो आने लड़की कें चाहय तँ ओ से बाजे। ओ लड़की जेकाँ कियैक चुप रहैत अछि?"

ठेंगाक मायक मोन कें शान्ति भेटलै। ओकर पति सीधा लोक छलै जे सोझ ढंग सँ सीधा सरल बात कहि के दोसरा कें मना लैत छल।

निश्चित कयल शुभ दिन मे राम मुदुली मुर्गाक बांगक सङ्ग उठल। अपन बेटा क वास्ते ओ सारिआदान कें मांगै ले जायत। ताहिसँ ओ जल्दी-जल्दी तैयार होअय लागल। ई सच छलै जे ओ गामक मुखिआ छल। मुदा एहन शुभ अवसर पर अपन पैघक पयर छूबि कें आशीर्वाद लेबाक प्रथा छैक।

एक संवादवाहक कें 'पलीडा' गाम पठाओल गेल। लूला गाम सँ ई गाम किछु दूर पर छलै। मुदा ओतऽ सँ किछु दोस्त-महीम आ सम्बन्धी सभ अबितै। ठेंगा क माय घर क साफ-सफाई, निपाय-पोताइ मे व्यस्त छली। घरक सब केओ किछु ने किछु करैमे व्यस्त छल। केओ बेकार नहि बैसल छल। ठेंगा ढोर-गोडू लऽके जंगल गेल छल तैं देखाय नहि पड़ैत छल।

ठेंङ्गाक पिता ओकर मायसँ कहलकै—"हैये देखह, तोहर बेटा कहाँ छह? एतेक काज करबाले छैक आ ओकर कतउ पते नहि। ओ कतहु अपन मन वहटारैक काज मे लागल होयत, ओ कतऽ गेल से भगवाने टाकें मालूम हेतैक।"

ओकर माय हँसैत और चिढाबैत, उरुकाबैत बाजलि—"साँचे तँ, अपन ब्याह करबा सँ पहिने ओकरा अपन सबटा काज अपने करबाक चाही छल। मुदा तेकर बदला मे ओ सबटा भार अपन माय बापक कन्हा पर दऽ देलक अछि, सएह तँ ओकर वड्ड पैघ गलती छियैक।"

दुनू गोटे भभाकय हँसि पड़लाह। आन खन पुत्र कतबो निर्भीक ओ साहसी होउक एहन समय मे ओ धखाइते रहैत अछि। जौं एहि समय संतान माथा नहि झुकाबय तँ ओकरा जन्म दैके और पालन-पोसन करैके दुख व्यर्थे भेल, इएह बुझबाक थिक।

ठिका-ठीक दुपहरिआ क तबधल रौद मे मारीचिमल जंगल मे कोनो धारक कात ठेंगा जानी बैसल छल। ओकर गाय-माल सभ चरैत छलैक। आइ ओकर ब्याह ठीक होइबला छलैक। एहि अवसर पर ओकरा खुश रहबाक चाही छल। मुदा, ओकरा खुशी कियैक ने होइ छलै? जाड़क रौद मे तीक्ख सूर्यक किरण ओकरा बेधित करैत छलैक, ओ ओंघाय लागल।

भोरेसँ ठेंगा ककरोसँ बातो नहि कयने छल। ओकरा एकान्तो मे मोन मे शान्ति नहि भेटलै, ओ अपने आपसँ रूष्ट और तमसायल छल। ओ एहि चिड़चिड़ाहट मे अपन गाय कें डेंगबे लागल। बेचारा जानवर चट्टानक बीच बाटे भागल और दूरेसँ ठेंगा कें देखैत रहल। मुदा, ओकर तामस शान्त नहि भेलैक। ओ अपन माय-बाप क इच्छाक विरुद्ध जेबाक सपनो नहि देखि सकै छल। तेकर माने इएह जे हुनक निर्णय कें ओ मानि लेत।

दिन बीतल। आजुक दिन ओकर माय-बापक वास्ते बहुत आनन्द और शुभ दिन छलैक। एहि अवसर पर पूरा गाँव उत्सव उछाह मनाबितै। लोक ओकरा देखि कें मुसुकाइत छल।

चिड़ै सभ माथक उपर दऽ के उड़ि-उड़ि जाइत छल। जंगल मे गाय-माल चरि रहल छल। सब किछु नीके जकाँ चलि रहल छलै। ओएह एकटा गतिहीन छल। ओ जमीन पर लेटल छल। दिलसँ दुखी। ओकर माय-बाप, अपन एकमात्र पुत्रक विवाहक 'छेकाईक' शुभ अवसर पर पूरा गाम बला कें भोज पर नौतने छल।

समय बितैत गेल। ओहि अवसर सँ अन्यमनस्क भऽ ठेंगा एकटा आमक गाछसँ ओंगठिके बैसल ओंघाइत रहल। तखनहि सुन्दर खोंपा चमकावैत पहाड़ी क सांकर एक पेड़िआ पर एक युवती देखना गेलैक। ओ बैसि गेल और खूब निहारि कें ताकय लागल जे ओ के थिकी? ओ सन्तोष कुमारी कें चिन्हलक और जोरसँ चिकरल।

सन्तोष कुमारी ठेंगा कें पुछलकै—''तों एतय छह ठेंगा? आइ तोहर वास्ते बहु क 'मंगनी' भऽ रहल छह और तों एतय नुकायल छह?'' ई कहि सन्तोष कुमारी ठठा कें हसल। एकटा सुखल हँसी। ठेंगाक नेत्र सजल भऽ गेलै। ओ माथ झुका लेलक। सन्तोष कुमारी अपन माथ उठबैत बाजल—''ओह तों कानि रहल छह? तोहर चेहरा पीअरा गेल छह। तोरा आइ खाइ ले किछु नहि देलकह?''

दुनू गोटे एक दोसरा कें देखय लागल। दूनू गोटे हिचुकि-हिचकि कय कानय लागल और एक दोसराक बाँहि मे समा गेल।

सब किछु निस्तब्ध छल, खाली घास चरैत गायक आवाज आबैत छलैक। ठेंगा और सन्तोष कुमारी शान्त भेल। रौद नरम भऽ गेल छलै। ठेंगाक ओठ पर संतोष कुमारीक नोनगर नोर क स्वाद छलै। ठेंगा दृढ़ स्वर मे कहलकै—''लोक कें वतियाबे दहक। हम तोरा नहि छोड़ब।'' सन्तोष कुमारी किछुने बाजल। ठेंगा बाजिते गेल—''लोक हमरा सबकें बारि देत तँ वारय दहक। हम सभ दूर जा के कोनो आन ठाम वसि जायब। हम सब एहन ठाम जायब जतऽ हमरा सबकें केओ नहि चिन्हत। एहिठाम क केओ हमरा सब कें नहि देखि सकत। खाली तों और हम, एहिठामसँ दूर घनघोर जंगल मे रहब। थोड़े जंगल साफ कऽ के धारक कात मे खोपड़ी बनायव। ओतय खाली अपना दूनू गोटय रहब। ओतऽ अपना सबकें नुकसाने के कऽ सकत? चलह, आब चली।''

ठेंगा क जोशगर स्वर पर संतोष कुमारी सर्द पानि कें उझिलैत जेकाँ बाजलि—''की तों बताह भऽ गेलह ये? दुनियाँ मे कतहु एहन जगह छैक, जतऽ अपना दूनू गोटय नुकायल रही आ लोक कें पता नहि चलतैक? हँ, हम सब कने जंगल साफ कऽ के खोपड़ी बना सकै छी, मुदा गुजर कोना करब? पाइ कतऽ सँ आओत? अपना सभकें उपजाबै लेल ते जमीन अछिए नहि। हम सब कोना खायब? कोना पहिरब? यदि केओ अपना सब कें ताकि कऽ उजागर कऽ देत तऽ बड़ अपरतीब होयत। नहि ई बतहपनी थिक। ...सन्तोष कुमारी हिचुकैत रहल। ठेंगा जानी सुस्थिर भऽ

के बाजल—“लोर बहौनेसँ काज नहि चलतह, हइ। अपना सभकें किछु करैये पड़तह। हँ, अपना सभ गाम छोड़ि दी, जतऽ संभव हो ततऽ पड़ा जाय।” तखन अबोध जेकाँ ओ पुछलकै—“तोरा विचार सँ कतय सर्बोत्तम होयत?”

सन्तोष कुमारी जवाब देलकै—“एक्केटा जगह छै—आसामक चाय बगान। अपना सभ ओतय जा के काज कऽ सकै छी।”

ठेंगा—“तँ की हमरा सभ कें आसाम जाय पड़त? ओते दूर?”

सन्तोष कुमारी—“नहिं तँ आर कतय जा सकब?”

ठेंगा—“तों अपन घर दुआरि छोड़ि कय ओते दूर हमरा संगे जेबह?”

सं.कु.—“कियै नहि जा सकै छी हम? तों नहि चाहबह तँ तों नहि जा सकबह। मुदा हम ते जयबे करबै। हँ, हम सब आसाम जेबै। केओ पूछत तँ कहबै हम सब परजा जन जातिक बिआहुल वर-कनियाँ छी। ठाम ठाम देखैत हम सब कमायब खटायब। जते दिन मोन होयत तते दिन ओतऽ रहब। पूँजी-पगहा जमा कऽ के घुरब और कोरापुट अथवा जयपुर मे बसि जायब। तखन हमरा सबकें केओ तंग नहि करत। हँ, इएह एकटा रस्ता छह।”

ठेंगा—“ठीक, हम सब आसाम जायब, मुदा कखन?”

सन्तोष कुमारी—“राति बितै सँ पहिने, हम सब उठि जायब और अन्हरोखे मे गाम त्यागि देब। तों धांगरा घर सँ बाहर हेबह, हम सड़कक कात मे तोरा वास्ते बैसल रहबह।” ठेंगा जानीक मोन उत्फुल्ल भेलैक। ओ कहलकै—“बेस।”

❑❑

दस

गाम क मुखिआ राम मुदुली अपन बेटाक वास्ते कन्याक 'छेकाई' कऽ के ओहि साँझ अपन घर घुरल। अपन बेटाक होइबला ससुर सँ पाँच बोतल दारू और पाँच घैल मे 'रान्हल' शराब पर बात फरियेने छल। पंचायतक पाँच लोकक आगाँ हरी जानी अपन बेटी सारिआदान कें पुछलकै—"बुच्ची! एहि गामक मुखिया अपन बेटा ठेंगा संग तोहर कथा करैले आयल छथि। हम सब 'परजा' जातिक छी। हमरा सबहिक मोन मे ककरो गुलामी करब नहि रहैये। जँ तों चाहै छह तँ अपन सहमति देह और यदि नहि तँ तों एखनहि अस्वीकार कऽ सकै छह। तोरा अस्वीकार कयला पर ओकर आनल सब उपहार हम तुरत घुरा देबै, तैं साफ-साफ कहह। ठेंगा जानी एहि गामक छी तोरा तँ से बुझले छह।"

अपन खुशी कें नुकबैक कोशिश करैत सारिआदान मुँह नीचा गोतने कहलकै—"हमरा मोन मे और केओ नहि अछि। हमर माय-बापक इच्छे हमर इच्छा थिक।"

पंचायतक पाँचो सदस्य जे ओतय बैसल छलाह प्रशंसा क स्वर मे बजलाह—"ओह! कते नीक बात बाजल अछि। वेटी होअय तँ एहन।" सारिआदान कें ओ सब आशीर्वाद देलखिन। किछु गोटे ओकरा दुलार केलकै, किछु गोटे पीठ ठोकलकै और किछु लोक माथ छुबि के आशीर्वाद देलकैक। मुखिआ दुलार करैत बाजल—"इ हमर 'नन्हकी माय' सोना एहन सुन्दर गुड़िया अछि। हड़, फूल एहन सुन्नर तों जिनगी भरि मह मह करह। हमर घर, हमर दुआरि सबटा तोरे छिअह। हमर सबहिक ख्याल राखिहऽ, हम भेलहुँ बूढ़ा बूढ़ी, कहियो कहियो हमरा सबकें मांड़टा बनाकऽ देल करिहऽ।"

मुखिआ बहुत प्रसन्न होइत अपन घर घुरल। आइ ओकरा विश्राम करबाक छलैक, कियैत तँ ओ अपन जिनगीक सबसँ पैघ उद्देश्य कें पाबि लेने छल। ओ एकटा बेटा जनमौने छल, और आइ तेकर दुलहिन ओकरा भेटि गेल छलैक; जे बीज ओ बाउग कयने छल तकर गाछ मे आब फूल आबि गेल छलै।

मुदा की ओकर काज समाप्त भऽ गेलै? परजा सभहिक काज कहिओ समाप्त नहि होइत छैक। एहि माटि जेकाँ ओहो अक्षुण्ण होइछ। ओ सदिखन स्वतंत्र और उत्साहसँ भरल युवक होइछ। रस्तासँ घर आबैत काल शराबकें हांड़िया सँ निकालि कें ओ पीलक, ओकर संगी सभ सेहो पिलकै और पीबि कय ओ सभ मत्त भऽ गेल। रस्ता भरि ओ चिकरैत भोकरैत रहल—''तों जते छौंड़ा छौंड़ी सभ छह, सब गोटे मिलिकऽ नाचह। सभ गोटे एतऽ जमा होअऽ और आगि जराबह, तुरही बजाबह, ढोल पीटह, नाचह, गाबह।'' लोकक भीड़ जमा भऽ गेल। सब केओ मस्त। एक गोटेक खुशी मे पूरा समाजक खुशी छलैक। धांगरा घर सँ डुंग डुंगाक आवाज आबे लागलैक। साँझ भेला पर हड़बड़ा के सबटा छौंड़ी सभ माँड़ पीलक और नाचय लेल तैयार भऽ गेली।

मुन्हारि साँझ भेला पर ठेंगा जानी अपन गाय गोड़ू संग घुरल। ओकर माय अपन बेटा कें खोआबैक वास्ते उताहुल छल। ओकरा वास्ते आइ ओ पुरान जोआर क खिच्चड़ि रांधने छल और सीम क तरकारी बनेन छल। घर मे 'रान्हा शराब' और बोतल मे राखल शराब बहुतो राखल छल। ओकरा हेतु भोजन परोसिकऽ ओ बाजल—''खो बेटा खो, लजा जुनि। एहि भयंकर गर्मी मे दिन भरि तों कतय छलह? देखह तँ भूखसँ पेट पीठ मे सटि गेल छह, तों बहुत थाकल लागै छह।''

तकर बाद नाच शुरू भेल। ठेंगा जानी धांगरा घर मे अगिला दिनक भोरक योजनाक तैयारी मोने मोन कऽ रहल छल। ओ दुइ-तीन कपड़ाक मोटरी बनौलक आ सिरमा मे दुइ टाका, कने जोआर आ अपन डुंग-डुंगा राखि लेलक।

बाहर मे सब आनन्द मग्न भऽ नाचि रहल छल। मुदा ई सब ओकरा एकटा रूकावट बुझेलैक। पिताक प्यार भरल बोल तथा मायक आँखिक लोर, ओकरा सबटा एकटा बंधन बुझेलैक। एहिठाम ओकरा सब किछु बेड़ी मे बन्हेबा एहन लागै छलै। आजुक राति एतुका वास्ते ओकर अन्तिम राति हेतैक, ई सोचि के ओ अपना कें पैघ जाल मे बाझल एक छोट पक्षी एहन बूझि, पड़ल रहल। काल्हि भोर होइते जखन जाल हँटा लेल जेतैक, ई बेड़ी टूटि जेतैक। काल्हि भोरे ओ बन्धन हीन भऽ जायत। ओ राति भरि बिलकुल नहि सूति सकल। उद्दाम वासना अपन मोह मे ओकरा जकड़ने छलैक। मोने मोन अनेको आकृति मे सन्तोष कुमारीक चेहरा ओ बनबैत रहल। ओकर आँखि, ओकर हाथ, ओकर टाङ्ग ओकर शरीर क

सब अङ्ग ओकरा सम्मोहित करैत रहलै। विभिन्न अंग मिलिकऽ सम्पूर्ण नारीक चित्रक किछु भंगिमा वनबैत छलै। ओकर हँसी, ओकर माथक केशक गुम्फन, ओकर चालि ओकर आँखिक आगू छिटकि जाइत छलैक और ई प्रतिच्छाया एक क्षितिज सँ दोसर क्षितिज धरि चान्दनी रातिमे प्रकाशित पसरल कुहेस मे छारल छलैक। एहि मनोछवि सब सँ ठेंगा जानी कें किछु सान्त्वना भेटलैक। ओ अपना कें किछु बंधनहीन अनुभव कयलक। ओकर माँउस आ रक्तक आकृति छोट छीन टुकड़ा मे विस्फोट कऽ गेल छलै। ओ खूव पैघ चमकैत तारामंडल जेकाँ बनि गेल जेकर अस्तित्वक प्रत्येक हिस्सा आनन्दोल्लास मे धड़कैत हो।

ओकर अस्तित्वक प्रत्येक हिस्सा हर्षोन्माद मे धड़कैत रहलैक, जे आशा, भय, दुखक सङ्ग उल्लास और आनन्दसँ मिश्रित छल। ओकर सम्पूर्ण अस्तित्व एक अनजान अन्हार बाटे मंजिल क टीला पर जड़ैत उल्लास क अग्नि दिस पसरि रहल छलैक। ई उल्लासक अग्नि गगनचुम्बी छलैक ओ चमकैत लाल ज्वालाक जाल मे बुनल छलै और ओहि उल्लासक अग्निक नाम छलैक, संतोष कुमारी।

ठेंगा जानी मुरगाक बांग देवा सँ पहिनहि, खूब भोरे जागल। ओ अपन नूआ-लत्ता सरियेलक, कान्ह पर डुंग-डुंगा राखलक, लाठी टेकैत नहु नहु ओहि धांगरा बसा गृह सँ वाहर भेल। केओ जागल नहि छलैक, अन्हार एखन धरि नहि फाटल रहै आओर कुकुर सभ राति भरि पहरेदारीक वाद सूति रहल छल। गोहाल मे गाय सभ जोर-जोरसँ फुफुआइत छल।

ठेंगाजानी बाहर निकलल। भोरक झलफली मे ओ देखलक खोपड़ी सभ एक पांती मे ठाढ़ छलैक, ताहि पर निद्रा क साम्राज्य पसरल छलैक। ई खोपड़ी सभ, गाँक ई एकपेड़िआ, ई धुआँ भरल कुहेस, ई गरदा भरल गाँ, जतऽ ओ पैघ भेल, ई सब ओकर नीक जेकाँ जानल-बूझल छलैक। ओकर चेहरा पर ओसक बुन्नी ओकरा ई भान कराबैत छलै जे ओ अपने गाम बाटे चलि रहल अछि। ओकरा वास्ते 'गाम' शब्दक बहुतो अर्थ छलैक। मुदा एखन ओ अर्धनिद्रित तंद्रा मे बिना किछु सोचने चलैत रहल।

सन्तोष कुमारी, परजा जातिक लड़की एहन कपड़ा पहिरने, थर-थर कांपैत रस्ते मे भेटि गेलै। ओ अपन माथ पर एकटा मोटरी राखने चलल जा रहल छल, जेना गामक हाट पर जाइत हो।

ओ दूनू गोटे संग-संग तेजीसँ चलैत रहला। जोड़ी हेबाक भावना हुनका बांधने

छल। किछु कालक बाद ओ चिन्ताहीन, आशंकाहीन, निडर भेल बाट पर चलैत रहलाह और ओहि पतराइत, छँटैत, अन्धकार मे सब परिचित वस्तु पाछू छुटैत गेल—परिचित गाछी-विरछी पछुआइत गेल तहिना छुटैत गेल नदी और घाटी सभ। हुनका एकेटा चिन्ता बेधित करैत छलैन-कोना कमसँ कम समय मे अधिक सँ अधिक दूरी तय कऽ ली। मात्र एकेटा अज्ञात भय हुनका आतंकित करैत छलैन जेना कोनो छाया हुनक पछोड़ धयने चलि रहल हो। की लोक सभ हुनका दुनू के चीन्हि लेत? की ओ पकड़ा जेताह?

उषाकालक अर्द्ध कुहेस भरल अंधकार मे ओ झपसि के चलि कय बेसी सँ वेसी दूरी पार करैत रहला। तखन नहुँ नहुँ पौ फाटि गेल। आव आकाश मे प्रकाश विहीन किछुए तरेगन देखा पड़ै छल। अन्हाड़क अंत संगहि जंगलक अन्त भेल। धनहर खेत और नदी, बरोबरि भऽ के एक दोसरा क सङ्ग चलैत रहल। खूब फरिच्छ भेला पर ओ दूनू गोटे बहुतो दूरी पार कऽ लेने छलाह।

भोरूका सूर्यक किरण पसरल। ठेंगा जानी आ सन्तोष कुमारी एक घाटी दऽ के जा रहल छलाह। दुनू घामे पसीने लथ पथ। एक गाछक छाया मे पाथर पर बैसि किछु क्षण क वास्ते दुनू गोटे सुस्ताय लगलाह। हुनक पाछाँ-पाछाँ केओ नहि आबि रहल छल। पकड़ेबा क जोखिम वीति गेल छलैक। मुदा घरसँ भागबाक हुनक आधा उत्साह समाप्त भऽ गेल छलनि।

''देखह, संतोष। ओहि पहाड़ी ढिमका पर दादी बूढ़ा छथि। एते दूरोसँ तों हुनका देखि सकैत छह।'' ठेंगा कहलकै। कुहेस फाटि गेल छल। भोरूका हवा मे ताजगी भरल छलैक और उषा कालक मद्धिम इजोतो मे दादी बूढ़ा देखाय पड़ैत छलाह। तखने हुनका लागलनि जे आब ओ सचमुचे गाम त्यागि देने छथि। दादी बूढ़ाक ढिमकाक नीचा ढलान पर हुनक गाम टेढ़ मेढ़ नील रेखा एहन लागैत छल। ओहिठाम हुनक माय-बाप छलथिन। सखा मित्र छलथिन और छलथिन सर-कुटुम्ब, परिजन पुरजन। हुनक की दोष छलैन? ओ अपन स्नेहसँ हुनका सराबोर कयने रहथिन। अपन प्रेम निछावर कयने रहथिन, अपन वत्सलता बाँटने रहथिन। हुनक की दोष छलनि? हुनक पुरान पुरुखेक जमानासँ ओएह हुनक गाम छलनि। गामक 'चौपाड़ि' 'बेरामन' हुनका मोन छलनि जतऽ पुरान पुरखा क नोकगर आ सपाट पाथर स्मृति रूप मे छिड़िआयल राखल छलै। ठेंगा जानी क आँखिक आगू दूनू गोटे क—बूढ़ माय-बापक चित्र अविते आँखि भरि गेलैक। आब ओ सब की करैत

हेताह और सारिआदानक चित्र ओकर आँखिक आगू नाचैत रहलै। ओही लड़की क चित्र, जेकरा एक दिन पहिने ओकर दुलहिन रूप मे चुनल गेल छलै। ओ ओहि अर्द्धनिर्मित घरक विषय मे सोचलक जे एक स्नेह सँ भरल वाप अपन बेटाक खुशीक वास्ते बना रहल छल। जाहि मे ओकर बेटा ब्याहक वाद रहितैक।

सन्तोष कुमारी ठेंगासँ सटि के बैसल छल। हुनक चारू दिस एहन जमीन छलै जाहि मे ककरो प्रवेश वर्जित छलै। जतऽ हुनका केओने चिन्हैत छलनि। जतऽ हुनका केओ परिचित मदति देबालेलनहि छलनि। भविष्यक विचित्र अनजान जिनगी हुनक प्रतीक्षा कऽ रहल छल।

ठेंगा विचारलक ओ ओहि व्यक्ति सभ कें पाछाँ छोड़ि आयल अछि जिनका उपर ओ बेगरता भेला पर निर्भर रहिते। ओकरा एक कचोट भेलै। हुनका ओ छोड़ि आयल अछि जिनक प्रेम और सिनेहक छाँह मे ओकरा सुख आओर सान्त्वना जन्म सँ मृत्यु धरि भेटितैक।

सूर्य आओर ऊँच उठल। दूरसँ मुरान नदी क जल चमकैत देखाय पड़ैत छलैक। ओकर जल तेजीसँ बहल जाइत छलै जेना ओकर मानस पटल पर बिसरल जाइत गाम क स्मृति विलीन भऽ रहल हो। पाथर पर बैसल ठेंगाजानी दादी बूढा कें निहारि-निहारि देखैत रहल। संतोष कुमारी ओकर बगल मे बैसल छलैक। किछु कालक वास्ते तेकर भान ओकरा एकदम नहि रहलै। ओकर कपार क और कान क पाछूक स्वेद विन्दु तँ सुखि गेल छलै मुदा ओकर आँखि सँ निर्झर लोर बहैत रहलै। रौद मे लोर भरल आँखिसँ देखला पर सब किछु चोन्हरा गेलै। सन्तोष कुमारी क शब्द—''उठह, चलह', ई सुनि ओकर तन्द्रा टुटलैक। ओ बाजैत रहली—''एते जल्दी तों कोना थाकि गेलह? एहिना बैसल रहने कतेक समय वीति जेतैक आओर जँ केओ अपना दूनू गोटे कें ताकैत ताकैत एतय धरि पहुँचि जायत, तखन? तखन की हेतैक?''

ओकर चेहरा गम्भीर छलैक। एहि बेर के तँ ओ अपन पोसुआ सूग्गर कें दाना खुआबिते और थपकी दऽ के सुताबिते। ओकरा ठेगा जानी और अपन माय-बाप क बीच मे एकटा कें चुनबाक छलै मुदा ओते जनानी छली कोनो मर्द नहि। हठात् ओ विभोर होइत बाजलि—''ओह! ई फूल सव कते सुन्दर छैक? ओ ओकरा दिस दौड़ि के गेली, किछु के तोड़लक और अपन खोंपा मे खोंसलक। ठेंगा जानीक हाथ अपना हाथ सँ पकड़ि, घीचैत ओ कहलकै—''उठह, थाकने काज नहि चलतह।

आइए हमरा सबकें कोरापुट पहुँचि जेबाक चाही।'' एक उच्छ्वास छोड़ैत ठेंगा जानी अपन पयर पर ठाढ़ भेल। आब हुनका सबकें ढलान पर पहाड़ सँ नीचा जेबाक छलनि, जतऽ सँ अपन गामक आसमान पहाड़क दोसर दिस छुटि जयतनि।

ओ दुनू पहाड़क बीच चोटी पर ठाढ़ भऽ गेल। ठेंगा जानी एक हाथ में लाठी और दोसर हाथ मे एक मोटरी सँ अपन डुंग डुंगा लेने और संग मे सन्तोष कुमारी एक हाथ सँ ठेंगाक बाँहि कें धयने और दोसर हाथ सँ छोट छीन मोटरी उठौने ठाढ़ भेल।

ओ दुनू चुपेचाप दादी बूढा कें गोहरौलनि और लक्ष्यहीन घुमन्तू जेकाँ भोरक सूर्य क रोशनी मे प्रकाशित अनचिन्हार रस्ता पर उतरैत गेलाह।

❑❑

एगारह

अपन बेटाक सगाईक छेका बला दिन क संध्या मे मुखिआ दादी बूढ़ा कें नहि बिसरि सकल। हुनका आगाँ एक फूटल खापड़ि मे चाउर राखि देल गेल छलनि। दारू जतय चढाओल गेल छल ततऽ माटि गील भऽ गेल छलै। ओसक वुन्नीसँ भरल टटका फूल दादी बूढ़ा क आगाँ छिड़िआयल छल। ओहिठाम मुर्गा क पाँखि सेहो छिड़िआयल छल। मुखिआ दादी बूढ़ा कें ओहि दिन हृदय सँ गोहारि कयने छल। ओ सवहिक उन्नति, समृद्धि और मंगलक हेतु गोहारि कयने छल। ओ सर्वशक्तिमान सँ प्रार्थना कयने छल जे ओकर गाम क लोकक उपर मधु वरसाबथि। मधुमय वातावरण रहे, सब राजी-खुशी रहे, मधुरताक लोप नहि होइक।

भोर भेला पर जखन माछी भनर-भनर करय लागल आ दादी बूढ़ाक माथ पर बैसल कौआ टाहि टाहि कऽ रहल छल तँ बुझना गेल जे ओ एक निर्दोष बालक एहन चारू दिस आँखि गुड़ारि गुड़ारि ई सव देखि रहल होथि। ओ आदिम पुरखाक आत्माक रूपमे गाम क उपर रक्षा क दृष्टि सँ देखैत छलाह। ओ सबहिक समृद्धि एवं दैन्य क हेतु जिम्मेदार छलाह। हुनका सब केओ आदरो दैत छल और हुनका सँ भयभीतो रहैत छल। हुनक सम्मान मे कतेको उत्सव मनाओल जाइत छल। हुनक अभ्यर्थना मे ओहि पहाड़ी ढिमका पर तुरही बजाओल जाइत छल। लोक हुनके आगाँ दऽ के भोर मे दतमनि करैत करैत चलि जाइत छल। हाथ मे जल पात्र लऽके लोक हुनके आगाँ वाटे नदी दिस जाइत छल। एक व्यक्तिक आनन्द और दुख दोसर व्यक्ति सँ फराक छलै। ओ व्यक्ति जेकरा पर ओ कृपा कयने छलथिन, जेकर बेटा कें ओ भयंकर विमारी सँ बचा लेने रहथिन, जेकर हेरायल गाय कें भेटा देने रहथिन, जेकर गाछक फर कें पका देने रहथिन ओ सभ हुनकासँ अभिभूत भेल, हुनका आगाँ साष्टांग गोहारि करैत छल।

दादी बूढा सर्वकालीन पुरूखा छलथिन। लोक हुनक गोहारि करै छल। हुनक

प्रशंसा मे गीत गबै छल। सभ पीड़ित व्यक्ति जकर शिशु जनमइते मरि जाइत छलै, गाय-माल चोरि भऽ जाइत छलै, साल भरिक फसिल भासि जाइत छलै, जजात सूखि जाइत छलै ओहि पहाड़ी भिण्डा पर आबै छल, ठहरै छल, हुनक प्रार्थना करै छल ओ एहिवातक शिकाइत नहि करै छला जे हुनक मिनती नहि सुनल जाइ छन्हि। संभव छलै जे समस्या क निदान एके दिन मे नहि होइतै। कारण, शिशु तँ मरवे करितै और गाय हेराइते रहितै तइयो लोक अपने गलती मानैत छल, अपन भाग्ये कें दोष दैत छल, भगवान कें नहि। दादी बूढ़ा मे हुनक अजस्र विश्वास छलनि। ओ हुनका चढ़ौआ चढ़बैत छल जाहि सँ हुनक भविष्य सुरक्षित रहय। ओ सब तँ मनुक्खे छलाह जिनका आबैबला दिन क समृद्धि क आशा मे श्रम करबाक छलनि। संभव छलै आबै बला काल्हि बितलाहा काल्हि क अपेक्षा नीक नहियो होइतन्हि। दादी बूढ़ा देवता छलाह, हुनक पूजा आ चढ़ौआ चढ़ेबाक बेगरता सबकें विना विलम्ब क पूरा करबाक छलनि।

हुँका बूढ़ा अपना कें पसारने जाइत छलाह। लोक हुनक पीरी क माटि मथदुक्खी छोड़बैले लऽ जाइत छल। अपन बेरामी छोड़बैले लऽ जाइत छल। केओ केओ जकरा बच्चा नहि छलै से बच्चा पाबैक आशा मे लऽ जाइत छल-बिभूत जेकाँ। जतबे लोक हुनक माटि खखोड़ि कऽ लऽ जाइत छल ओ ततबे बढ़ल जाइत छलाह।

□□

बारह

सारिआदान भोरे उठल। ओ राति भरि सपना देखैत रहल। ठेंगा जानी कें एको नजरि देखैके ओकरा प्रबल इच्छा छलैक। संजोगसँ ओ भेंट होयवे करितै से ओकर विश्वास छलैक। भऽ सकै छलैक जखन ओ नदी क कात जाइत रहिते तँ ठेंगा ओकरा नदीक कात ठाढ़ भेटितै और ओकरा दिस देखितै, जाहि सँ ओकरा प्रसन्नता होइतैक। ठेंगा ओकर छलैक और ओ ठेंगाक छल। ओकरे सँ पूछल गेल छलैक जे ओकरा सँ ब्याह करै मे ओकरा कोनो 'उजूर' तँ नहि। से सोचि ओकरा एक पुलक भेल छलै। किन्तु आब ओकरासँ भेंट करबा मे केहन ओझरौहैट छलै। मुदा सारिआदान जखन नदीक कात गेल तँ ओकरा ठेंगा नहि भेटलै। ओ सोचलक कल्हुका ओते व्यस्तताक बाद से संभवो कोना छलै? ठेंगा मर्द छल और ओहि अवसर पर दारू पीबाक ओकरा पूरा अधिकार छलै। जौं ओ अपन व्याहक 'छेकाक' अवसर पर 'पीपा' भरि दारू पिउने होइ तँ ताहि मे अधलाहे, अनर्गले की छलै? और जौं ओ ओते पीविने हो तँ अबेर तक सुतवे करत। जे जते पीबैत अछि से तते काल धरि सूतैत अछि।

दुपहर भेला पर ठेंगाक माय गामक एकपेड़िआ देने, जोर-जोर सँ ठेंगा क नाम लऽके ठेंगा कें ताकने घुरय। ठेंगाक बापो जोर-जोरसँ वजौलकै—"ठेंगा छह हउ!"

जे ओकरा भेंटै तकरा सँ ओ एके सबाल पूछै, "की तों ठेंगा कें देखलहक अछि? की ठेंगा एतय आयल रहय?"

सारिआदान वैसिके माथक झोंट खोलिकय ओहि मे अण्डीक तेल रगड़ैत रहल। ओ व्याकुल ओ फीरीशान छली। ओ अपने आप सँ पुछैत छलि—" की ई सव सोचै छै जे हम ओकर वेटा कें कतहु नुका के राखने छियैक? गामक पेड़ा पर 'ठेंगा-ठेंगा' चिकरैत ओकरा कियैक ताकि रहल छथिन ओकर माय और बाबू

ो?" ओकरा हँसियो लागै जे ठेंगा एहन लोक नुकाएल कोना रहि सकैत अछि? ओ जतय कतहु रहय, नन्दी गामक हाट हो, 'डुमा गुड़ा' क हाट हो अथवा डुमरीपुटक वड़का हाट हो, ठेंगा सभठाम झलकैत रहैत छल। ओकरा के नुकाबितै?

एहि पर सारिआदान कें रातुक देखल सपना क स्मरण भऽ गेलै—ओकर देह मे मधुर सन सनाहटि दौड़ि गेलै। तकर बाद ठेंगा पर ओकरा तामस चढलै। भोर सँ कते काल बीति गेलै जँ ओ एहि बाटे अबिते तँ ओकर की बिगड़ि जइतै? ओ कोन तरहक पुरुष अछि?

जखन सारिआदान माँड़ पीबै छलि ककरो बोली ओकरा सुना पड़लै—हँ, ओ डम्ब टोलाक अलबैरिआ छल—"सन्तोष कुमारी तँ नहि छैक, भोरेसँ कतहु नहि देखना गेल। ओ तँ एना वाहर नहि जाइत छलि, नः आब तँ दुपहरोक भोजनक बेर बीति रहल छलै। माँडो भात खाय के बेर भऽ गेलै।" ओ कतय चलि गेल होयत? भगवाने जानै छथिन। प्रकृति सँ ओ किछु तड़क-भड़क मे रहै छली। युवकक पाछाँ भागैवाली, युवकक चेहरा कें देखैत रहै बाली, कोनो युवाक भेंट भेला पर अपन देहक अंग जानि वूझि के झाँपैले बिसरि जाय बाली। डम्ब जातिक लोक एहने होइते अछि। कते निर्लज्ज!

ई सव सोचैत सोचैत सारिआदानक हीआ बैसि गेलैक। ओ माँड़-भात नहि खा सकल। घरक भीतर गेल। बाकस खोललक और कपड़ा-लत्ता सरिआवे लागल। एक बाटी मे किछु पानि आ किछु तेतरि लेलक आ पितरिआ गहना कें चमकाबे लागल। किन्तु सेहो ओकरा सँ नहि उसरैत छलै, हाथ स्वतः धिम्मड़ पड़ि जाइत छलै। ओकर मोन मे ंका पैसि गेल छलै। दुपहरक फुसफुसाहट बेरिआ होइत-होइत जोरदार स्वर मे बदलि गेल छलैक। किछु लोक एम्हर ओम्हर दौड़ि रहल छथि, हिचुकि-हिचुकि कें कानैत कलपैत बाजि रहल छथि, से ओ सुनलक। हुनक गप्प-सप्प अस्पष्ट छलैक। गाम मे ठेंगाजानीक घर लगसँ एहन आबाज आबैत छल, डम्ब टोला सँ साँय-साँय क बीच बिलाप करबाक स्वर सेहो सुनाय पड़ैत छल।

सारिआदानक हृदय मे एक हूक उठलै। जखने सारिआफूल दौड़ि के अयलै और ओकरा कहलकै—"की तों नहि सुनलहक? तोहर बर ठेंगा जानी संगे ओ डम्ब छौंड़ी—सन्तोष कुमारी भागि गेल छह! भगवान जानथि ओ सभ कतय गेल?

हुनका घर मे सभ गोटय विलाप कऽ रहल छथि—कन्नारोहट लागल छैक। हम ओतय जा रहल छी। की तोंहू चलबह?"

ई सुनि सारिआदानक चेहरा पीअर भऽ गेलै। मुँह फक्क रहि गेलै। केबाड़ी आधा ओंगठा कें ओ हिचुकि हिचुकि कानय लागलि।

गामक मुखिया राम मुदुलि अपन बेटाक वास्ते आधा बनैत घर दिस राखल काठक ढेंग पर बैसल मुँह खोलने निहारैत रहल। घर एखनधरि पूरा नहि भेल छलै, खाली दिवार उठाओल गेल छलै। ओहि घरक एक कोना मे माटिक कदबाक ढेरी राखल छलै, दोसर कोना मे आधा चीरल बाँसक बत्ती राखल छलैक। एक दिस टाटसँ घेरल जगह मे 'फिरी घास' क ढेरी सेहो जमा छलैक। ओ घर स्नेहक प्रतीक छलैक। कोनो दिन ई घर बनि के तैयार होइते, एहिठाम गृहवासक उत्सव मनाओल जाइतैक, घर क जमीन और दिबार कें कारी, उज्जर, लाल घोरल माटि सँ रंगि-पोति के सजाओल जाइतैक। ओकर चार पर कदीमा और सजमनिक लत्ती लतरल रहितैक। करैला और सीमक लत्ती ओकर दिवार पर छिड़िआयल पसरल रहितैक। ओ घर ठेंगा जानी और सारिआदानक होइतैक। सारिआदान ओकर असोरा पर बैसि 'जोआड़' और 'सुअन्न' पिसैत रहिते। ओकर चार मे मएना और बगड़ा खोंता लगौने रहितैक। ओकर घरक केबाड़ीक कोना मे अपन बच्चा कें आश्रय देबाले कुम्हरा (भौंरा) अपन घर बनबिते। कुत्ता और कौवा ओकर आँगन मे आबैत रहितै। सारिआ और ठेंगा क उत्पाती बेदरा सब ओझराएल केश, पेट पर मैल लगौने, मुँह सँ लेर टपकाबैत, नाक सँ नेटा-पोटा सरसरबैत ओहि घर मे घर बाहर करिते। ओ सभ अपन माय-बाप कें चिन्ता दैत ओही घर मे पोसबिते। केओ बापक कंठीमाला कें घीचिते और केओ माइक साड़ीक सहारासँ ठाढ़ धूल-धूसरित नेना भुटका आँखि मे काँची-पीची भरल नमहर कान बला पहाड़ी छौंड़ा सब खेलाइत धुपाइत रहिते।

राम मुदुली हत प्रभ भेल बैसल छल। ओ घर दिस टकटकी लगौने निहारैत रहल। ओकर छाँह छोट भऽ गेल छलै, ओकर मुँह फक्क छलै। ठेंगाक माय छाती पिटैत, गाल और केश नोचैत, चित्कार करैत कतेको बेरि घर सँ बाहर-भीतर भेलीह। अन्त मे राम मुदुली अपन भाव शून्यता सँ बहरायल। ओ अपन माथ दुनू ठेहुनाक बीच दाबि नेना जेकाँ कानय लागल। दुख सँ कातर होइत, ओकर देह

हिलैत रहलै। काठक सील जाहि पर ओ बैसल छल सेहो हिलैत रहलै। दूर सँ ओ एक पाथरक मूर्ति जेकाँ बुझना जाइत छल। ओकर कंठ सूखि गेल छलै। ओकर लग गेला पर खाली ओकर सिसकारी सुना पड़ैत छलैक।

सात दिन बीति गेल। राम मुदुली ओही मानसिक अवस्था मे रहल। अरोस-पड़ोसक लोक जखन ओकरा लग आबैक तँ ओ अपन घाढ़ झुकौने रहैत छल। धीआ-पूता उड़ल आँखि सँ ओकरा दिस देखैत छल। गामक बूढ़ लोक मे चांचेरी हजाम ओकरा सान्त्वना दैत कहलकै—"नायक हउ! भागक झमाड़ तँ सहैये पड़तह। आब एहि विषय पर कते दिन धरि सोचबह। बिना खयने-पीने कते दिन बीति गेलह। उठह, किछु खा लैह और गाम बला कें एक छोट छीन भोज दहक। नहि तँ तोरा जाति सँ बारि देतह। चलह, भाइ, उठह।" राम मुदुली किछु नहि बाजल। सान्त्वना देबऽ बला दिस ओ बड्ड करूण ओ दयार्द्र भऽ के देखै छल। हरी जानी अपन दोस्तक दुख नहि बर्दास्त भेला पर ओकरा बुझाबे गेल। मुखिआ कें अपन बाँहि मे लैत ओ बाजल—"भाई! है भाई!" मुदा राम मुदुली अपन घाड़ और झुका लेलक और फफकि फफकि के कानैत रहल। ओकर लोरसँ तीतल माटि पर दाग बनि जाइत छलै। ओकरा जे समझाबे-बुझाबे जाइत छल ताहिसँ ओ थाकि के चिढ़ जाइत छल।

ठेंगा जानी और सन्तोष कुमारी कोरापुट भागि के चल गेल और ओतऽ सँ आसाम चलि गेल ई समाचार लुल्ला गाम पहुँचल। दशमन्तपुरक फिलिमन डम्ब किछु जानवरक खाल बेचय कोरापुट गेल छल। घर घुरैत काल ओ ओकरा दूनू कें देखने छल। ओकरा दूनू कें जे-जे ताकैले गेल छलाह तिनको सभहिक सएह कहब छलनि। ओ सभ ओएह कयने छल जे पहिनेहु कतेको गोटए कयने छल। कर्जक अदायगीसँ असमर्थ भेला पर अथवा कमौनी खटौनी करबा लेल लोक गाम छोड़ि के चलि जाइत छल—किछु शहर मे जाके बैसि रहैत छलाह, किछु विदेशे मे मरि जाथि, थोड़बे गोटे गाम घुरैल छलाह।

राम मुदुली कें लागै जे माथक संतुलन गड़बड़ा गेल हो, ओ बताह जेकाँ करय लागल। गाम क लोक व्यथित भेलाह। ई सही छैक जे ओकर बेटा गाम सँ भागि गेल छलै। आब ओकर मृत्युक बाद ओहि घर सँ केओ गामक मुखिआ नहि बनितैक। ओकर सब आश नष्ट-भ्रष्ट भऽ गेल छलै। मुदा गाम तँ रहिबे करितै,

समाजक लोक तँ रहिवे करितैक। जँ मुखिये एना बैसि रहितै, ओकरे ई हाल छलै, तँ गामवासीक के ख्याल राखितैक? लगानी के ओसूल करितै? आपसी झगड़ा कें के फरिछौंट करितै? गाम मे हाकिम हुक्काम, अमलाक अयला पर के हुनक आवभगत करितै? आब तँ लोक मुखिआ क विना भऽ गेल ने? गाम क तँ भट्ठा बैसि गेलै ने?

दिन बितैत गेल। गामक लोक मुखिआ नहि होयबाक समस्याक शीघ्र समाधान ताके लगलाह। संभवतः किछु दुष्ट डूमा (प्रेतात्मा) ओकर घर पर कुदृष्टि राखि रहल छलै। गाम क भलाईक हेतु दुष्टात्मा डूमा कें गामसँ भगबे पड़ितै। एलिओ ईसाई छल, ओ मुखिआ क प्रिय छल। गाम मे एहन केओ नहि छल जे मुखिआ एहन नीक लोकक हीत नहि चाहिते। पादरी और एलिओ कें सन्तोष कुमारी संगे ठेंगा जानीक भागि जायब एकदम्मे नीक नहि लागलै। हुनक विश्वास छलैन्ह जे एकदिन दूनू गोटे गाम घुरि आओत। साहिबक आज्ञासँ ठेंगा जानी कें चर्च अपन बना लेत। शीघ्रे ओकरा ईसाई बना लेल जइतै और जैं कि ठेंगाक पिता मुखिआ छल आगाँ चलि के ओहो मुखिआ क पद पाबि जाइते। गाम मे पहिल बेर एक ईसाई मुखिआ बनाओल जाइते। रवि दिन गिरिजा घर मे रेवेरेन्ड (पूज्य) सोलोमन क उपस्थिति मे मुखिआ क संकट मुक्ति क हेतु एलिओ प्रार्थना करौलक। एलिओ आओर अन्य गोटे परम पिता परमेश्वरसँ जे स्वर्ग मे छलथिन्ह और संसारक दुखक भार कें हल्लुक करबा ले सबटा दुख अपने उपर लऽलै छथिन्ह और अपन पुत्र कें सलीब पर चढैक इजाजत दऽ देलथिन्ह। ओ सभ मिलि मुखिआक दुख कम करबाक हेतु प्रार्थना केलथिन्ह और हल्लेलूजा गाओल गेल और अन्त मे सब केओ कहलकै 'आमीन'।

एलिओ सोचलक पड़ोसी होयबाक नातासँ ओ मुखिआ क प्रति अपन दायित्व निभौलक। एक दोस्तसँ जे आशा कयल जा सकै छल तते ओ कयलक। किन्तु की एहि सब सँ राम मुदुलीक दुख कनियों घटलै? ओकर पत्नीओक हताश मानसिक स्थिति बनले रहलै।

गाम क लोक जोतखी दिशारी कें पुछलकै। ओ अपन पतरा-पोथी उनटौलक। पहिने एक नाकसँ तखन दोसर नाक सँ जोरसँ श्वास छोड़ैत ओ पोथीक पन्ना पर विचारलक। फेरो शराब क किछु घोंट पीलक। ओ अपन माथ कुड़ियबैत आकाश

दिस नजरि खिरौलक। जमीन पर किछु रेखाक चिन्ह-चाक दऽ के किछु ओठ पटपटौलक। अन्त मे ओ बाजल जे दादी बूढ़ा के किछु खास पूजा देबाक चाही। गुरुमाई नाचत। धांगड़ी सभ सेहो नाचति। मुखिआ अपन पत्नी संग पूजा मे भाग लेताह। खाली दादी बूढ़ाक आशीर्वाद सँ हुनका दूनू गोटे कें मानसिक शान्ति भेटितैन्ह। दुष्ट प्रेतात्मा (डूमा) मुखिआक घर मे अपन बास कऽ लेने छल ताहि दुआरे ओकरा पर ओतेक विपत्ति अएलैक। पूजा कयलाक बादे दुष्टात्मा भागि सकतैक।

अगिला पूर्णिमा कें खास पूजाक तैयारी मे सब गोटे जुटि गेलाह।

□□

ई विशाल विश्व अंधकार और प्रकाश मे क्रमशः संकुचित और प्रसारित होइछ। कहिओ-कहिओ अमावास्या रात्रि मे ई एते संकुचित भऽ के कारी कम्बल मे लपेटल अतिक्षीण आकारक भऽ के सुति रहैछ।

आधा चन्द्रमा ओहिना चमकि रहल छल जेना हृदय मे पैसल कोनो स्मृति हो। नील आकाश मे तारा एना छिड़िआयल छल जेना मुट्ठी भरि मूढ़ीक दाना हो जाहि मे किछु आसमान मे पसरि गेल हो और किछु लुढ़कि के विलीन भऽ गेल हो। आशा और निराशा क बीच सपना और अनुभव क बीच अनेक लोकक जिनगी भगजोगनी जकाँ चमकैत रहैत अछि। ओहि मे एक कें दोसरा सँ अलग करब बड़ कठिन छैक।

मुखिआ अपन भावना कें शब्द मे व्यक्त करबाक कला नहि सिखने छल। से ठीक ठीक के कऽ सकैछ? ओ निर्वाक् भेल बैसल रहै छल। कखनो-कखनो ओ लक्ष्यहीन बौआइत रहै छल। ओकरा वास्ते जीवन क अर्थ एक रोमांटिक कथा नहि छलै। ओकर जीवन सचमुच अनुभवसँ भरल छलै जेना ककरो शरीर मे धुरदा-गरदा। मुखिआ के लागै ओ डूबि रहल अछि। ओकर आत्माक बाँसुरीक वाजब बन्न भऽ गेल छलै। किछु चमकि जाइ छलै और फेर पसरैत अंधकार मे डूबि जाइत छलै। लागै जे ई अंधकार सब कें अपना मे डुबा लितैक।

बसंत आयल। अचानक मुखिआ कें लागलै जे कतेको दिन बिना किछु कयने ओ बिता देलक अछि। बहुतो काज पड़ल छलै। ओकरा लागलै जे ओकर शरीर जीवन्त भऽ गेल छै। चारू दिस काजक हलचल छलै। नामहीन चिड़ै जंगल मे चहकि रहल छल। अज्ञात फूल सभ फुटे लागल। आमक मंजरीक गंधसँ वायु भरल छल। मधुमाछी भनभना रहल छल। ओकर खोंता गाछक ठाढ़ि पर और पहाड़ीक खोह मे लगौल जतऽ ततऽ लटकल छलै।

बसन्त क समय छल। चैतक उत्सव शीघ्रे शुरू होइबला छल। लोक आनन्द

मग्न होयत। मुदा दीन दुखी ओ गरीब गुरबा कें ताहि सँ की भेटितै? चढ़ैत सूर्यक गरमी घास कें झुलसा देतैक। फूल कुम्हला जेतैक। आमक नवमंजरी ठाढ़ि सँ झड़ि जायत। कुम्हलायल और झड़ल फूल पर तितली और मधुमाछी नहि जाइ छल। एहि अधमुइल पृथ्वी पर एखन जे फतिंगा ओ तितली जन्मल छल उपरका तड़क भड़कदार संसार दिस आकर्षित भेल छल, ओ नीचा नहि उतरैत छल। तबधल रौद मे झुलसल जड़ल घास संगे कुम्हलायल सूखल फूल मिज्झर पड़ल छल और उपर आकाश कें निहारैत छल। ओतऽ छोट-छोट चिड़ै सबहिक पाँखि आगि एहन ललौन अथवा वासन्ती आसमानक रंग क छल।

राम मुदुलीक उत्साह कें प्रकृतिक सुन्दरता नहि घुरा सकल। चारू कानक एहि सुन्दर दृश्य और ध्वनि क बीच ओ एतोत्साहित भेल रहल। बसन्तसँ ओकरा झड़की उठै जेना ओ आधा सुखायल घास हो। ओकरा भेलै जाहि जानल-बूझल रस्ता पर ओ कतेको दिन सँ चलैत आबि रहल छल ताहि पर चलैत चलैत घनघोर जंगल में भटकि गेल हो। ओकरा फेरो अपन रस्ता नहि भेटितै। जेना ओ हेरा गेल हो।

हरी जानी मुखिआक कन्हा पर हाथ धरैत बाजल—"नायक भाइ? हउ, नायक भाइ।"

गौंवा ओकरा सँ भेंट करै किन्तु ओकरा सबके की कहबाक छलै? आखिर ओ सब ओकर के छलै? ओ सब आबिके ओकरा कियैक तंग करै छै? कियै चिब्बै छै? सतबै छै? केओ कहै—की मांड़-भात खेलह की नहि? ओतऽ बैसि के दिन भरि रौद मे कियै शरीर कें तपबैत रहै छह? भीतर मे कियै नहि बैसै छह? भीतर छाँह में चलि जाह।

ओ सब के छलाह? ओ सब आबि के और कियैक ओकरा दुख दै छलथिन्ह? ओकर छिड़िआयल बिखरल केश, गोल समेटल पातर ताग एहन लागै छलै। ओ दाँत पीसैत, आँखि चिआड़ैत, ठोर काटैत, ओ अपन आधा बनल घर कें टक टकी लगाके देखय। हँ, ओकरा बेटा छलै, मात्र एकेटा बेटा! किछु दिन पहिने ओ एहीठाम छलै। आब ओकरा अपन बेटाक अस्पष्ट छाँहे टा नहि स्पष्ट झलक मोन पड़ै छै। ओ छौड़ा ओकरा बाप कहै और बेटाक खुशी और समृद्धि लेल ओ दादी बूढ़ाक गोहारि करय। ओकर बेटा नमछुरूक छलैक जेना शाल क गाछ हो। छौंड़ा, बड़ अनमोल छलै। तकर बाद...ओह...तकर बाद आगाँ ओ नहि सोचि सकल।

ओकर बेटा भागि गेलै। ओ ओकरा छोड़ि देलकै। की ओ मरि गेलै? ओकरा लागै ओकर मुइल बेटा क लाश घर मे नुकाय के कतौ राखल होइ। ओकर बेटा! ओकरे खून, ओकरे मांउस, ओकरे चित्त और ओकरे स्वर! ओकर अपने बेटा! ओह!

राम मुदुली ढवकल आँखिसँ अपन घर कें देखैत रहल। ओकर मोनक कोनो कोन सँ, ओकर अन्तस्तल सँ, वेदना निकलि जाइत छलै, पसरि जाइत छलै और ओ हबोढ़कार भऽ कानय लागैत छल। ओकर आँखिसँ नोरक बड़का-बड़का ठोप खसय लागैक। ओकर मुँहक सेप अन्हर जाली बना दैक, ओकर आँखि सँ लोर ओहिना चुबै जेना पसाही लागल आमक मंजरी हो।

ठेंगा क माय एक कोन मे पड़ल रहैत छली, अशोथकित। ओकर बेटा कतय छलै? ओ कतय चल गेल? आब ओ अपन मायसँ माँड़-भात मांगय नहि आओत। की आब ओकर कोरा मे माथ राखि के ओ कहियो नहि कहतै—माँ! गे माँ! हम मिठ्ठा खेबौ। हमरा मिठ्ठा दे।

ओ बिलपैत बिलखैत रहलि। ओकर स्वर कते सुन्दर छलै! कते मधुर! की प्राकृतिक रूपसँ बहरायल सब गीत मधुर नहि होइछ? ओकर विलाप भरल गीत हवा कें बेधैत दूर, बहुत दूर पसरि जाइत छल। ई विलापक गीत—ओहि कालक उपयुक्त वसंतक गीत सँ बेसुर भेल छल। किन्तु सबटा मिज्झर भऽ गेल छलै—मधुर, मधुगंधित कुसुमित वातावरण, चमकैत सूर्योदय और दर्दक टीससँ भरल विलपैत स्वर!

❑❑

चौदह

पूर्णिमा आयल। राम मुदुली नायक (मुखिआ) क मोन धीरे-धीरे नीक भेलै। एखनो खेती पथारी पर ओते ध्यान नहि दैत छल तथापि कने कने मांड़-भात खाय लागल छल। स्थिति मे नहु नहु सुधार होइतै। ठेंगाक माय एखनो कनिते रहैत छली तथापि आब घरक कोना मे दुबकलि नहि रहै छलि और भनसा करब शुरू कऽ देने छली। ओ आब जोरसँ ठोहि पाड़ि के कनैत रहैत छली। पहिने सँ किछु बेशी ताकत भऽ गेल छलै। दादी बूढ़ाक कृपासँ सब किछु अपन स्थान धऽ लितैक।

दिशारी अपन फरमाइश कऽ देने छलै, तकर उल्लंघन नहि होयबाक छलै। दादी बूढ़ा कें पूजा देबाक छलै। एक परजा जातिक युवक एक डम छौंड़ी सङ्ग दूर आसाम दिस पड़ा गेल छल। एकटा कुकर्मी काण्ड भेल छल। मुखिआक दुख कें देखि लोक इएह बुझैत छल जे ओ बताह भऽ जायत। एखनो स्पष्ट रूपें किछु कहब असंभव छलै। दादी बूढ़ाक आशीर्वादी तँ चाहबे करी छलै। यद्यपि चैत नहि आयल छल। गौंवा अपन आदिम पुरखाक गोहारि पहाड़ी क उपर करबे करिते।

घर सब रंगल पोतल गेल। मुरान नदी मे परजा जातिक नवयुवती सब नहाय लेल अयलीह। पहिनहि जेकाँ सारिआफूल सारिआदान के बजौलकै—"गै, सारिआदान!" सारिआदान प्रकम्पित स्वरें बाजलि,

—"हँ, हइ!"

—"ठेंगा जानी गाम छोड़ि के गेल तँ जाय दहक। बहुतो जानी तोहर हाथ पकड़बाक हेतु अओतह।" ओकरा ठेंगासँ घृणा भऽ गेल छलैक, जाहि कारणें कतेको सालक ओकर प्रेम डहि कें छाउर भऽ गेल छलैक। ओ सर्वकालिक सुन्दर नारी छली, जाहि पर कतेको युवा पुरुष चुम्बक जेकाँ आकर्षित होइतथि। सारिआफूल और सारिआ दान पुनि एक बेर सखी बनि गेल छली। कहिओ हुनका बीच मे ठेंगाजानी आबि गेल छल। मुरान नदीक धार ओकर स्मृति कें धोय के बहा देलकै।

आखिर पूर्णिमाक राति आबिए गेल। खूब पैघ गोल चन्द्रमा आकाश पर चढय लागल। पहाड़ीक चोटीसँ आनन्द क लहरि उठैत रहल और पूरा क्षेत्र मे पसरि गेल। एक दोसराक डांड़ मे बाँहि देने, युवती सभ दादी बूढ़ा कें घेरि के ठाढ़ भेली। युवक सव चारू दिस उत्साहसँ घुमे लागल। 'रान्धा' दारू खूब पीअल गेल। दिशारी मंत्र पढलक। गुरुमाई नाचल। जखन गुरुमाई पर देवता क प्रवेश भेलै तँ ओ भगता खेलाइत बाजल—''ठेंगाजानी एक दुष्ट डूमा (आत्मा) छल। सन्तोष कुमारी से हो दुष्ट डूमा छली। हुनक एक दोसरक संग भागि जायब तँ पहिनहि सँ भावीये छल। हम दादी बूढ़ा तोहर सभहिक जन्मक पहिनहि सँ ई बात जानैत छलहुँ। तों सभ हमर धीआ पूता छह। तोहर नीक-अधलाह करब हमरा हाथ मे अछि। दारू पीबह, नाचह और गाबह। हमरा दारू चढ़ाबह, मुर्गा देह, तोहर किछु अनिष्ट नहि हेतह, से भरोस करह।''

ग्रामीण सभ मे एक आनन्दक लहरि पसरि गेलैक। लोक शराब पीलक। गुरुमाईक उपर सँ 'भगता' उतरलैक, एहि हबगबी मे नाच शुरू भेल। रेभेरेन्ड सोलोमन और एलिओ कें एहि विधर्मी लोकाचार पर विश्वास नहि छलै। ओ सब ओहि भीड़-भड़क्का सँ सँहटिकऽ बतिआइत रहला—''इ लोक सभ एहि प्रकारक शैतानक पूजा कऽ रहल छथि। एहि सँ हिनकर सभहिक शीघ्रे पतन हेतैन्ह और ई लोकनि नरक जेताह। हिनका सभकें देवदूतक दर्शन कहिओ नहि हेतैन्ह। एलिओ और सोलोमन कें गुरुमाईक उपर भगता कें खेलैत बाजल बात पर विश्वास नहि छलैन्ह। हुनका सभकें एहि देव मूर्तिओ पर विश्वास नहि छलैन्ह। मुदा ओ सभ ओतऽ वितरित मुफतौआ दारू कें नहि छोड़ि सकैत छलाह। ओ सभ तखन धरि दारू पीबैत रहलाह यावत धरि होशो हबास बिलकुले नहि रहलनि। एलिओ अपन हाथ पसारि जमीन पर पड़ि रहल और धांगरी सभकें नाचै ले उकसाबैत रहल। सोलोमन कें होश नहि रहलैक। ओहो नाचय लागल। ओ नाचैत घेराक बीच मे पैसि गेल और नाचैत, माथ हिलबैत करतारी पिटैत रहल।

दादी बूढ़ाक आगाँ खूब बड़का घूर मे आगि जराओल गेल छल। पड़बा और मुर्गीक बलि देल गेल छल, फूल चढ़ाओल गेल छल। आगिक प्रज्वलित लाल धधरा मे दादी बूढ़ा दूरे सँ देखाय पड़ैत छलाह। ढोलक आवाज, डुंग डुंगा क ध्वनि, धांगरा-धांगरी क किलकारी और चित्कार हवा मे व्याप्त छल।

मुखिआ आ ओकर पत्नी सेहो आयल। दूनू गोटय चुपचाप बैसल रहला।

मधुर हवाक झोंका हुनक चेतना कें जगौलक। मुखिआ कें भेलैक जेना अनजान रस्ता पर चलैत चलैत कोनो वस्तु सँ ठेसा गेल हो। बीतल बात सब ओकर नजरि क आगू आबय लगलैक। ओहो तँ कहिओ धांगरा छल। बहुतो पर्व-त्योहार, उत्सव पर ओ नाचल छल। ओहो डुंग डुंगा बजबैत छल। ओहो धांगरी रूप मे ठेंगामाय कें बड़ कठिनता सँ जीति के आनने छल, जे आइयो ओकरा संगे छलैक। एहि बीच मे कतेको बात बितलै मुदा ओ अछिये। ओकर धांगरी सेहो छलैके आओर ओएह पूर्णिमा राति फेरो आयल छलै। आदिम पुरखा 'दादी बूढ़ा' सेहो ओहिना ठाढ़े छलै। मुखिआ कें कहिओ ठेंगा नामक एक बेटा भेलै ओहो पैघ भऽ के धांगरा बनि गेल छलै। डुंग डुंगा बजबै छलै। धांगरी सभ सङ्गे नाचैत छल। ओ एक धांगरी कें चुनि के अपन रस्ता फराक कऽ के चलि गेल। ओ मर्दाना बच्चा छल जे अपन मर्जी सँ गेल! ओकर अपन भाग्य।

धूल भरल मुदा आनन्ददायी नाच देखि राम मुदुली प्रसन्न चित्त भेल। सान्त्वना भेटलै, विस्मयकारी नाच ओकर मोन कें मोहित कऽ देलकै। ओ ओहि रोगी जेकाँ छल जे बहुत दिन पर रोग सँ मुक्ति पौने हो। आब जेकरा ताकत आबि रहल हो। ताकत पाबैक कोशिश कऽ रहल हो। तहिना, राम मुदुली बाँकी जिनगी जीबाक साहस जुटबैक चेष्टा करय लागल। पूजा समाप्त भेला क बाद ग्रामीण सभ गामक चौबटिआ धरि नाचैत नाचैत पहुँचल। परजा जातिक नाच एक बेर शुरू भेला पर जल्दी खत्मे नहि होइत छैक। हुनका सभहिक वास्ते ई राति भरिक उत्सव होइछ। यावत् ओ सभ पूरा पूरी थाकि नहि जेताह तावत् धरि ई नाच चलत।

चाँदनी छिटकल पहाड़ी क ढिमका पर राम मुदुली बैसल रहल। ओ जगह छोड़बाक मोन ओकरा नहि होइत छलै। ओकर हृदय क अन्धकार सँ इजोत क किरण बहराइत बुझना गेलैक। आइ ओ किछु सोचि सकल, आइ ओ क्रोधित होयबाक स्थिति मे आयल, आइ ओकरा अपने उपर क्रोध भेलै, अपना बेटा ठेंगाक उपर क्रोध अयलैक आओर ओहि सम्मोहित करै बाली छौंडी, सन्तोष कुमारी पर क्रोध अएलैक, जे कोनो आन डमे जकाँ सम्मोहन क कला जानै छली। ओ मनोहारी चान्दनी सँ गुग्ध भेल और सबकें क्षमा कऽ सकल। सब किछु पहिनहि सँ लिखलाहा छल। जे हेबाक छल से भऽ गेल। केओ अपन भाग्य कें नहि बदलि सकैछ। और सब केओ दादी बूढा क पीड़ी कें छोड़ि कें चल गेल। ओ जगह पूर्ण शान्त भऽ गेलै। खाली गामक बीच क चौबटिआ सँ ढोल क ध्वनि आओर

नाचनिहार क आनन्द सँ भरल उत्साहित करैबला स्वर लहरी पहाड़ सँ टकरा के गुंजैत छलै। ई ध्वनि दोसरो पड़ोसीा गाम सब मे पहुँचैत छलै। किछु कालक बाद कोलाहल कम भेलै। बूढा चारू दिस देखलक। केकरो नहि देखि ओ दौड़ि के हलसिकय दादी बूढा लग गेल। अपन सब विचार कें रोकि ओ देवमूर्ति क आगाँ ठाढ़ भऽ गेल। ओकरा लेल यैह उचित समय छलै, जखन ओ आओर ओकर ईश्वर आमने सामने विना कोनो व्यवधान-बन्धन कें एक दोसराक आगाँ ठाढ़ हो। दादी बूढा क पएर पर बैसि ओ ठोह पाड़ि के कानय लागल। कम्पित स्वर मे ओ शिकायत, उलहन, उपराग देलकै—"की तोरा इएह करब उचित छलह? हमर की दोष छल? तों हमर भरोस तोड़लह, सब किछु नष्ट भ्रष्ट कऽ देलह। यदि तोहर कहव छह जे ठेंगा दुष्ट डूमा छल तँ तों नीक डूमा कियै ने पठौलह? हम ओकरा पोसलहुँ, मुदा तों ओकरा हमरा सँ फराक कऽ देलह। तों हमरा सँ हमर भाग्य छीनि लेलह।"

राम मुदुली फफकि फफकि के दादी बूढा क पयर पर खसि अहुरिआ काटि के कानैत रहल। दादी बूढाक पयर मुरगी और पड़बा क रक्त सँ सराबोर छलनि, दारू सँ भीजल, तीतल, डूबल छलनि। अडिग ठाढ़ भेल निर्वाक निस्पन्द छलाह ओ।

राम कें तखन होश भेलै जखन ओकर पत्नी ओकरा ताकैत हेरैत ओतऽ पहुँचलै। ओ ओकरा अपन बाँहि मे लऽ लेलकै और बूढा कें ठाढ़ हेबा मे सहारा देलकै। दूनू गोटे घर मुँहा भेल। अपन पूरा ताकत जुटाकय, पूरा साहस बान्हि बुढिया अपन पति कें आराम देलकै। ओ वाजलि—"जे किछु भेल से पूर्वे सँ लिखलाहा छल। यदि तों अपन मोनक शान्ति विलटा देबऽ तँ हम कोना जीअब? आवह, घर चली।"

❑❑

पनरह

उत्सव क मास चैत मास आयल। पर्वतिया जीवन मे उल्लास आयल। कुसियार क दिनक बाद सजमनि और खीरा क दिन आयल, बैसाख आयल आओर तकर पछोड़ धेने आयल जेठ, जखन बुऔनी शुरू होइछ। लोक कें कनियों फुरसति, पलखति नहि। निरानन्द आकाश मे छाउर क रङ्ग क चेफड़ी उड़ि रहल छल तकर बादे आयल कारी कारी बादरि बला मेघ जे हवाक झोंका मे ऐंठैत पृथ्वी कें प्रकम्पित करैत ठनका आनलक तकर संगहि प्रथम वर्षा क फुहार सेहो। मुखिआ अपन खेत क काज मे बाझल रहल। संगे संग गाम क समस्या क सेहो फरिछौंठ करैत रहल। ओ कखनो निठल्ला नहि रहै छल आब। ओकर पत्नीओ नीक भऽ गेल छलै। आब ककरो एकर स्मरणो ने होइक जे ठेंगा जानी और संतोष कुमारी गाम छोड़ि के चलि गेल छल। उपर मे भगवान छलखिन और नीचा मे धरती। लागलै जेना किछु नहि बदलल होइक, सब किछु ओएह, ओहिना छलैक।

परजा जाति क लोग कहै—"देखह अपन ठाकुर 'दादी बूढा' कते दयावान छथि, कृपालु छथि जे जखन केओ हुनका लग गोहारि करैछ तँ ओ हुनकर सुनै छथिन। केओ सोचिओ ने सकै छल जे मुखिआ ओहि झटका कें सहि सकत। आब देखह, जे के ओकरा ठीक होइ मे मदद देलकै? अपन दादी बूढा सैहने? हुनके कृपा सँ सुन्दुरू परजा कें व्याह क सात सालक बाद बेटा जनमलै। मिल्कू जानी क भैंस क बिमारी ठीक भेलै। गैर कानूनी शराब बनबै मे लूकू जानी जे जहल गेल छल से हुनके कृपा सँ छूटल। ई सब तँ हुनक थोड़बे चमत्कार भेल। जकरा हुनका पर भरोस छन्हि, विश्वास छनि से आओरो फल पाबै छथि। दोसरा गोटे कोना बूझत? डम्ब जातिक लोक कें हुनका पर आस्था नहि छनि, तँ नहि रहौन। तैं कि हुनकर उन्नति होइ छनि? पीटर, साइमन, पाल, माइकेल कें देखह। मुसुलमुण्डा गाम मे माउसक खातिर गाय काटैक दुआरे ई सब गोटे गिरफ्तार भेल छल। मासिक और बेनियामणि गैर कानूनी दारू बनबै छल, पकड़ल गेल, गिरफ्तार भेल, दंड भोगलनि

आओर जहलक खिचड़ी खेलनि। कियैक? कियैक तँ दादी बूढा हुनका सब सँ रूष्ट छलथिन।''

दोसरो गामक लोक अपन मोटरी और छत्ता लऽ के पहाड़ी रस्ता सँ जाइत काल दादी बूढा लग माथ झुका लैत छथि तखन आगाँ बढै छथि। लोकक कहब छैक, ई घनघोर घटा और मुसलाधार बरखा दादी ए बूढा करबै छथिन्ह। गहींर घाटी मे अन्हड़-बिहाड़ि आओर घटाटोप अन्हार राति मे बाघ क गर्जनो सँ बेसी ठनकैत हुहुआइत बरसात मे दादी बूढा निश्चल ठाढ़ रहै छथि और ठनका क बज्र स्वर मे अपन आदेश घोषित करै छथि। हुनक हुकुम सँ मारीचिमल क बन मे सूप क सूप वर्षा होइ छै और आकाश मे बादल उड़ै छै। ओएह आज्ञा दैत छथिन तखन केन्डापाड़ा क्षेत्र मे वर्षा होइ छै, तखन लारिस घाटी होइत नरगच्छा मे मूसलाधार वर्षा होइ छै आ ओहीठाम घाटीक दोसर दिस एक दम सूखा, आसमान मे कोनो बादल नहि। जखने कखनो कोनो चिता सँ धुआँ लहराइत ऊपर उठै छल तँ लोक कहि दैक—देखह, ओएह दादी बूढा 'पिंका' चुरूट पीबि रहल छथि।

आखिर ओ परजे जातिक थिकाह ने? जौं ओ 'पिंका' चुरूट-बीड़ी नहि पीबथि तँ जाड़ सँ ठिठुरैत, अन्हार राति मे कोना अपन चिल्हका, नेना, बेदरा, खरहू सबहिक पहरेदारी करताह? गीदड़ क सोन्हि एहन गरम खोपड़ी मे बैसल माय लोकनि अपन धीआ पुता कें दादी बूढा दिस देखबै छथि। बच्चा सब फुसफुसाइये—''ओएह ओही ठाम, ठाढ़ छथि दादी बूढा।''

ई सब हुनके खेल। हुनक पार के पाओत?

बरखा हेठ होइते बूढा दिशारी बेराम पड़ल। ओकरा बोखार सङ्ग छाती मे दर्द छलैक। असकरे रहितो ओ ककरो अपन सेवा-बरदाइस्त करे नहि देलकै! ओना ओकर पड़ोसी ओकर ख्याल राखिते छलै। दिशारी किछु 'रान्हल' दारू पीलक, किछु जड़ी-बूटी खेलक। बहुत मुश्किल सँ घर सँ दादी बूढा स्थल धरि नेङ्गराइत नेहोरा करैले ओतऽ पहुँचल। दादी बूढा पहाड़ी ढिमका पर ठाढ़ अपन चमकैत आँखि सँ बिदोरि के ओकरा देखैत रहलखिन। बूढा दिशारी गाम क बेदरा के 'हुंका बूढा' क विभूति आनैले सहो कहलकै आओर ओ तकरा अपन गरदनि आ ललाट पर लेप लेलक। विमारी क कारणें ओ कमजोर भऽ गेल छल। ओकर घर क चूबैत चार सँ पानि रिसाइत छलै। ताहि सँ खोपड़ी क भीतर जमीन सिमसिमाह आ सरदियाह भऽ गेल छलैक। बूढा दिशारी सिमसिमाह माटि पर 'फिरी' घास क

सेजौट क उपर फाटल केंथरी, धोकड़ा क उपर पड़ल छल। एक फाटल चद्दरि सँ ओ अपन देह कें झांपने छल। दादी बूढा पर ध्यान लगौने ओ किछु बुदबुदाइत छल। ओ अपन छाती क बाम दिस हाथ सँ दाबने छल, ओकरा ओतऽ बड्ड जोर दर्द होइत छलै। ओ अपन देवता पर ध्यान लगौने रहल।

दादी बूढा कारी और चमकैत सिन्दूरी रंग सँ पोतल धारी मे, पहाड़ी ढिमका पर ठाढ़ छलाह—एकटा मुरेठा बान्हने, आँखि बिदोरि के देखैत, चेहरा पर मोहित करैत मुस्कान जे ओ अपने बड्ड प्रसन्न आओर अपने आप मगन होथि। पूरा दुनिआँ क दुख और आनन्द क ताकिद राखथि तैं ललाट पर झुर्रीदार चिन्ताक रेखा छलनि। केतेक सुन्दर! कते दयालु! कते शक्तिमान! 'हुँका बूढा' लगे मे ठाढ़ छलखिन।

सत्तरि साल क बूढ़ा दिशारी अपन जिनगी भरि जते सुन्दर आकार देखने छल, सबटा कें स्मरण करबाक चेष्टा कयलक। ओकरा बुझना गेलै ओ सब आकृति दादीए बूढा सँ विकीर्ण भेल छलै। ओकरा बुझना गेलै दादी बूढा ओकर बेरामी अवस्था मे देखैले ठाढ़ कहि रहल छथि—"तों गाम क पुरहित जोतखी छह! छहने? तों हमर वड़ निकट रहैत छह। जौं हम तोहर खिआल नहि राखबउ तँ ककर खिआल राखबै?"

धीरे धीरे दिशारी क हालत खसैत गेलै; ओकर वाक् बन्द भऽ गेलै। ओ बेहोशी मे बड़बड़ाय लागल ओकर ठोंठ सँ घर् घर् आवाज आबै छलै। छातीक दर्द वर्दाश्तक वाहर छलैक। कखनो ओ अपन पत्नी कमली क नाम पुकारे या बेटा झलिआक, जे दूनू बहुत पूर्वे मरि गेल छलै। गौंवां जे ओकरा देखय आबय एक दोसरा कें कहय—"ई आब मरि जायत कियैक तँ ई डूमा (प्रेतात्मा) कें देखि रहल अछि।" एक दिन ओ ओहि नाम कें पुकारि पुकारि के थाकि गेल। ओहि राति चाञ्चेरी नौआ ओकर लग बैसल छलै। भोर होइत होइत ओकर प्राण चलि गेलै। ओकर मुँह टेढ़ भऽ गेल छलै। बुझना जाइत छलै केकरो पर व्यङ्गय करबाक हेतु ओ अपन दाँत बेसाह लगौने होअए, चिआरने हो। ओकर आँखि अन्तरिक्ष दिस फाड़ि-फाड़ि देखैत छलै।

गाम मे अनघोल उठि गेल—दिशारी मरि गेल। ओकर लाश दादी बूढा क पहाड़ी क दोसर दिस श्मशान मे लऽ जाओल गेल। दिन साफ छलै। दादी बूढा क महान भक्त अपन लोक के आँखि भरि देखैक हेतु पृथ्वी पर सँ घुरि आयल छल।

बूढ़ा कें जीबाक इच्छा छलै और ईश्वर सँ ओ दीर्घ जीवन क प्रार्थना कयने छल।

मृत्यु बड़ घृणित होइछ। ब ़ अरुचिकर! कते कुरूप! किछुए क्षण मे सुन्दर शरीर कोना विकृत भऽ जाइछः तैं लोक मृत्यु क नामो लेबा मे घृणा करै छथि। परजा जाति कें पुनर्जन्म मे विश्वास छनि। नवजात शिशुकें देखि ओ चीन्हि लैत छथि जे पूर्वजन्म मे ओ अमुक व्यक्ति छल। पुनर्जन्म क बाद ओ मर्त्य भुवन मे सन्ताप और आनन्द क कादो मे लिपटि जाइछ और दिन खेपै अछि। तखन एक दिन ओ खसि पड़ैये। नहिओ चाहला पर मृत्यु अपन निश्चित समय पर अयबा सँ नहि चुकै छै। मृत्यु बहुतो आकार मे आबै छै–ज्वर, छाती क दर्द, वाघ। ई तँ बुझले अछि एकर अलावे कतेको और सेहो।

दिशारी क मुइला क बाद छाती क दर्द सँ दस बारह गोटे आओर मुइल। लोक ज्वर सँ पीड़ित होइक। दादी बूढा क खूब पूजा गोहारि कयल जाइन्ह और संभवतः तैं छाती क दर्द और ज्वर कें रोकल जा सकल, नहिते के जानैये जे पूरा गामक लोक साफ नहि भऽ जइते। शिशिर काल आवि गेल। आकाश मेघ विहीन भऽ गेल। जमीन सूखि गेल। ग्राम वासी आब सुरक्षित अनुभव कयलनि। दादी बूढा कें जे गोहारि कयने छला से बाँचि गेलाह। लोक कहैकै धन्य हौ दादी वूढा, सहाय रहिहऽ, दया राखिहऽ, विपत्ति मे नहि पड़विहऽ हौ बूढ़ा।''

❑❑

सोलह

राम मुदुली अपन काज मे बाझल रहल। खेतक जोताई, कोड़ाई, बोआई—खेत मे काज करबा मे भोर सँ साँझ तक व्यस्त रहै छल। ओकर घरबाली घर पर रहिके ओकर खाइक तैयार करै। बाँकी समय मे ओ गोइठा बनाबे, गोबरक खाद बनाबे। ओ खेतो मे कखनो काल काज कऽ लैत छली।

एहि बीच ओ ठेंगा क नाम कहिओ ने लेलक। आधा बनल घर आँखि मे काँट-जेकाँ गड़इ। ओ सब ओहि दिस आब देखैयो ने चाहैत छल और इहो ने होइ जे ओकरा तोड़ि के खसा दी। ओ अब ओहि संग जीअब सीखि लेने छल। बरसात मे ओकर दीबाल खसि पड़ल छलै। लागै जेना घरे न ओतऽ होइक।

दिन भरि ओ सभ कादो, पाथर और कांकड़ मे काज करैत रहथि। आब ओ सभ सभ वस्तु सँ अन्यमनस्क रहैत छलाह। दुख और सुख, पीड़ा और आनन्द कें ओ सभ विना उलहन-उपराग देने पृथ्वी क आन जीव जन्तु जेकाँ जीअब मानि लेने छलाह। राम मुदुली के सोचबाक समय नहि छलै। ओकरा बास्ते गतिमय जीवन शक्ति सबठाम पसरल छलै। खेतक पाकल अन्न, पछुऐत बाड़ी क फल और तरकारीक फसिलमे, पहाड़ी उपर अण्डी गाछमे, पहाड़ी कातमे जनमल 'कानगूड़ा' क पौधा मे, नीचा दिस 'सुआनक' खेतमे, घाटीमे उपजैत ज्वार और धनखेती मे, सभठाम गतिमय जीवने तँ छलै। इएह सभ किसान क असली दोस्त छलै। ओकर परिश्रमक फल छलै, और सएह ओकर धीआ पुता छलै। ओहि सभहिक वास्ते ओकरा जीवन भरि कते कष्ट सहे पड़ै छै? साल पर साल बितैत रहै छै, ओ बच्चा सँ सियान होइत अछि। ओहि सभहिक बीच मे चुपचाप केओ शान्ति सँ बैसैले चाहैये? ओ अपन निराश और एकान्त जीवन मे बनाओल अपन सृष्टि रचना कें ओकर सुन्दरता कें निहारितो, बिसरि जाइत अछि। नव विहान मे ओ इजोत पाबैत अछि, ओ अपन वनाओल बस्तुक बीच सदिखन नऽबे बनल रहैछ। ओ परजा जातिक मनुक्ख, जे दादी बूढा क बेटा छी।

ओहि साल फसिल केहन हेतै तकर अन्दाज राम मुदुली कें नहि छलै। परजा जातिक लोक मे किनको से अन्दाज नहि लगलनि। कोनो कवि की अपन कविता क भविष्य पहिनहि सँ जानैत अछि? किछु लोक तँ अपन फसिल कें सूदखोर महाजनक ओतय सुदभरना मे राखि दैत अछि। जहाँ कि फसिल तैयार भेलै कि ओ महाजन ओसूल करैले आबि धमकैछ। किछु किसान कर्ज क बोझ तर दबल रहैत छथि। फसिल क तैयारी भेला पर ओ से चुकता करै छथि। एहि धंधा मे रोजी बला जनी-मजूरा हाकिम-अमला, कते कहू सभ केओ वाझल रहै छथि। जौं किसान बैसि के खाली चुपचाप अपन पाकल जजात कें देखैत रहय तँ की ई धन्धा चलतै? इएह ओकर कविता छलैक। एहि गीत कें ओ गाबैले चाहलक, सएह ओ गाओत।

जखन केओ ओकरा अपन बेटा क स्मरण कराबै छलै तँ ओ एकटा भरिगर निःश्वास छोड़ै छल। ओकर पत्नी क आँखि सँ लोरटा बहैत रहैत छलै। ओ सभ अपन पीड़ा कें मोन सँ बहटारैक खातिर अपनाकें काज मे बझा लेने छलाह। एक काज सँ दोसर काज निघटाबैत, हुनका कोनो फुरसति-पलखति नहि छलनि। महुआ, ज्वार सँ चुआओल दारू हुनका सब पीड़ा सँ मुक्त कऽ दैत छलनि। हुनका चिन्ता करबाक समय नहि छलनि।

❑❑

सतरह

एहि साल गाम मे एक प्राकृतिक प्रकोप आयल। गाय गोडू कें पूरा शरीर पर फोंका निकले लागलै, पेट झड़बासँ सेहो किछु जानवर मुइल। हुनक मुर्गो-मुर्गी कोनो अनजान रोगसँ मरे लागल। ओ सब अचानक खसि के धराशायी भऽ जाइत छल और मरि जाइत छल। भगवाने जानथि कतय सँ ई रोग आयल। लोक हताश भऽ गेल।

गामक नया दिशारी जोतिखीक नाम छल रूफा जानी। ओ पहिलुक जोतिखी सँ कम बुद्धिमान नहि निकलल। बल्कि ओकरा अपेक्षा बेशी ईमानदार ओ निष्कपट साबित भेल। ओ काज बेशी करै छल आओर दारू कम पीबै छल। मुदा, ओकर तौर-तरीका सँ लोक कें विशेष फायदा नहि होइक। ओ एहि दैवीय प्रकोप कें शान्त नहि कऽ सकल। परजा जातिक युवती सभ दादी बूढा क आगाँ नाचि नाचि थाकि गेली, बेहाल भऽ गेली। हुनक तड़बा क चमड़ी खिया गेलैन। बचल खुचल मुर्गा और पड़बा सेहो दादी बूढा कें तुष्ट करबा ले चढा देल गेल। दारू क घैलक घैल हिनक ढिमका पर उझिल देल गेल। मुदा कोनो फायदा नहि भेल। प्राकृतिक आपदा ओहिना क ओहिना रहल।

ईसाई टोलाक डम्ब जाति क लोक परजा जातिक हिन्दू सभहिक एहि रेवाज पर हँसी उड़बै छलाह। मुदा जखन हुनको जानवर कें वैह विमारी धैलकैन तँ ओहो गोष्ठी बजा कें सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर क प्रार्थना कऽ के, भक्ति संगीत गाबि गाबि, अपन गाय-गोडू आ मुर्गी वास्ते प्रार्थना कयलनि। मुदा हुनको प्रार्थना सँ किछु फर्क नहि पड़लै। मुइल गाय-गोडू क माँउस खाय लेल कौआ, गीध फकसिआर, हुराड़ और कुकुर मे छीना झपटी होइत छल। पीड़ित क कुहरैक ध्वनि हवा मे पसरि जाइत छल। इजोरिआ राति मे जखन आधा लाल चन्द्रमा पहाड़ी क उपर लटकल रहैत छल तखन लोक गाछ क नीचा बैसिकय एक दोसरा कें कहै—"हमर चारि टा वड़द मुइल अछि। ओह! एहि साल हम खेती-हरौड़ी कोना करब?"

—''ओह। हमरो सव गाय-गोड़ू मरि गेल।''

गायक गोहाल मे हाथ मे टार्च लेने गृहणी ढुकि के चारू दिस देखैत छली—खाली खुट्टा वाँचि गेल रहै। किछु मे गरदामी बान्हले और किछु खाली। कात-कोन मे एक दुइटा गाय चुपचाप अनमुनाह जेकाँ पड़ल। गाय सेहो तँ परिवारे क सदस्य छल। ओ मनुक्खक दोस्त छलै। ओकरे बल पर कंकड़ भरल खेत क माटि कें लोक साहस कऽ के जोतैत छल आब सैह मरि रहल अछि! हुनक उदास आँखिये अपन व्यथा और पीड़ा कें कहि दै छल।

रूफा जानी क औषधि काज नहि केलकै। मुदा तैं एहि असफलता सँ ओकर प्रतिष्ठा कम नहि भेलै। दिशारी जोतिखी बनवा सँ पूर्व ओ जड़ी-बूटी क औषधिक प्रयोग सीखि लेने छल। आब ओहो दिशारी जेकाँ देवता क आशिर्वाद पाबि लेने छल। ओ एक गोहाल सँ दोसर गोहाल अपन झोड़ा-झपटा लऽके जाइत छल। कोनो ठाम ओ मन्त्र पढि के बेराम गाय पर चाटी चलाबे और नहि तँ कोनो गाय कें ओ जड़ी-बूटी खोआवे। गाय-गोड़ू मरिते रहल। मुदा ओकरा तँ एक बेर बेराम जानवर कें जाय कें देखैये पड़ैत छलै। लोक कहै, जौं पहिलुका दिशारी आइ जीवित रहितथि तँ ई सब नहि होयतैक।

अपना धरि रूफा जानी कठिन परिश्रम करैत छल। एहि मे शक नहि। तखन ओकरा बुते गाय-गोड़ूक बिमारी छूटै वा नहि से दोसर बात छलै।

केओ कहैक—''हउ, दिशारी तों कोन प्रकार क गोहारि करैत छह? हमर गोड़ू नहि बचल! तीनू क तीनू मरि गेल।

रूफाजानी आश्चर्यित होइत छल। ओ सोचै, लोक कते कृतघ्न होइछ। ठीके, दुनियाँ क ओएह चालि छैक। दोसरा कें खुश करैले ओ कोनो कसरि नहि राखैत छल। अपन सुख-सुविधा क विना परवाहि कयने, ओ जंगल सँ जड़ी-बूटी संग्रह कयने छल। अनेको जानवर क सूखल विष्ठा सेहो जमा कयने छल, आओरो कतेको दुर्लभ वस्तु जमा कयने छल। अपने आप मे किछु फुसफुसाइत और विभिन्न प्रकार क भंगिमा देखबैत ओ ग्रामवासी क समक्ष अपन नुस्खा बनबैत छल। एकर सभहिक बावजूदो ग्रामीण सभ कहै—''एहि महामारी सँ बचौनाइ रूफाजानी क वश मे नहि छैक। अपना सब कें दोसर दिशारी, भऽ सके तँ 'कोन्ध' जाति क दिशारी, ताकबाक चाही। गढ़राज कोला गामक विंगुन साओन क छोट भाय चिक्कानुकोन्ध तँ दिशारी बनैले तैयार अछिए।''

गँउआ मुखिआ पर दिशारी क बदलबा ले झंझट और चिन्ता बढा रहल छलाह। सब बात मे चांचेरी 'हँ' कहिके रूफाजानी क क्रोध कें भड़काबैत छल। मुखिआ सभहिक सँगे सहमति प्रगट करथि। रूफा जानी चौकन्ना रहैत छल।

एक दिन भोरे रूफाजानी पूरा गाम क सभा बजौलक। आइ ओकर आँखि लाल छलै, केश छितरायल छलै, पलक भारी छलै। ओ बाजल—"पिछला राति हमरा सपना मे स्वयं दादी बूढ़ा आयल छला। हुनक रूप डेराओन छलैन। ओ हमरा कहलनि जे ई गाम आब पाप कर्म क खानि भऽगेल अछि। मुखिआ क बेटा डम्ब जातिक छौंड़ी संग पड़ा गेल। तइओ ओ कोनो प्रायश्चित्त नहि कयलनि। कोनो भोज-भात नहि देलनि। देवता हमरासँ बाजल—हम दादी बूढ़ा छी। हम तोहर सभहिक स्वामी छी। तों सभ जे हमर अपमान करैत छह तेकरा कोना बर्दाश्त करी? हमर तुष्टि क हेतु किछु करह। नहि तँ तोहर सबहिक सभकिछु नष्ट भ्रष्ट भऽ जेतह। एहि बात कें जुनि बिसरिहऽ।"

पूरा गाँव—की बूढ़, की बच्चा, की जवान, की सिआन सभ जमा भेल छल। मुखिआ अपन माथ झुकौने बाजल—"हमर सभ किछु नष्ट भऽ गेल। गाय चलि गेल, बेटा चलि गेल, हम कहिओ दादी बूढाक अपमान नहि कयल। ओ एना कियैक बजताह?"

रूफाजानी कहलकै—"हम जे सपना देखलिअह से कहि देलिअह। हमरा बाजैक हुकुम भेल से हम कहलिअह। हम अपना दिस सँ किछु मिला के नहि कहलिअह। सब गोटे मुड़ी डोलबैत कहलकै—"साँचे।"

तइओ राम मुदुली एकटा भोज दऽ देलक। ओ जाति मे फेरो स्वीकार कयल गेल।

आब खूब जाड़ा आबि गेलै। जाड़ सँ लोकक हाड़ काँपै छलै। गाम क तीन चौथाइ गाय और मुर्गा मरि गेल छल। तखन जा के महामारी अचानक बन्न भेल।

रूफा जानी अपन माथ उठाके पूरा गाम घूमि आयल और बाजल—"देखलहक की भेलै? कहने छलिअह ने हम?"

गाम मे ओकर भाव बढि गेलै। आब गढराज होल गामक चिक्कानु कोन्ध कें दिशारी बनेबाक गप्प बन्न भऽ गेल।

सूर्यक रोशनी मे बरखा क पानि सँ धोअल चमकैत गाय-गोडू क हाड़ क ढेरी कें देखैत लोक निःश्वास छोड़ैत बाजै—"ई बात पहिने कियैकने बजलह हौ,

रूफाजानी! रूफा बयान करे–"बाघ, हाकिम और देवता क ईच्छा बूझब हमरा सभहिक ज्ञान क वाहर क बात थिक। हुनक सभहिक मोन मे की छनि से हम कोना जनितहुँ?"

मुदा आगाँ चलिके रूपाजानी गाम कें बचेवा मे असफल रहल। गाय गोरू परक संकट बितलाक बाद ओ गाम क किछु युवती सभहिक विवाह क दिन निश्चित कयलक। ओ कहलकै–"आब अगिला साल मुहुर्त नहि बनै छै।" एवं प्रकारे सारिआदान सारिआफूल, बोटी, मोती, रंगिया, झापी सभहिकें विआह कऽदेल गेलै। उत्सव मनबै मे और नाच गान मे किछु दिन तँ आनन्द पूर्वक बितलै मुदा एक दिन अगहन महीनाक अन्त होइत होइत जंगल सँ घुरती काल सभ लकड़ी काटै बला सूचित कयलकै जे ओ सभ बाघक पदचिन्हकें देखलकै अछि। पाँच दिन बाद बाघ परजा जातिक 'जीरो' कें घसीट कें जंगल मे लऽजा के प्राण लऽ लेलकै। लोक आतंकित भेल। रूपाजानी पूजा कयलक। लोक कें विश्वास भेलै जे परजा जातिक जीरो, बाघ क डूमा (प्रेत) बनि आन आन ग्रामीण कें बाघ बनि के घीचि के जंगल लऽ जायत और नोचि नोचि खाएत। तीन दिन क बाद चेन्डी गुडा गाम मे जे लुल्ला गाम सँ एके कोस पर छलै, कौमना सौरा कें बाघ घीचि कऽ लऽ गेल। ओहि दिन रूपाजानी चारू दिस डिंग हांकैत रहल–"देखह, हम कोना अपना गामक जंगलसँ बाघ कें चण्डी गुडाक जंगल मे खेहारि के भगा देलियै।" मुदा ओही दुपहरिआ मे बाघ लुल्ला गाम क नाडू परजा पर आक्रमण केलकै और ओकरा मारि देलकै।

अगिला किछु दिन कुहेस लागल रहैत छलै। लोक बूझए बड़ा विपत्ति क समय बीति रहल छै ~~मुदा~~ लोक कें विना किछु कयने बैसलो तँ नहि रहल जाइत छैक। हाट-बजार तँ जाइये पड़ितै। खेत और जंगल विना गेने काज कोना चलितै? आब ग्रामीण सभ सदिखन चौकन्ना भेल दल बना कय चलैत छल, मुदा सेहो पूरा सुरक्षित उपाय साबित नहि भेल। बाघ बताह कुकुर जकाँ पन्द्रह-बीस गोटे क दल सँ कोनो एक गोटे कें घीचि कऽ मारि दैक। एक दिन बाघ चोरी सँ छपकि कें मुरान नदी क कात चुपचाप पड़ल छल। किछु जनानी अपन वस्त्र धारक कात राखि नहाइत छलि। बाघ कें देखिते अब चंक और भयभीत भऽ चीख मारिके, नङ्गटे, बिना लत्ते-फत्ते पड़ैलीह। जखन गाम सँ भाला लेने चालीस-पचास गोटे बाघ कें होहकारलनि तखन हुनका देखि बाघ पड़ायल।

अन्हार राति मे बाघक हरिअर आ लाल आँखि टूटा चमकैत तारा एहन लागैक। रूपाजानी ग्रामवासीक बीच किछु जन्तर बना के बाँटलक। ग्रामीण ओहि जन्तर कें डांड़, गरदनि अथवा बाँहि पर कवच जेकाँ बान्हलनि। मुदा तइओ बाघ सँ त्राण कतय! एक मास क अभ्यन्तरे बीस गोटे ओहि आदमखोर मनुक्खमारा क शिकार भेलाह। गाम सुन्नमसान बनि गेल। पूर्व काल मे एहन प्रकोप क अनुभव कहिओ नहि भेल छलैक। पास पड़ोस क दोसर गाम मे बरमहल बाघक प्रकोप होइत रहैत छलै। मुदा ई गाम एखन धरि ताहि हिसाबे बाँचल छल।

गाम भय सँ प्रकम्पित छल। की हेतै, की नहि? इएह चिन्ता सभकें व्यथित कयने छलै। मुखिआ लगान क ओसूली क चिन्ता करै छल। कोनो दिन गोटे हाकिम आओत और लगान क तहकीकात करत। छोट किसान एहि विचारे सँ पीड़ित छल। ई पहाड़ी इलाका छलैक। जारनिधरि आनैले लोक जंगल भारी चिन्ता लऽ के जाइत छल। एक गाँ सँ दोसर गाँ क बाट क बीचे जंगल पड़ै छलै। खेत क निकट धरि जंगल छलै। बाघ नुकायल रहैत छल, मौका देखिते अचानक झपट्टा मारि ककरो दबोचि लैत छल।

एक दिन भोरगरे बूढ़ा जमादार जानी गाम क बाहर झाड़ा-झपटा खातिर गेल छल। नदी क कात धरि उगि आयल छाती भरि फिरी घास मे नुकायल बाघ अचानक ओकरा दवोचि कऽ लऽ गेल। गाम क लोक भयाक्रान्त भऽ गेल।

एहि सभ घटनाक होइतो रहला पर लोक कें बाहर निकले पड़ै छलै। नहि चलय-फिरय तँ पाकल धान खेत मे सड़ि जइतै। लोक साल भर तखन की खाइते? अगिला साल क हेतु बीज बीहन क कोन प्रबंध होइतै? जौं तैयार फसिल नहि काटल जाइते तँ लोक भुखले मरिते कीने?

बाघ के डरबै-भगबै दुआरे लोक पैघ दल बनाके लाठी, भाला, छूरा, बर्छा लऽके खेत पर जाइत छल–कत्ता-फरशा सँ लैस भेल। ओ सभ मिलि एक दिन मे एक गोटे क खेतक रखवारी करथि, दोसर दिन दोसर गोटेक खेतक, एहिना। दिन भरिक काज भऽ गेलाक बाद ओ घर मे बन्न भऽ जाथि और बाहर नहि निकलथि। एहि प्रकार लोक सात दिन खेपलक, कहुना सुरक्षित अनुभव केलक। बाद मे 30-40 गोटे क बदला आब पाँच या दस गोटे क दल बाहर निकले लागल।

बाघ क हमला फेरो भेल। लागै जेना ई बाघ मृत्यु क समदिया होअय। मनुखमाराक आतंक रहितो केओ दादी बूढ़ा क स्वामित्व पर शंका नहि करय।

लोक कहय जे मात्र अभागले लोक बाघ क चपेट मे पड़ै छथि। खाली दादी बूढ़े टा के बूझल छनि—ककर भाग्य कतऽ छनि? किछु अज्ञात कारण सँ आइ दादी बूढा लूला ग्रामवासी पर क्रोधित छलाह। गाम वाटे सर्वनाशी बवंडर बहै छलै। केकरो नहि ज्ञात छलै ई ववंडर कहिया ओ कोना शान्त होयत?

केओ चैन सँ नहि छल। अधलाह दिनक फेर छलै! लोक कहै कोनो बात सँ दादी बूढा तमसायल छथि। ओ एक दोसरा क दोष निकालवाक चेष्टा करथि और झगड़थि। लोक पहिने मुखिया कें पुनि अलैबिरिओ कें दोष देलकै। मुखिआ भोजक वात कहलकै जे प्रायश्चित्त करबाक निमित्त देल गेल छलै। लोक एक दोसरा कें ध्यान सँ ओकर दोष निकालैक वास्ते देखय। अपन घर मे वन्न भेल ओ चिड़चिड़ापनक अनुभव करथि। एक राति बाघ गाम में दूकि के वुदरा परजा कें अपन खोपड़ी सँ घीचि कऽ लऽ गेलै। ओकर पत्नी चित्कार केलकै। लोक दौगिके आयल। बुदरा बचाओल नहि जा सकल। लोक भय सँ काँपै छल। एहि सँ पूर्व बाघ हुनका पर घात लगवैत छल जे अपन जजात क रखवाली एकान्त मचान पर करैत छलाह मुदा एहिबेर तँ गाम मे दूकि के ककरो घीचि कें लऽ गेल। केहन आतंक छलै!

एहि पहाड़ी भूमि क कतेको गाम पहिनहु नष्ट भऽ गेल छल। वैह भीषण अभाग लूला पर सेहो वजरल छलै। लोक उपास पर उपास करय, डर सँ ककरो घर मे चूल्हा नहि जरैक। किछु ढोर डांगर जे बाँचि गेल छल से मात्र लकलक दुब्बर छल। प्रायः सब घर सँ विलाप और भयक ध्वनि आबैत रहैत छल। अपन पड़ोसी कें सान्त्वना देबा हेतु ककरो पास समय नहि छल। लोक मात्र किछु अधलाह घटना होयबा क आशंका सँ त्रस्त छल। घर सँ बाहर मे बाछियो देखि के डरि जाथि, गीदर क बाते जाय दिअऽ। अन्हार मे छोट गाछक ढेङ्ग अथवा ठूठ सेहो बाघे क भ्रम उत्पन्न करै छल। ओ एक दोसरा कें कहथि—"दादी बूढाक पाछाँ बला पहाड़ी पर घात लगौने बाघ प्रतीक्षा करैछ।"

जाहि राति बुदरा परजा कें बाघ लऽ गेलै श्याम गुरुमाई कें लागलै ओकरा भीतर किछु समाद उपचरि रहल हो। ओ गामक भगता छल ओकरे उपर गाम क देवता आबि के किछु कहि सकै छल। प्रकृति सँ श्याम भीरू छल। ओकरा भेलै कोनो देवता ओकरा उपर आबि के बाजैले चाहै छै। दिन मे भगता खेलाइ क भावना प्रवल नहि छलै, मुदा सूरज डुबला क बाद भगता खेलेबा क प्रबल इच्छा जागलै।

ओही राति मनुखमारा बाघ गाम मे शिकार पर निकलल आ गरजल। छप्परो धरि हिल गेल ओहि गर्जन सँ। भय सँ लोक एक दोसरा कें जकड़ि कें पकड़ि लेलक। वेदरा कानब शुरू केलक मुदा चुप भऽ गेल। श्याम गुरुमाइ के भेलै ओ अपन अस्तित्व बिसरि गेल। लागलै जेना ओकर स्वत्व कें देवता चोरी कऽ लेने हो। प्रत्येक बेर जखन बाघ दहाड़े-गरजै ओकरा लागै अन्दर सँ देवता बाजैले चाहैत अछि। राति भरि ओ पलक झपका के सूति नहि सकल। भोर होइते ओ रूपा जानी लग गेल। ओ अपन बात ओकरा कहलकै। पुरना गुरुमाईक बात काटि दितै नव दिशारी तेहन साधंस वला लोक नहि छल। ओ तुरंते मुखिआ लग गेल और फेर तुरही-पिपही-ढोलक बजबै वला लग। लोक बाहर भेल। भोरगरे बिना मुँह धोने पोछने ओ सब बेरामन (गाम क चौबटिआ) पर जमा भेल, जतऽ सपाट और ठाढ़ पाथर हुनक बाप-पुरखा क स्मृति मे राखल छलैक।

श्याम गुरुमाई ध्यानमग्न भऽ के नाचे लागल। दिशारी मंत्र पढे लागल। दारू और मुर्गा क बलि देल रक्त, जमीन पर चढाओल गेल। गुरुमाई बताह भऽ के नाचल। ओकर आँखि मे अदभुत चमक छलै। एकटा अदभुत् क्रूरता धधकैत छलै ओकर चेहरा पर। ओ नाचैत-नाचैत भूमि पर ओंघराय लागल। केकरो खिहारलक और फेरो नाचय लागल। कखनो ओ ढोलकिआ के मारे लागे। लोक भयसँ ओकरा देखैत रहल। ओ एक दोसरा कें फुसफुसा के कहलथिन्ह—भोरे भोर की अनिष्टक अशुभ चिन्ह देखि पड़ैये।

अचानक गुरुमाई जोर-जोर सँ अकारण हँसे लागल। आँखि गुराड़ि, जीभ मुँह सँ लटकाबैत ओ चीत्कार कयलक—हम खेबउ, हम खाय जेबउ, हम गिनती कयने छियौक—दुई बीस तीन टा कें एखन धरि हम खयने छियौक। लोक भय सँ सटि गेल—एकदम सँहटल! ओकर सभहिक साँस धरि रूकि गेलै। गुरुमाई बाजैत गेल—"हम छी दादी बूढ़ा। सबसँ पैघ देबता। हमही पालन करै छी और हमही संहार! जखन किछु होइ छै हमरे इच्छा सँ होइ छै। हम ककरो मारै ले चाही तँ मारि दै छी। हमरा सँ जुनि पूछह, हम ई कियै करै छी, ओ कियैक करै छी? हमरा सँ सवाल जुनि पूछह। खाली हमही तकर कारण जानै छी। तों जुनि पूछह। हम से नहि कहबउ! ई स्थान बाघक प्रेत सँ भरल छहु। ई गाम छोड़ि दै जाह, नहि तँ तोहरा सब पर खतरा बजरतौ। हम तोहर छी सृष्टि कर्त्ता, तोहरे खुशी से हमरो खुशी अछि। तैं तोरा सभकें चेतबै छिअह! जाह, हमर बौआ बेदरा सभ, ई गाम

छोड़ि देह। हमर दोस्त देवता सभ एतऽ अओताह। ई डूमा (प्रेतात्मा) सभहिक वास-स्थल होयत। गाढी पवली पहाड़ क नीचा खूब पैघ चौरस जमीन छैक, ओहिठाम घर वान्हऽ, जते जल्दी नव गाम बसाय लैह तते नीक। ओतऽ तोहर बढोंतरी हेतह, जतऽ जेबह। हम तोरे संगे रहबउ। तोरे लग हम ठाढ़ रहबउ। तोहर दुख मे हम, तोहर सुख मे हम। मुदा एहि जगह कें त्यागह और चलि जाह।''

ग्रामीण सभ जमीन पर नतमस्तक भऽ के पड़ि गेल। देवता कें नमस्कार करैत कहलकै, ''हौ दादी बूढ़ा, तोहर जे इच्छा। तों चाहऽ तँ हम सब बाँची तों चाहऽ तँ मरी। हम सब तोहर बात नहि कटबहु, तोहर बात क अवज्ञा, उल्लंघन नहि करबह। तोहर इच्छानुसार हम सब ई जगह त्यागि देब। प्रभु, हम सब तोहर कृपा टा चाहै छी।''

श्याम गुरुमाई अचेत भऽ के खसि पड़ल। देवता भगता क देह सँ निकलि गेल छल।

❑❑

अठारह

गाँव मे खूब गुलगुपाड़ा मचल छलै। सब केओ छोड़ि के जा रहल अछि। लोक गामक चौबटिआ लग क सपाट और ठाढ़ पाथर कें छोड़ि कय जा रहल छथि।

गाढ़ी पओली पहाड़ वेसी दूर नहि। पछेड़ी पहाड़ और चीली बेड़ा जंगल क अऽढ़ मे ई स्थान अछि। नया गाम बसबैले की ओतऽ उपयुक्त जगह छै? की खेती ले ओतऽ जमीन छैक? दादी बूढ़ाक हुकुम टारल नहि जा सकैछ। आब तँ हुनका ओहिठाम जाय पड़तै। ओहि ठाम बास करय पड़तैन्ह।

जाड़ क बाद जंगल सूखि जेतै आओर बाघक भय नहि रहि जयतै। जे खेत कें ओ छोड़ि के जाय रहला अछि तेकरा जोतय मे किछु झंझट नहि हेतैन्ह। मुदा दादी बूढ़ा क बात काटैक साधंस किनको नहि छल। ओ जे कहि देलन्हि विना तकरार कयने तेकर पालन करय पड़तैन्हि। गाम तँ छोड़ैये पड़तैन्ह।

एलिओ मुखिआ लग जाके पुछलकै—"की तों सभ बताह भऽ गेल छह? दादी बूढ़ा के थिकाह हमरा सबकें उपटाबै बला? पुरखाक घर कें छोड़िकय तों कतऽ जेबह? एहि घर, खेत पथार, बाड़ी-झाड़ी सब कें बनबै मे कते उपचार व्योंत कयल गेल अछि। ओतऽ तोरा सबकें की भेटतह? ओतऽ किये जेबह?"

ओ निःश्वास छोड़ैत गाम पर नजरि खिरौलक। एलिओ बाजैत गेल—"हम बूढ़ आदमी भेलहुँ। हमर बात पर ध्यान देह। गर्मी आबैत आबैत बाघ ई जंगल छोड़ि देत। दोसर ठाम जाके घर बनबै क परेशानी हम सभ कियैक ली? जँ हमर मृत्युए आबि जाएत तँ के बचाओत? ई बतहपनी छोड़ह।

मुखिआ संकट मे पड़ल। एक दिस गाम थहाथही दैत दोसर दिस दादी बूढ़ा गाम क उपर ठाढ़। मुखिआ मूड़ी डोलौलक। बाजल—दुइ बीस तीन गोटे आइ धरि बाघक शिकार भऽ गेल। हमर सभहिक ढोर-डांगर समाप्त भऽ गेल। आब हम सभ एहिठाम कियैक रही? तों दादी बूढ़ा क बात जुनि मानह किन्तु ओ हमर सभहिक

देवता थिकाह। हुनक हुकुम हमरा सभ कें भेटि गेल अछि। आब तँ ई बात तोरे पर छह जे तों हमरा सभहिक संगे रहबह अथवा अपन धर्मक मुताविक चलबह।

एलिओ मुखिआकें गाम छोड़ै सँ मना करवाक भरपूर प्रयास कयलक। मुदा राम मुदुली नहि सुनलकै। एक्केठां ओ कहलकै—"हम सव एहि गाम मे कियैक रही?" ओकरा भेलै जे ई शिकायत ओकर अपन अन्दर सँ आयल हो। ओ तँ पहिनहि हारि चुकल छल। दादी बूढा क आदेश तँ एक बहाना छलै। ओकर ठेंगा जानी एहिगाम कें छोड़ि चुकलै, ओकर अवलम्ब ढहि गेल छलै। आब तँ सबठाम ओकरा वास्ते बराबरे छलै। एहि गाम मे कोनो खास बात राखल नहि रहि गेल छलै ओकरा हेतु।

एलिओ डम्ब टोला पर गेल। लोक सभ कें वजौलकै और समझावै-बुझाबैक कोशिश कयलक। ओ कहलकै—"ई परजा सभ डरपोक होइत अछि। ओ सभ जिद्दी छथि। आव जे ओ सभ गाम छोड़ि के जा रहल छथि, अपन जमीन-जाल सस्ते भाव मे वेचि लेताह। अपना सभ एहिठाम रहव। हुनका सभ कें जाय दियौन्ह।"

दस-बारह डम्ब परिवार रहैत छल। केओ एलिओक वात नहि मानलकै। ओ बजलाह—"एहि जंगल मे हम सभ कियैक रहब? बाघक डरें हम सभ घरसँ वहरा नहि सकै छी। हमर सभहिक जिनगी हमेशा विपत्ति मे पड़ल रहत।"

भोर खन डम्ब जातिक लोक सभ सेहो गुरुमाई क भगता क नाच देखने छलाह। ओ सभ ओकर वचन सेहो सुनने छलखिन। एहि ईसाईओ सभहिक हृदय मे दादी वूढा क प्रति असीम श्रद्धा छलैक। एलिओ हुनका सभ कें नहि बुझा सकल।

नवका जगह पर दिशारी खास मुहूर्त्तक दिन मे गेल और नव गामक स्थापना क खरही गाड़लक। मुखिआ आओर अन्य बृद्ध जन ओतय जाय के ओहि स्थान पर चिन्ह-चाक लगेलक।

गढी पओर्ली पहाड़ और पचेड़ी पहाड़क बीच मे पेघ परती बला घाटी छलैक। एतय एखन तँ घना जंगल छलै, मुदा समय अयला पर तकरा धन खेती और ज्वार क खेत मे बदलल जा सकैत छल। गढी पओलीक ढलानक नीचा नया गाँव बसाओल जइतै। मुरान नदी मे किछु धिम्मड़ नाला खसै छल। लोक तकरा पर

बाँघ दऽ के धान उपजा सकै छल। गरमी आबैत आबैत सबटा गाछ काटि के जराओल जइतै। जंगलक एक पट्टी साफ कयल जइतै। ज्वार, सुआन, कंगुला और अण्डी लगाओल जइतै। दादी बूढा भरोस देने छलथिन जे ओ भूमि उपजाउ होयत, सोना उगिलत। ओ सभ ओतय खुशहाली क जीवन व्यतीत करताह।

दादी बूढ़ा लूला गामक जमीन पर काज करबाक मनाही नहि कयने छलथिन। दुनू गामक जमीन ओ सभ अपन कुब्वति भरि जोति सकै छलाह। ठाम ठाम चिन्ह लगा देल गेलै—एते दूर परजा टोली, एते दूर डम्ब टोली तथा सड़क क हेतु जमीन छोड़ल गेल। पूजा कयल गेल। सब किछुक पवित्रीकरण भेल। पहिने तड़िपत क चार क छोट खोपड़ी वनाओल जइतै। स्थायी घर, माटिक देवालक घर बाद मे बनितैक। पहिने तँ तकलीफ होयबे करितैक तखन रहैत-सहैत धीरे-धीरे ओहि ठाम सेहो पहिनहि जकाँ सुन्दर आरामदेह व्यवस्था भऽ जइतैक।

लोक नव जगह पर वास परिवर्तन केनाय शुरू कयलक। हुनक सभ सामान काठ क, लकड़ी क खाम्ही, धरनि, बाँस, केबाड़ी, चौकठि लूला गामसँ नव स्थान पर लऽ आनल गेल। उजड़ल-उपटल झोपड़ी, चुल्हा क छिड़िआयल छाओर, सपाट आ तीखगर पाथर पुरने ठाम छोड़ि देल गेल। पाँच दिनक भितरे पुरनाम बिला गेल। दोसर ठाम एक नव गाम बसि गेल।

साविक क लूला गाम उपटि गेल। ओतऽ चार सँ धूँआ क लहरि आब नहि उठतै। ओहि ठाम आब कूड़ा-कचरा, गोबर-करसी केओ ने जमा करत। वेदरा सभ आब ओहि उजड़ल उपटल घर कें गन्दा नहि करत। गाय के झुण्ड आओर मनुक्खक हेंज आब पहाड़ पर सँ उतरि के ओहि गाम आबैत नहि देखाय पड़त। आब पूर्णिमा राति मे ओतय धांगरा धांगरी क नाच नहि होयत।

पहाड़ी ढिमका पर खूजर क खुट्टा एहन ठुट्ठ दादी बूढ़ा सैह टा बाँचि गेलाह। हुनक चिरात्मा आब कोनो दोसर रूप धयि दोसर गाम मे अवतरित होयत। ओएह आव नवस्थान पर धांगरि सभकें नाचबा ले बाध्य करत। हुनके कृपासँ आब छेड़ें—पूतें हुनक सभहिक घर भरतनि। ओतय फेरो ओएह माया क सुन्दर संसार क सृष्टि करताह।

आस्ते आस्ते पुरान गाम मे छत खसैत गेल। दीबार क आक्रमण सँ दिबाल, माटिक ढिमका बनि गेल। जंगल फेरो घुरि आयल। आब केओ नहि कहि सकै

छल जे धांगरा-घर कतय छल आ धांगरी-घर कतय छल—जतऽ कहिओ युवक और युवतीगण राति-राति भरि जागि के डुंग-डुंगाक ध्वनि पर गीतक स्वरलहरी संग अपन प्रेम बहबैत, ढारति, लुटबैत रहथि।

आब धरि संभवतः ठेंगा जानी आओर सारिआदान विवाह कऽ के अपन-अपन घर बसा लेने हैताह। आब जतय ओ रहति होथि ततऽ आधा बनल घर कतय होयत?

पुरान पहाड़ी ढिमका पर 'हुंका बूढ़ा' वाढ़ि कें दादी बूढ़ा कें छापि लेलक। दूनू एकाकार भऽ गेल। सबटा द्वन्द्व मेटा गेल।

Institute of Advance
117103
9.12.04
SHIMLA

साहित्य अकादेमीसँ अद्यावधि प्रकाशित इतिहास-ग्रन्थ

असमिया साहित्यक इतिहास
बिरिंचिकुमार बरुआ

उड़िसा साहित्यक इतिहास
मायाधर मानसिंह

बँगला साहित्यक इतिहास
सुकुमार सेन

डोगरी साहित्यक इतिहास
शिवनाथ

गुजराती साहित्यक इतिहास
मनसुखलाल झवेरी

हिन्दी साहित्यक इतिहास
विजयेन्द्र स्नातक

भारतीय-अंग्रेजी साहित्यक इतिहास
एम. के. नायक

कन्नड साहित्यक इतिहास
आर. एस. मुगली

मैथिली साहित्यक इतिहास
श्रीजयकान्त मिश्र

मलयालम साहित्यक इतिहास
पी. के. परमेश्वरन नायर

मराठी सा[illegible]
कुसुमावती देशपाण्डे [illegible]

नेपाली सा[illegible]
कुम[illegible]

राजस्थानी स[illegible]
हीरालाल माहश्वरी

सिन्धी साहित्यक इतिहास
एल. एच. अजवाणी

तमिल साहित्यक इतिहास
मु. वरदराजन

तेलुगु साहित्यक इतिहास
जी. वी. सीतापति

एहिमे असमिया, बँगला तथा सिन्धी साहित्यक इतिहास मैथिलीमे प्रकाशित।

Library IIAS, Shimla
MT 891.451 3 M 728 Q
00117103